ओ३म्

अष्टकं पाणिनीयम्

(अष्टाध्यायी)

श्रीमन्महर्षिपाणिनिमुनिप्रणीतम्

नानाग्रन्थेभ्यः संशोध्य

अजमेरस्थ-वैदिकयन्त्रालये

मुद्रितम्.

पञ्चमावृत्तौ ५००० } संवत् १९७१ श्रावण { मूल्य =)॥ डाकव्यय)॥

ओ३म् पाद वृत्त मांडुक उपनिषत्ता कीकारिका मिता थ्वरा टीका सहितं परिभाषेन्दु शेखर व्याकरण १

॥ ओ३म् ॥

अथाष्टाध्यायी मूल प्रारम्भः

अथ शब्दानुशासनम् ॥

अइउण् ॥ १ ॥ ऋऌक् ॥ २ ॥ एओङ् ॥ ३ ॥
ऐऔच् ॥ ४ ॥ हयवरट् ॥ ५ ॥ लण् ॥ ६ ॥
ञमङणनम् ॥ ७ ॥ झभञ् ॥ ८ ॥ घढधष् ॥ ९ ॥
जबगडदश् ॥ १० ॥ खफछठथचटतव् ॥ ११ ॥
कपय् ॥ १२ ॥ शषसर् ॥ १३ ॥ हल् ॥ १४ ॥

इत्यक्षरसमाम्नायः ॥

अथ प्रथमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

वृद्धिरादैच् ॥ १ ॥ अदेङ् गुणः ॥ २ ॥ इको गुणवृद्धी ॥ ३ ॥ न धातुलोप आर्द्धधातुके ॥ ४ ॥ क्ङिति च ॥ ५ ॥ दीधीवेवीटाम् ॥ ६ ॥ हलोऽनन्तराः संयोगः ॥ ७ ॥ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ॥ ८ ॥ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ॥ ९ ॥ नाज्झलौ ॥ १० ॥ ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ ११ ॥ अदसो मात् ॥ शे ॥ १३ ॥ निपात एकाजनाङ् ॥ १४ ॥ ओत् ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे ॥ १६ ॥ उञः ॥ १७ ॥ ऊँ ॥ १८ ॥ ईदूतौ च सप्तम्यर्थे ॥ १९ ॥ दाधाघ्वदाप् ॥ २० ॥ आद्यन्तवदेकस्मिन् ॥ २१ ॥ तरप्तमपौ घः ॥ २२ ॥ बहुगणवतुडति सङ्ख्या ॥ २३ ॥ ष्णान्ता षट् ॥ २४ ॥ डति च ॥ २५ ॥ क्तक्तवतू निष्ठा ॥ २६ ॥ सर्वादीनि सर्वनामानि ॥ २७ ॥ विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ ॥ २८ ॥ न बहुव्रीहौ ॥ २९ ॥ तृतीयासमासे ॥ ३० ॥ द्वन्द्वे च ॥ ३१ ॥ विभाषा जसि ॥ ३२ ॥ प्रथमचरमतयाल्पार्द्धकतिपयनेमाश्च ॥ ३३ ॥ पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम् ॥ ३४ ॥ स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ॥ ३५ ॥ अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ॥ ३६ ॥ स्वरादिनिपातमव्ययम् ॥ ३७ ॥ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ॥ ३८ ॥ कृन्मेजन्तः ॥ ३९ ॥ क्त्वातोसुन्कसुनः ॥ ४० ॥ अव्ययीभावश्च ॥ ४१ ॥ शि सर्वनामस्थानम् ॥ ४२ ॥ सुडनपुंसकस्य ॥ ४३ ॥ नवेति विभाषा ॥ ४४ ॥ इग्यणः सम्प्रसारणम् ॥ ४५ ॥ आद्यन्तौ टकितौ ॥ ४६ ॥ मिदचोऽन्त्यात्परः ॥ ४७ ॥ एच इग्घ्रस्वादेशे ॥ ४८ ॥ षष्ठी स्थानेयोगा ॥ ४९ ॥ स्थानेऽन्तरतमः ॥ ५० ॥ उरण् रपरः ॥ ५१ ॥ अलोऽन्त्यस्य ॥ ५२ ॥ ङिच्च ॥ ५३ ॥ आदेः परस्य ॥ ५४ ॥ अनेकाल्शित्सर्वस्य ॥ ५५ ॥ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ॥ ५६ ॥ अचः परस्मिन्पूर्वविधौ ॥ ५७ ॥ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वरसवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ॥ ५८ ॥ द्विर्वचनेऽचि ॥ ५९ ॥ अदर्शनं लोपः ॥ ६० ॥ प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ॥ ६१ ॥ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ॥ ६२ ॥ न लुमताऽङ्गस्य ॥ ६३ ॥ अचोऽन्त्यादि टि ॥ ६४ ॥ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा ॥ ६५ ॥ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ॥ ६६ ॥ तस्मादित्युत्तरस्य ॥ ६७ ॥ स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ॥ ६८ ॥ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः ॥ ६९ ॥ तपरस्तत्कालस्य ॥ ७० ॥ आदिरन्त्येन सहेता ॥ ७१ ॥ येन विधिस्तदन्तस्य ॥ ७२ ॥ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद् वृद्धम् ॥ ७३ ॥ त्यदादीनि च ॥ ७४ ॥ एङ् प्राचां देशे ॥ ७५ ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥ १ ॥

---

* अथर्दीर्घासंवर्द्धानिमित्तस्मात्व ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् ॥ १ ॥ विज इट् ॥ २ ॥ विभाषोर्णोः ॥ ३ ॥ सार्वधातुकमपित् ॥ ४ ॥ असंयोगाल्लिट् कित् ॥ ५ ॥ इन्धिभवतिभ्याञ्च ॥ ६ ॥ मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा ॥ ७ ॥ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः सँश्च ॥ ८ ॥ इको झल् ॥ ९ ॥ हलन्ताच्च ॥ १० ॥ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु ॥ ११ ॥ उश्च ॥ १२ ॥ वा गमः ॥ १३ ॥ हनः सिच् ॥ १४ ॥ यमो गन्धने ॥ १५ ॥ विभाषोपयमने ॥ १६ ॥ स्थाघ्वोरिच्च ॥ १७ ॥ न क्त्वा सेट् ॥ १८ ॥ निष्ठा शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः ॥ १९ ॥ मृषस्तितिक्षायाम् ॥ २० ॥ उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ पूङः क्त्वा च ॥ २२ ॥ नोपधात्थफान्ताद्वा ॥ २३ ॥ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ॥ २४ ॥ तृषिमृषिकृषेः काश्यपस्य ॥ २५ ॥ रलो व्युपधाद्धलादेः सँश्च ॥ २६ ॥ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः ॥ २७ ॥ अचश्च ॥ २८ ॥ उच्चैरुदात्तः ॥ २९ ॥ नीचैरनुदात्तः ॥ ३० ॥ समाहारः स्वरितः ॥ ३१ ॥ तस्यादित उदात्तमर्द्धह्रस्वम् ॥ ३२ ॥ एकश्रुति दूरात्सम्बुद्धौ ॥ ३३ ॥ यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु ॥ ३४ ॥ उच्चैस्तरां वा वषट्कारः ॥ ३५ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ ३६ ॥ न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः ॥ ३७ ॥ देवब्रह्मणोरनुदात्तः ॥ ३८ ॥ स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् ॥ ३९ ॥ उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः ॥ ४० ॥ अपृक्त एकाल् प्रत्ययः ॥ ४१ ॥ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ॥ ४२ ॥ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ॥ ४३ ॥ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ॥ ४४ ॥ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ॥ ४५ ॥ कृत्तद्धितसमासाश्च ॥ ४६ ॥ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ॥ ४७ ॥ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ॥ ४८ ॥ लुक्तद्धितलुकि ॥ ४९ ॥ इद्गोण्याः ॥ ५० ॥ लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने ॥ ५१ ॥ विशेषणानाञ्चाजातेः ॥ ५२ ॥ तदशिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् ॥ ५३ ॥ लुब्योगाऽप्रख्यानात् ॥ ५४ ॥ योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं स्यात् ॥ ५५ ॥ प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्यप्रमाणत्वात् ॥ ५६ ॥ कालोपसर्जने च तुल्यम् ॥ ५७ ॥ जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम्

॥ ५८ ॥ अस्मदो द्वयोश्च ॥ ५९ ॥ फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे ॥ ६० ॥ छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् ॥ ६१ ॥ विशाखयोश्च ॥ ६२ ॥ तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् ॥ ६३ ॥ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ॥ ६४ ॥ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ॥ ६५ ॥ स्त्री पुंवच्च ॥ ६६ ॥ पुमान् स्त्रिया ॥ ६७ ॥ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् ॥ ६८ ॥ नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ६९ ॥ पिता मात्रा ॥ ७० ॥ श्वशुरः श्वश्र्वा ॥ ७१ ॥ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ॥ ७२ ॥ ग्राम्यपशुसंघेष्वतरुणेषु स्त्री ॥ ७३ ॥ *

इतिप्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥ २ ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

भूवादयो धातवः ॥ १ ॥ उपदेशेऽजनुनासिक इत् ॥ २ ॥ हलन्त्यम् ॥ ३ ॥ न विभक्तौ तुस्माः ॥ ४ ॥ आदिर्ञिटुडवः ॥ ५ ॥ षः प्रत्ययस्य ॥ ६ ॥ चुटू ॥ ७ ॥ लशक्वतद्धिते ॥ ८ ॥ तस्य लोपः ॥ ९ ॥ यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् ॥ १० ॥ स्वरितेनाधिकारः ॥ ११ ॥ अनुदात्तङित आत्मनेपदम् ॥ १२ ॥ भावकर्मणोः ॥ १३ ॥ कर्त्तरि कर्मव्यतिहारे ॥ १४ ॥ न गतिहिंसार्थेभ्यः ॥ १५ ॥ इतरेतरान्योन्योपपदाच्च ॥ १६ ॥ नेर्विशः ॥ १७ ॥ परिव्यवेभ्यः क्रियः ॥ १८ ॥ विपराभ्यां जेः ॥ १९ ॥ आङो दोऽनास्यविहरणे ॥ २० ॥ क्रीडोनुसंपरिभ्यश्च ॥ २१ ॥ समवप्रविभ्यः स्थः ॥ २२ ॥ प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ॥ २३ ॥ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ॥ २४ ॥ उपान्मन्त्रकरणे ॥ २५ ॥ अकर्मकाच्च ॥ २६ ॥ उद्विभ्यान्तपः ॥ २७ ॥ आङो यमहनः ॥ २८ ॥ समो गम्यृच्छिभ्याम् ॥ २९ ॥ निसमुपविभ्यो ह्वः ॥ ३० ॥ स्पर्द्धायामाङः ॥ ३१ ॥ गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः ॥ ३२ ॥ अधेः प्रसहने ॥ ३३ ॥ वेः शब्दकर्मणः ॥ ३४ ॥ अकर्मकाच्च ॥ ३५ ॥ संमाननोत्संजनाचार्यकरणज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु नियः ॥ ३६ ॥ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि ॥ ३७ ॥ वृत्तिसर्गता-

* गाङ्कुटादिसूत्रस्थपाठकृत्स्नच्छन्दसि प्रयोदश ॥

यनेषु क्रमः ॥ ३८ ॥ उपपराभ्याम् ॥ ३९ ॥ आङ उद्गमने ॥ ४० ॥ वेः पादविहरणे ॥ ४१ ॥ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ ४२ ॥ अनुपसर्गाद्वा ॥ ४३ ॥ अपह्नवे ज्ञः ॥ ४४ ॥ अकर्मकाच्च ॥ ४५ ॥ संप्रतिभ्यामनाध्याने ॥ ४६ ॥ भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः ॥ ४७ ॥ व्यक्तवाचां समुच्चारणे ॥ ४८ ॥ अनोरकर्मकात् ॥ ४९ ॥ विभाषा विप्रलापे ॥ ५० ॥ अवाद्ग्रः ॥ ५१ ॥ समः प्रतिज्ञाने ॥ ५२ ॥ उदश्चरः सकर्मकात् ॥ ५३ ॥ समस्तृतीयायुक्तात् ॥ ५४ ॥ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ॥ ५५ ॥ उपाद्यमः स्वकरणे ॥ ५६ ॥ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ॥ ५७ ॥ नानोर्ज्ञः ॥ ५८ ॥ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ॥ ५९ ॥ शदेः शितः ॥ ६० ॥ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ॥ ६१ ॥ पूर्ववत्सनः ॥ ६२ ॥ आम्प्रत्ययवत्कृञोऽनुप्रयोगस्य ॥ ६३ ॥ प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु ॥ ६४ ॥ समः क्ष्णुवः ॥ ६५ ॥ भुजोऽनवने ॥ ६६ ॥ णेरणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्त्ताऽनाध्याने ॥ ६७ ॥ भीस्म्योर्हेतुभये ॥ ६८ ॥ गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने ॥ ६९ ॥ लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च ॥ ७० ॥ मिथ्योपपदात्कृञोऽभ्यासे ॥ ७१ ॥ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ ७२ ॥ अपाद्वदः ॥ ७३ ॥ णिचश्च ॥ ७४ ॥ समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे ॥ ७५ ॥ अनुपसर्गाज्ज्ञः ॥ ७६ ॥ विभाषोपपदेन प्रतीयमाने ॥ ७७ ॥ शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् ॥ ७८ ॥ अनुपराभ्यां कृञः ॥ ७९ ॥ अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ॥ ८० ॥ प्राद्वहः ॥ ८१ ॥ परेर्मृषः ॥ ८२ ॥ व्याङ्परिभ्यो रमः ॥ ८३ ॥ उपाच्च ॥ ८४ ॥ विभाषाऽकर्मकात् ॥ ८५ ॥ बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः ॥ ८६ ॥ निगरणचलनार्थेभ्यश्च ॥ ८७ ॥ अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ॥ ८८ ॥ न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः ॥ ८९ ॥ वा क्यषः ॥ ९० ॥ द्युद्भ्यो लुङि ॥ ९१ ॥ वृद्भ्यः स्यसनोः ॥ ९२ ॥ लुटि च क्लृपः ॥ ९३ ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥ ३ ॥

---

* भूवादयः [illegible] ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

आकडारादेका संज्ञा ॥१॥ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ॥२॥ यूस्त्र्याख्यौ नदी ॥३॥ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ॥४॥ वामि ॥५॥ ङिति ह्रस्वश्च ॥६॥ शेषो घ्यसखि ॥७॥ पतिः समास एव ॥८॥ षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा ॥९॥ ह्रस्वं लघु ॥१०॥ संयोगे गुरु ॥११॥ दीर्घञ्च ॥१२॥ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् ॥१३॥ सुप्तिङन्तम्पदम् ॥१४॥ नः क्ये ॥१५॥ सिति च ॥१६॥ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने ॥१७॥ यचि भम् ॥१८॥ तसौ मत्वर्थे ॥१९॥ अयस्मयादीनि छन्दसि ॥२०॥ बहुषु बहुवचनम् ॥२१॥ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ॥२२॥ कारके ॥२३॥ ध्रुवमपायेऽपादानम् ॥२४॥ भीत्रार्थानां भयहेतुः ॥२५॥ पराजेरसोढः ॥२६॥ वारणार्थानामीप्सितः ॥२७॥ अन्तर्द्धौ येनादर्शनमिच्छति ॥२८॥ आख्यातोपयोगे ॥२९॥ जनिकर्तुः प्रकृतिः ॥३०॥ भुवः प्रभवः ॥३१॥ कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ॥३२॥ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ॥३३॥ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ॥३४॥ धारेरुत्तमर्णः ॥३५॥ स्पृहेरीप्सितः ॥३६॥ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ॥३७॥ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ॥३८॥ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ॥३९॥ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता ॥४०॥ अनुप्रतिगृणश्च ॥४१॥ साधकतमङ्करणम् ॥४२॥ दिवः कर्म च ॥४३॥ परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् ॥४४॥ आधारोऽधिकरणम् ॥४५॥ अधिशीङ्स्थासाङ्कर्म ॥४६॥ अभिनिविशश्च ॥४७॥ उपान्वध्याङ्वसः ॥४८॥ कर्त्तुरीप्सिततमङ्कर्म ॥४९॥ तथायुक्तं चानीप्सितम् ॥५०॥ अकथितञ्च ॥५१॥ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ ॥५२॥ हृक्रोरन्यतरस्याम् ॥५३॥ स्वतन्त्रः कर्त्ता ॥५४॥ तत्प्रयोजको हेतुश्च ॥५५॥ प्राग्रीश्वरान्निपाताः ॥५६॥ चादयोऽसत्त्वे ॥५७॥ प्रादयः ॥५८॥ उपसर्गाः क्रियायोगे ॥५९॥ गतिश्च ॥६०॥ ऊर्यादिच्विडाचश्च ॥६१॥ अनुकरणञ्चानितिपरम् ॥६२॥ आदरानादरयोस्सदसती ॥६३॥ भूषणेऽलम् ॥६४॥ अन्तरपरिग्रहे ॥६५॥ कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते ॥६६॥

पुरोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥ अस्तञ्च ॥ ६८ ॥ अच्छगत्यर्थवदेषु ॥ ६९ ॥ अदोऽनुपदेशे ॥ ७० ॥ तिरोऽन्तर्द्धौ ॥ ७१ ॥ विभाषा कृञि ॥ ७२ ॥ उपाजेऽन्वाजे ॥ ७३ ॥ साक्षात्प्रभृतीनि च ॥ ७४ ॥ अनत्याधान उरसिमनसी ॥ ७५ ॥ मध्ये पदे निवचने च ॥ ७६ ॥ नित्यं हस्तेपाणावुपयमने ॥ ७७ ॥ प्राध्वं बन्धने ॥ ७८ ॥ जीविकोपनिषदावौपम्ये ॥ ७९ ॥ ते प्राग् धातोः ॥ ८० ॥ छन्दसि परेऽपि ॥ ८१ ॥ व्यवहिताश्च ॥ ८२ ॥ कर्मप्रवचनीयाः ॥ ८३ ॥ अनुर्लक्षणे ॥ ८४ ॥ तृतीयार्थे ॥ ८५ ॥ हीने ॥ ८६ ॥ उपोऽधिके च ॥ ८७ ॥ अपपरी वर्जने ॥ ८८ ॥ आङ्मर्यादावचने ॥ ८९ ॥ लक्षणेत्थम्भूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः ॥ ९० ॥ अभिरभागे ॥ ९१ ॥ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ॥ ९२ ॥ अधिपरी अनर्थकौ ॥ ९३ ॥ सुः पूजायाम् ॥ ९४ ॥ अतिरतिक्रमणे च ॥ ९५ ॥ अपिः पदार्थसम्भावनान्ववसर्गगर्हासमुच्चयेषु ॥ ९६ ॥ अधिरीश्वरे ॥ ९७ ॥ विभाषा कृञि ॥ ९८ ॥ लः परस्मैपदम् ॥ ९९ ॥ तङानावात्मनेपदम् ॥ १०० ॥ तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः ॥ १०१ ॥ तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः ॥ १०२ ॥ सुपः ॥ १०३ ॥ विभक्तिश्च ॥ १०४ ॥ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः ॥ १०५ ॥ प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च ॥ १०६ ॥ अस्मद्युत्तमः ॥ १०७ ॥ शेषे प्रथमः ॥ १०८ ॥ परस्सन्निकर्षः संहिता ॥ १०९ ॥ विरामोऽवसानम् ॥ ११० ॥ *

इति प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥ ४ ॥

प्रथमाध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

---

* आकडाराद्गुण्वनुप्रश्निगणोऽनुकरणं व्यवहिताश्च नानि नव ॥

अथ द्वितीयाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

समर्थः पदविधिः ॥ १ ॥ सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ॥ २ ॥ प्राक्कडारात्समासः ॥ ३ ॥ सह सुपा ॥ ४ ॥ अव्ययीभावः ॥ ५ ॥ अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ॥ ६ ॥ यथासादृश्ये ॥ ७ ॥ यावदवधारणे ॥ ८ ॥ सुप् प्रतिना मात्रार्थे ॥ ९ ॥ अक्षशलाकासंख्याः परिणा ॥ १० ॥ विभाषाऽपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या ॥ ११ ॥ आङ्मर्यादाभिविध्योः ॥ १२ ॥ लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये ॥ १३ ॥ अनुर्यत्समया ॥ १४ ॥ यस्य चायामः ॥ १५ ॥ तिष्ठद्गु प्रभृतीनि च ॥ १६ ॥ पारेमध्ये षष्ठ्या वा ॥ १७ ॥ संख्या वंश्येन ॥ १८ ॥ नदीभिश्च ॥ १९ ॥ अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ॥ २० ॥ तत्पुरुषः ॥ २१ ॥ द्विगुश्च ॥ २२ ॥ द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥ २३ ॥ स्वयं क्तेन ॥ २४ ॥ खट्वा क्षेपे ॥ २५ ॥ सामि ॥ २६ ॥ कालाः ॥ २७ ॥ अत्यन्तसंयोगे च ॥ २८ ॥ तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥ २९ ॥ पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः ॥ ३० ॥ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ॥ ३१ ॥ कृत्यैरधिकार्थवचने ॥ ३२ ॥ अन्नेन व्यञ्जनम् ॥ ३३ ॥ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ॥ ३४ ॥ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥ ३५ ॥ पञ्चमी भयेन ॥ ३६ ॥ अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः ॥ ३७ ॥ स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन ॥ ३८ ॥ सप्तमी शौण्डैः ॥ ३९ ॥ सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च ॥ ४० ॥ ध्वाङ्क्षेण क्षेपे ॥ ४१ ॥ कृत्यैर्ऋणे ॥ ४२ ॥ संज्ञायाम् ॥ ४३ ॥ क्तेनाहोरात्रावयवाः ॥ ४४ ॥ तत्र ॥ ४५ ॥ क्षेपे ॥ ४६ ॥ पात्रे सम्मितादयश्च ॥ ४७ ॥ पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन ॥ ४८ ॥ दिक्सङ्ख्ये संज्ञायाम् ॥ ४९ ॥ तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च ॥ ५० ॥ सङ्ख्यापूर्वो द्विगुः ॥ ५१ ॥ कुत्सितानि कुत्सनैः ॥ ५२ ॥ पापाणके कुत्सितैः ॥ ५३ ॥ उपमानानि सामान्यवचनैः ॥ ५४ ॥ उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे ॥ ५५ ॥

विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ॥ ५९ ॥ पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमानमध्य-
मध्यमवीराश्च ॥ ५७ ॥ श्रेण्यादयः कृतादिभिः ॥ ५८ ॥ क्तेन नञ्विशि-
ष्टेनानञ् ॥ ५९ ॥ सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः ॥ ६० ॥ वृन्दारकनागकु-
ञ्जरैः पूज्यमानम् ॥ ६१ ॥ कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने ॥ ६२ ॥ किं क्षेपे ॥ ६३ ॥
पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः
॥ ६४ ॥ प्रशंसावचनैश्च ॥ ६५ ॥ युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः ॥ ६६ ॥
कृत्यतुल्याख्या अजात्या ॥ ६७ ॥ वर्णो वर्णेन ॥ ६८ ॥ कुमारः श्रमणादि-
भिः ॥ ६९ ॥ चतुष्पादो गर्भिण्या ॥ ७० ॥ मयूरव्यंसकादयश्च ॥ ७१ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ॥ १ ॥ अर्द्धं नपुंसकम् ॥ २ ॥ द्विती-
यतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ॥ ४ ॥ कालाः
परिमाणिना ॥ ५ ॥ नञ् ॥ ६ ॥ ईषदकृता ॥ ७ ॥ षष्ठी ॥ ८ ॥ याजकादि-
भिश्च ॥ ९ ॥ न निर्द्धारणे ॥ १० ॥ पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधि-
करणेन ॥ ११ ॥ क्तेन च पूजायाम् ॥ १२ ॥ अधिकरणवाचिना च ॥ १३ ॥
कर्मणि च ॥ १४ ॥ तृजकाभ्यां कर्त्तरि ॥ १५ ॥ कर्त्तरि च ॥ १६ ॥ नित्यं
क्रीडाजीविकयोः ॥ १७ ॥ कुगतिप्रादयः ॥ १८ ॥ उपपदमतिङ् ॥ १९ ॥
अमैवाव्ययेन ॥ २० ॥ तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ क्त्वा च ॥ २२ ॥
शेषो बहुव्रीहिः ॥ २३ ॥ अनेकमन्यपदार्थे ॥ २४ ॥ सङ्ख्ययाव्ययासन्नादूरा-
धिकसङ्ख्याः सङ्ख्येये ॥ २५ ॥ दिङ्नामान्यन्तराले ॥ २६ ॥ तत्र तेनेद-
मिति सरूपे ॥ २७ ॥ तेन सहेति तुल्ययोगे ॥ २८ ॥ चार्थे द्वन्द्वः ॥ २९ ॥
उपसर्ज्जनं पूर्वम् ॥ ३० ॥ राजदन्तादिषु परम् ॥ ३१ ॥ द्वन्द्वे घि ॥ ३२ ॥ अ-
जाद्यदन्तम् ॥ ३३ ॥ अल्पाच्तरम् ॥ ३४ ॥ सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ ॥ ३५ ॥

* समर्थोन्य पदार्थे सिद्धशुष्कसन्महद् द्वादश ।

निष्ठा ॥ ३६ ॥ वाहिताग्न्यादिषु ॥ ३७ ॥ कडाराः कर्मधारये ॥ ३८ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

अनभिहिते ॥ १ ॥ कर्मणि द्वितीया ॥ २ ॥ तृतीया च होश्छन्दसि ॥ ३ ॥ अन्तरान्तरेण युक्ते ॥ ४ ॥ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ॥ ५ ॥ अपवर्गे तृतीया ॥ ६ ॥ सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये ॥ ७ ॥ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ॥ ८ ॥ यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनन्तत्र सप्तमी ॥ ९ ॥ पञ्चम्यपाङ्परिभिः ॥ १० ॥ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ॥ ११ ॥ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ॥ १२ ॥ चतुर्थी सम्प्रदाने ॥ १३ ॥ क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः ॥ १४ ॥ तुमर्थाच्च भाववचनात् ॥ १५ ॥ नमःस्वस्तिस्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च ॥ १६ ॥ मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा प्राणिषु ॥ १७ ॥ कर्तृकरणयोस्तृतीया ॥ १८ ॥ सहयुक्तेऽप्रधाने ॥ १९ ॥ येनाङ्गविकारः ॥ २० ॥ इत्थम्भूतलक्षणे ॥ २१ ॥ संज्ञोऽन्यतरस्याङ्कर्मणि ॥ २२ ॥ हेतौ ॥ २३ ॥ अकर्तर्यृणे पञ्चमी ॥ २४ ॥ विभाषा गुणे स्त्रियाम् ॥ २५ ॥ षष्ठी हेतुप्रयोगे ॥ २६ ॥ सर्वनाम्नस्तृतीया च ॥ २७ ॥ अपादाने पञ्चमी ॥ २८ ॥ अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ॥ २९ ॥ षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन ॥ ३० ॥ एनपा द्वितीया ॥ ३१ ॥ पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् ॥ ३२ ॥ करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयस्यासत्त्ववचनस्य ॥ ३३ ॥ दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् ॥ ३४ ॥ दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च ॥ ३५ ॥ सप्तम्यधिकरणे च ॥ ३६ ॥ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ॥ ३७ ॥ षष्ठी चानादरे ॥ ३८ ॥ स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च ॥ ३९ ॥ आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् ॥ ४० ॥ यतश्च निर्द्धारणम् ॥ ४१ ॥ पञ्चमीविभक्ते ॥ ४२ ॥ साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रतेः ॥ ४३ ॥ प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च ॥ ४४ ॥ नक्षत्रे च लुपि ॥ ४५ ॥ प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा ॥ ४६ ॥

* पूर्वापराधरोत्तरतृतीयाप्रभृतीन्यष्टादश ।

सम्बोधने च ॥ ४७ ॥ सामन्त्रितम् ॥ ४८ ॥ एकवचनं सम्बुद्धिः ॥ ४९ ॥ षष्ठी शेषे ॥ ५० ॥ ज्ञो विदर्थस्य करणे ॥ ५१ ॥ अधीगर्थदयेशां कर्मणि ॥ ५२ ॥ कृञः प्रतियत्ने ॥ ५३ ॥ रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः ॥ ५४ ॥ आशिषि नाथः ॥ ५५ ॥ जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम् ॥ ५६ ॥ व्यवहृपणोः समर्थयोः ॥ ५७ ॥ दिवस्तदर्थस्य ॥ ५८ ॥ विभाषोपसर्गे ॥ ५९ ॥ द्वितीया ब्राह्मणे ॥ ६० ॥ प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने ॥ ६१ ॥ चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि ॥ ६२ ॥ यजेश्च करणे ॥ ६३ ॥ कृत्वोर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे ॥ ६४ ॥ कर्तृकर्मणोः कृति ॥ ६५ ॥ उभयप्राप्तौ कर्मणि ॥ ६६ ॥ क्तस्य च वर्त्तमाने ॥ ६७ ॥ अधिकरणवाचिनश्च ॥ ६८ ॥ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम् ॥ ६९ ॥ अकेनोर्भविष्यदाधमर्ण्ययोः ॥ ७० ॥ कृत्यानां कर्त्तरि वा ॥ ७१ ॥ तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ॥ ७२ ॥ चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः ॥ ७३ ॥*

इति द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

द्विगुरेकवचनम् ॥ १ ॥ द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम् ॥ २ ॥ अनुवादे चरणानाम् ॥ ३ ॥ अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम् ॥ ४ ॥ अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम् ॥ ५ ॥ जातिरप्राणिनाम् ॥ ६ ॥ विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः ॥ ७ ॥ क्षुद्रजन्तवः ॥ ८ ॥ येषाञ्च विरोधः शाश्वतिकः ॥ ९ ॥ शूद्राणामनिरवसितानाम् ॥ १० ॥ गवाश्वप्रभृतीनि च ॥ ११ ॥ विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम् ॥ १२ ॥ विप्रतिषिद्धञ्चानधिकरणवाचि ॥ १३ ॥ न दधिपय आदीनि ॥ १४ ॥ अधिकरणैतावत्त्वे च ॥ १५ ॥ विभाषा समीपे ॥ १६ ॥ स नपुंसकम् ॥ १७ ॥ अव्ययीभावश्च ॥ १८ ॥ तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः ॥ १९ ॥ संज्ञायाङ्कन्थोशीनरेषु ॥ २० ॥ उपज्ञोपक्रमन्तदाद्याचिख्यासा-

* अनभिहित इत्यंभूत यतश्च प्रेष्यब्रुवोश्चयोदश ॥

याम् ॥ २१ ॥ छाया बाहुल्ये ॥ २२ ॥ सभाराजामनुष्यपूर्वा ॥ २३ ॥ अशाला च ॥ २४ ॥ विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम् ॥ २५ ॥ परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ॥ २६ ॥ पूर्ववदश्ववडवौ ॥ २७ ॥ हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि ॥ २८ ॥ रात्राह्नाहाः पुंसि ॥ २९ ॥ अपथं नपुंसकम् ॥ ३० ॥ अर्द्धर्चाः पुंसि च ॥ ३१ ॥ इदमोऽन्वादेशेऽशनुदात्तस्तृतीयादौ ॥ ३२ ॥ एतदस्त्रतसो स्त्रतसौ चानुदात्तौ ॥ ३३ ॥ द्वितीयाटौस्स्वेनः ॥ ३४ ॥ आर्द्धधातुके ॥ ३५ ॥ अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति ॥ ३६ ॥ लुङ्सनोर्घस्लृ ॥ ३७ ॥ घञपोश्च ॥ ३८ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ३९ ॥ लिट्यन्यतरस्याम् ॥ ४० ॥ वेञो वयिः ॥ ४१ ॥ हनो वध लिङि ॥ ४२ ॥ लुङि च ॥ ४३ ॥ आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ इणो गा लुङि ॥ ४५ ॥ णौ गमिरबोधने ॥ ४६ ॥ सनि च ॥ ४७ ॥ इङश्च ॥ ४८ ॥ गाङ् लिटि ॥ ४९ ॥ विभाषा लुङ्लृङोः ॥ ५० ॥ णौ च संश्चङोः ॥ ५१ ॥ अस्तेर्भूः ॥ ५२ ॥ ब्रुवो वचिः ॥ ५३ ॥ चक्षिङः ख्याञ् ॥ ५४ ॥ वा लिटि ॥ ५५ ॥ अजेर्व्यघञपोः ॥ ५६ ॥ वा यौ ॥ ५७ ॥ ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः ॥ ५८ ॥ पैलादिभ्यश्च ॥ ५९ ॥ इञः प्राचाम् ॥ ६० ॥ न तौल्वलिभ्यः ॥ ६१ ॥ तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम् ॥ ६२ ॥ यस्कादिभ्यो गोत्रे ॥ ६३ ॥ यञञोश्च ॥ ६४ ॥ अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोतमाङ्गिरोभ्यश्च ॥ ६५ ॥ बह्वच इञः प्राच्यभरतेषु ॥ ६६ ॥ न गोपवनादिभ्यः ॥ ६७ ॥ तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे ॥ ६८ ॥ उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे ॥ ६९ ॥ आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच ॥ ७० ॥ सुपो धातुप्रातिपदिकयोः ॥ ७१ ॥ अदिप्रभृतिभ्यः शपः ॥ ७२ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ७३ ॥ यङोऽचि च ॥ ७४ ॥ जुहोत्यादिभ्यः श्लुः ॥ ७५ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ७६ ॥ गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु ॥ ७७ ॥ विभाषा घ्राधेट्शाच्छासः ॥ ७८ ॥ तनादिभ्यस्तथासोः ॥ ७९ ॥ मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृच्कृगमिजनिभ्यो लेः ॥ ८० ॥ आमः ॥ ८१ ॥ अव्ययादाप्सुपः ॥ ८२ ॥ नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः ॥ ८३ ॥ तृतीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ ८४ ॥ लुटः प्रथमस्य डारौरसः ॥ ८५ ॥ *

इति द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

द्वितीयाध्यायः समाप्तः ॥

---

* द्विसुदपञ्चोपक्रमं वेदांवयिनजीव्वादिभ्य आमः पञ्च ।

अथ तृतीयाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

प्रत्ययः ॥ १ ॥ परश्च ॥ २ ॥ आद्युदात्तश्च ॥ ३ ॥ अनुदात्तौ सुप्पितौ ॥ ४ ॥ गुप्तिज्किद्भ्यः सन् ॥ ५ ॥ मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ॥ ६ ॥ धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा ॥ ७ ॥ सुप आत्मनः क्यच् ॥ ८ ॥ काम्यच्च ॥ ९ ॥ उपमानादाचारे ॥ १० ॥ कर्तुः क्यङ् सलोपश्च ॥ ११ ॥ भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः ॥ १२ ॥ लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् ॥ १३ ॥ कष्टाय क्रमणे ॥ १४ ॥ कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः ॥ १५ ॥ बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने ॥ १६ ॥ शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे ॥ १७ ॥ सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् ॥ १८ ॥ नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् ॥ १९ ॥ पुच्छभाण्डचीवराण्णिङ् ॥ २० ॥ मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् ॥ २१ ॥ धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ॥ २२ ॥ नित्यं कौटिल्ये गतौ ॥ २३ ॥ लुपसदचरजपजभदहदशगॄभ्यो भावगर्हायाम् ॥ २४ ॥ सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच् ॥ २५ ॥ हेतुमति च ॥ २६ ॥ कण्ड्वादिभ्यो यक् ॥ २७ ॥ गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः ॥ २८ ॥ ऋतेरीयङ् ॥ २९ ॥ कमेर्णिङ् ॥ ३० ॥ आयादय आर्धधातुके वा ॥ ३१ ॥ सनाद्यन्ता धातवः ॥ ३२ ॥ स्यतासी लृलुटोः ॥ ३३ ॥ सिब्बहुलं लेटि ॥ ३४ ॥ कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि ॥ ३५ ॥ इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः ॥ ३६ ॥ दयायासश्च ॥ ३७ ॥ उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ३८ ॥ भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च ॥ ३९ ॥ कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि ॥ ४० ॥ विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् ॥ ४१ ॥ अभ्युत्सादयाम्प्रजनयाञ्चिकयां रमयामकः पावयां क्रियाद्विदामक्रन्निति च्छन्दसि ॥ ४२ ॥ च्लि लुङि ॥ ४३ ॥ च्लेः सिच् ॥ ४४ ॥ शल इगुपधादनिटः क्सः ॥ ४५ ॥ श्लिष आलिङ्गने ॥ ४६ ॥ न दृशः ॥ ४७ ॥ णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्तरि चङ् ॥ ४८ ॥ विभाषा धेट्श्व्योः ॥ ४९ ॥ गुपेश्छन्दसि ॥ ५० ॥ नोनयतिध्वनयत्येलयत्य-

र्दयतिभ्यः ॥ ५१ ॥ अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् ॥ ५२ ॥ लिपिसिचिह्वश्च ॥ ५३ ॥
आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु ॥ ५५ ॥
सर्त्तिशास्त्यर्त्तिभ्यश्च ॥ ५६ ॥ इरितो वा ॥ ५७ ॥ जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचु-
ग्लुञ्चुश्विभ्यश्च ॥ ५८ ॥ कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि ॥ ५९ ॥ चिण्ते पदः ॥ ६० ॥
दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ६१ ॥ अचः कर्मकर्त्तरि ॥ ६२ ॥
दुहश्च ॥ ६३ ॥ न रुधः ॥ ६४ ॥ तपोऽनुतापे च ॥ ६५ ॥ चिण्भावकर्मणोः
॥ ६६ ॥ सार्वधातुके यक् ॥ ६७ ॥ कर्त्तरि शप् ॥ ६८ ॥ दिवादिभ्यः श्यन्
॥ ६९ ॥ वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः ॥ ७० ॥ यसोऽनुपसर्गात्
॥ ७१ ॥ संयसश्च ॥ ७२ ॥ स्वादिभ्यः श्नुः ॥ ७३ ॥ श्रुवः शृ च ॥ ७४ ॥
अक्षोऽन्यतरस्याम् ॥ ७५ ॥ तनूकरणे तक्षः ॥ ७६ ॥ तुदादिभ्यः शः ॥ ७७ ॥
रुधादिभ्यः श्नम् ॥ ७८ ॥ तनादिकृञ्भ्य उः ॥ ७९ ॥ धिन्विकृण्व्योरच ॥ ८० ॥
क्र्यादिभ्यः श्ना ॥ ८१ ॥ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भुस्कुञ्भ्यः श्नुश्च ॥ ८२ ॥
हलः श्नः शानज्झौ ॥ ८३ ॥ छन्दसि शायजपि ॥ ८४ ॥ व्यत्ययो बहुलम् ॥ ८५ ॥
लिङ्याशिष्यङ् ॥ ८६ ॥ कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः ॥ ८७ ॥ तपस्तपःकर्मक-
स्यैव ॥ ८८ ॥ न दुहस्नुनमां यक्चिणौ ॥ ८९ ॥ कुषिरञ्जोः प्राचां श्यन् पर-
स्मैपदञ्च ॥ ९० ॥ धातोः ॥ ९१ ॥ तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् ॥ ९२ ॥ कृदतिङ्
॥ ९३ ॥ वा सरूपोऽस्त्रियाम् ॥ ९४ ॥ कृत्याः ॥ ९५ ॥ तव्यत्तव्यानीयरः ॥ ९६ ॥ अचो
यत् ॥ ९७ ॥ पोरदुपधात् ॥ ९८ ॥ शकिसहोश्च ॥ ९९ ॥ गदमदचरयमश्चाऽनुपसर्गे
॥ १०० ॥ अवद्यपण्यवर्या गर्ह्यपणितव्यानिरोधेषु ॥ १०१ ॥ वह्यङ्करणम् ॥ १०२ ॥
अर्य्यः स्वामिवैश्ययोः ॥ १०३ ॥ उपसर्य्या काल्या प्रजने ॥ १०४ ॥ अजर्य्यं
सङ्गतम् ॥ १०५ ॥ वदः सुपि क्यप् च ॥ १०६ ॥ भुवो भावे ॥ १०७ ॥ हन-
स्त च ॥ १०८ ॥ एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् ॥ १०९ ॥ ऋदुपधाच्चाक्लृपि-
चृतेः ॥ ११० ॥ ई च खनः ॥ १११ ॥ भृञोऽसञ्ज्ञायाम् ॥ ११२ ॥ मृजेर्विभाषा
॥ ११३ ॥ राजसूयसूर्य्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः ॥ ११४ ॥ भिद्योद्ध्यौ
नदे ॥ ११५ ॥ पुष्यसिद्ध्यौ नक्षत्रे ॥ ११६ ॥ विपूयविनीयजित्या मुञ्जकल्कहलिषु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ११७ ॥ प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ॥ ११८ ॥ पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च ॥ ११९ ॥ विभाषा कृवृषोः ॥ १२० ॥ युग्यञ्च पत्रे ॥ १२१ ॥ अमावस्यदन्यतरस्याम् ॥ १२२ ॥ छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्यमर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्या-पृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि ॥ १२३ ॥ ऋहलोर्ण्यत् ॥ १२४ ॥ ओरावश्यके ॥ १२५ ॥ आसुयुवपिरपिलपित्रपिचमश्च ॥ १२६ ॥ आनाय्यो नित्ये ॥ १२७ ॥ प्रणाय्यो सम्मतौ ॥ १२८ ॥ पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या मानहविर्निवाससामिधेनीषु ॥ १२९ ॥ क्रतौ कुण्डपाय्यसञ्चाय्यौ ॥ १३० ॥ अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः ॥ १३१ ॥ चित्याग्निचित्ये च ॥ १३२ ॥ एवुल्तृचौ ॥ १३३ ॥ नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः ॥ १३४ ॥ इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः ॥ १३५ ॥ आतश्चोपसर्गे ॥ १३६ ॥ पाघ्राध्माधेट्दृशः शः ॥१३७॥ अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च ॥१३८॥ ददातिदधात्योर्विभाषा ॥ १३९ ॥ ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः ॥ १४० ॥ श्याद्व्यधास्रुसंस्रतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च ॥ १४१ ॥ दुन्योरनुपसर्गे ॥ १४२ ॥ विभाषा ग्रहः ॥ १४३ ॥ गेहे कः ॥ १४४ ॥ शिल्पिनिष्वुन् ॥ १४५ ॥ गस्थकन् ॥ १४६ ॥ ण्युट् च ॥ १४७ ॥ हश्च व्रीहिकालयोः ॥ १४८ ॥ प्रुसृल्वः समभिहारे वुन् ॥ १४९ ॥ आशिषि च ॥ १५० ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीय पादारम्भः ॥

कर्मण्यण् ॥ १ ॥ ह्वावामश्च ॥ २ ॥ आतोऽनुपसर्गे कः ॥ ३ ॥ सुपि स्थः ॥ ४ ॥ तुन्दशोकयोः परिमृजापनुदोः ॥ ५ ॥ प्रे दाज्ञः ॥ ६ ॥ समि ख्यः ॥ ७ ॥ गापोष्टक् ॥ ८ ॥ हरतेरनुद्यमनेऽच् ॥ ९ ॥ वयसि च ॥ १० ॥ आङि ताच्छील्ये ॥ ११ ॥ अर्हः ॥ १२ ॥ स्तम्बकर्णयोरमिजपोः ॥ १३ ॥ शमि धातोः सञ्ज्ञायाम् ॥ १४ ॥ अधिकरणे शेतेः ॥ १५ ॥ चरेष्टः ॥ १६ ॥ भिक्षासेनादायेषु च ॥ १७ ॥ पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ॥ १८ ॥ पूर्वे कर्तरि ॥ १९ ॥ कृञो हेतुता-

---

* प्रत्ययोगुणर्द्धिवृद्धान्दीपजनकथादिभ्यो बधयुग्यंस्याद्धन्धा दश ॥

च्छील्यानुलोम्येषु ॥२०॥ दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्तानन्तादिबहुनान्दीकिं-
लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसङ्ख्याजङ्घाबाह्वहर्य्यत्तद्धनुररुष्षु ॥२१॥ कर्मणि
भृतौ ॥ २२ ॥ न शब्दलोककलहगाथावैरचाटुसूत्रमन्त्रपदेषु ॥ २३ ॥ स्तम्बश-
कृतोरिन् ॥२४॥ हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ॥ २५ ॥ फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च ॥२६॥
छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ॥ २७ ॥ एजेः खश् ॥ २८ ॥ नासिकास्तनयोर्ध्मा-
धेटोः ॥ २९ ॥ नाडीमुष्ट्योश्च ॥ ३० ॥ उदि कूले रुजिवहोः ॥ ३१ ॥ वहाभ्रे
लिहः ॥ ३२ ॥ परिमाणे पचः ॥ ३३ ॥ मितनखे च ॥ ३४ ॥ विध्वरुषोस्तुदः
॥ ३५ ॥ असूर्य्यललाटयोर्दृशितपोः ॥ ३६ ॥ उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च
॥ ३७ ॥ प्रियवशे वदः खच् ॥ ३८ ॥ द्विषत्परयोस्तापेः ॥ ३९ ॥ वाचि यमो
व्रते ॥ ४० ॥ पूः सर्वयोर्दारिसहोः ॥ ४१ ॥ सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ॥ ४२ ॥
मेघर्तिभयेषु कृञः ॥ ४३ ॥ क्षेमप्रियमद्रेण च ॥ ४४ ॥ आशिते भुवः करण-
भावयोः ॥ ४५ ॥ सञ्ज्ञायाम्भृतृवृजिधारिसहितपिदमः ॥४६॥ गमश्च ॥४७॥
अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः ॥ ४८ ॥ आशिषि हनः ॥ ४९ ॥ अपेक्ले-
शतमसोः ॥ ५० ॥ कुमारशीर्षयोर्णिनिः ॥ ५१ ॥ लक्षणे जायापत्योष्टक् ॥ ५२ ॥
अमनुष्यकर्तृके च ॥ ५३ ॥ शक्तौ हस्तिकपाटयोः ॥ ५४ ॥ पाणिघताडघौ
शिल्पिनि ॥ ५५ ॥ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषुच्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः
करणे ख्युन् ॥ ५६ ॥ कर्त्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ ॥ ५७ ॥ स्पृशोऽनुदके क्विन्
॥ ५८ ॥ ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्चुयुजिक्रुञ्चाञ्च ॥ ५९ ॥ त्यदादिषु दृशो-
नालोचने कञ्च ॥ ६० ॥ सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गे-
पि क्विप् ॥ ६१ ॥ भजो ण्विः ॥ ६२ ॥ छन्दसि सहः ॥ ६३ ॥ वहश्च ॥ ६४ ॥
कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट् ॥ ६५ ॥ हव्येऽनन्तः पादम् ॥ ६६ ॥ जनसनखनक्रम
गमो विट् ॥ ६७ ॥ अदोऽनन्ने ॥ ६८ ॥ क्रव्ये च ॥ ६९ ॥ दुहः कप् घश्च
॥ ७० ॥ मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् ॥ ७१ ॥ अवे यजः ॥ ७२ ॥
विजुपे छन्दसि ॥ ७३ ॥ आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च ॥ ७४ ॥
अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ ७५ ॥ क्विप् च ॥ ७६ ॥ स्थः क च ॥ ७७ ॥

सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ॥ ७८ ॥ कर्तर्युपमाने ॥ ७९ ॥ व्रते ॥ ८० ॥ बहुलमाभीक्ष्ण्ये ॥ ८१ ॥ मनः ॥ ८२ ॥ आत्ममाने खश्च ॥ ८३ ॥ भूते ॥ ८४ ॥ करणे यजः ॥ ८५ ॥ कर्मणि हनः ॥ ८६ ॥ ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् ॥ ८७ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ८८ ॥ सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ॥ ८९ ॥ सोमे सुञः ॥ ९० ॥ अग्नौ चेः ॥ ९१ ॥ कर्मण्यग्न्याख्यायाम् ॥ ९२ ॥ कर्मणीनिर्विक्रियः ॥ ९३ ॥ दृशेः क्वनिप् ॥ ९४ ॥ राजनि युधिकृञः ॥ ९५ ॥ सहे च ॥ ९६ ॥ सप्तम्याञ्जनेर्डः ॥ ९७ ॥ पञ्चम्यामजातौ ॥ ९८ ॥ उपसर्गे च सञ्ज्ञायाम् ॥ ९९ ॥ अनौ कर्मणि ॥ १०० ॥ अन्येष्वपि दृश्यते ॥ १०१ ॥ निष्ठा ॥ १०२ ॥ सुयजोर्ङ्वनिप् ॥ १०३ ॥ जीर्यतेरतृन् ॥ १०४ ॥ छन्दसि लिट् ॥ १०५ ॥ लिटः कानज्वा ॥ १०६ ॥ क्वसुश्च ॥ १०७ ॥ भाषायां सदवसश्रुवः ॥ १०८ ॥ उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च ॥ १०९ ॥ लुङ् ॥ ११० ॥ अनद्यतने लङ् ॥ १११ ॥ अभिज्ञावचने लृट् ॥ ११२ ॥ न यदि ॥ ११३ ॥ विभाषा साकाङ्क्षे ॥ ११४ ॥ परोक्षे लिट् ॥ ११५ ॥ हशश्वतोर्लङ् च ॥ ११६ ॥ प्रश्ने चासन्नकाले ॥ ११७ ॥ लट् स्मे ॥ ११८ ॥ अपरोक्षे च ॥ ११९ ॥ ननौ पृष्टप्रतिवचने ॥ १२० ॥ नन्वोर्विभाषा ॥ १२१ ॥ पुरि लुङ् चास्मे ॥ १२२ ॥ वर्तमाने लट् ॥ १२३ ॥ लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे ॥ १२४ ॥ सम्बोधने च ॥ १२५ ॥ लक्षणहेत्वोः क्रियायाः ॥ १२६ ॥ तौ सत् ॥ १२७ ॥ पूङ्यजोः शानन् ॥ १२८ ॥ ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् ॥ १२९ ॥ इङ्धार्योः शत्रकृच्छ्रिणि ॥ १३० ॥ द्विषोऽमित्रे ॥ १३१ ॥ सुञो यज्ञसंयोगे ॥ १३२ ॥ अर्हः प्रशंसायाम् ॥ १३३ ॥ आक्वेस्तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिषु ॥ १३४ ॥ तृन् ॥ १३५ ॥ अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच् ॥ १३६ ॥ णेश्छन्दसि ॥ १३७ ॥ भुवश्च ॥ १३८ ॥ ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः ॥ १३९ ॥ त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः ॥ १४० ॥ शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् ॥ १४१ ॥ सम्पृचानुरुधाङ्यमाङ्यसपरिसृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरटपरिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषद्रुहदुहयुजाक्रीडविविचत्यजर-

जभजातिचरापचरामुषाभ्याहनश्च ॥ १४२ ॥ वौ कषलसकत्थस्रम्भः ॥ १४३ ॥ अपे च लषः ॥ १४४ ॥ प्रेलपसृद्रुमथवदवसः ॥ १४५ ॥ निन्दहिंसक्लिशखादविनाशपरिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासूयो वुञ् ॥ १४६ ॥ देविक्रुशोश्चोपसर्गे ॥ १४७ ॥ चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच् ॥ १४८ ॥ अनुदात्तेतश्च हलादेः ॥ १४९ ॥ जुचंक्रम्यदंद्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः ॥ १५० ॥ क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च ॥ १५१ ॥ न यः ॥ १५२ ॥ सूददीपदीक्षश्च ॥ १५३ ॥ लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ् ॥ १५४ ॥ जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् ॥ १५५ ॥ प्रजोरिनिः ॥ १५६ ॥ जिदृक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यमपरिभूप्रसूभ्यश्च ॥ १५७ ॥ स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् ॥ १५८ ॥ दाधेट्सिशदसदो रुः ॥ १५९ ॥ सृघस्यदः क्मरच् ॥ १६० ॥ भञ्जभासमिदो घुरच् ॥ १६१ ॥ विदिभिदिच्छिदेः कुरच् ॥ १६२ ॥ इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् ॥ १६३ ॥ गत्वरश्च ॥ १६४ ॥ जागरूकः ॥ १६५ ॥ यजजपदशां यङः ॥ १६६ ॥ नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः ॥ १६७ ॥ सनाशंसभिक्ष उः ॥ १६८ ॥ विन्दुरिच्छुः ॥ १६९ ॥ क्याच्छन्दसि ॥ १७० ॥ आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च ॥ १७१ ॥ स्वपितृषोर्नजिङ् ॥ १७२ ॥ शॄवन्द्योरारुः ॥ १७३ ॥ भियः क्रुक्लुकनौ ॥ १७४ ॥ स्थेशभासपिसकसो वरच् ॥ १७५ ॥ यश्च यङः ॥ १७६ ॥ भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपॄजुग्रावस्तुवः क्विप् ॥ १७७ ॥ अन्येभ्योपि दृश्यते ॥ १७८ ॥ भुवः संज्ञान्तरयोः ॥ १७९ ॥ विप्रसम्भ्योड्वसंज्ञायाम् ॥ १८० ॥ धः कर्मणि ष्ट्रन् ॥ १८१ ॥ दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे ॥ १८२ ॥ हलसूकरयोः पुवः ॥ १८३ ॥ अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः ॥ १८४ ॥ पुवः संज्ञायाम् ॥ १८५ ॥ कर्तरि चर्षिदेवतयोः ॥ १८६ ॥ ञीतः क्तः ॥ १८७ ॥ मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च ॥ १८८ ॥*

इति तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

* कर्मणिदिवापूः सर्वसत्सूबहुलमन्येष्वपिनन्योः शर्मितिभञ्जभासधः कर्मण्यष्टौ ।

तृतीयपादारम्भः ॥

उणादयो बहुलम् ॥ १ ॥ भूतेपि दृश्यन्ते ॥ २ ॥ भविष्यति गम्यादयः ॥ ३ ॥ यावत्पुरा निपातयोर्लट् ॥ ४ ॥ विभाषा कदाकर्ह्योः ॥ ५ ॥ किंवृत्ते लिप्सायाम् ॥ ६ ॥ लिप्स्यमानसिद्धौ च ॥ ७ ॥ लोडर्थलक्षणे च ॥ ८ ॥ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥ ९ ॥ तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ॥ १० ॥ भाववचनाश्च ॥ ११ ॥ अण् कर्मणि च ॥ १२ ॥ लृट् शेषे च ॥ १३ ॥ लृटः सद्वा ॥ १४ ॥ अनद्यतने लुट् ॥ १५ ॥ पदरुजविशस्पृशो घञ् ॥ १६ ॥ सृ स्थिरे ॥ १७ ॥ भावे ॥ १८ ॥ अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ॥ १९ ॥ परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः ॥ २० ॥ इङश्च ॥ २१ ॥ उपसर्गे रुवः ॥ २२ ॥ समि युद्रुदुवः ॥ २३ ॥ श्रिणीभुवोनुपसर्गे ॥ २४ ॥ वौ क्षुश्रुवः ॥ २५ ॥ अवोदोर्नियः ॥ २६ ॥ प्रे द्रुस्तुस्रुवः ॥ २७ ॥ निरभ्योः पूल्वोः ॥ २८ ॥ उन्योर्ग्रः ॥ २९ ॥ कृधान्ये ॥ ३० ॥ यज्ञे समि स्तुवः ॥ ३१ ॥ प्रेस्त्रोयज्ञे ॥ ३२ ॥ प्रथने वावशब्दे ॥ ३३ ॥ छन्दो नाम्नि च ॥ ३४ ॥ उदि ग्रहः ॥ ३५ ॥ समि मुष्टौ ॥ ३६ ॥ परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ॥ ३७ ॥ परावनुपात्यय इणः ॥ ३८ ॥ व्युपयोः शेतेः पर्य्याये ॥ ३९ ॥ हस्तादाने चेरस्तेये ॥ ४० ॥ निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः ॥ ४१ ॥ संघे चानौत्तराधर्य्ये ॥ ४२ ॥ कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम् ॥ ४३ ॥ अभिविधौ भाव इनुण् ॥ ४४ ॥ आक्रोशेवन्योर्ग्रः ॥ ४५ ॥ प्रे लिप्सायाम् ॥ ४६ ॥ परौ यज्ञे ॥ ४७ ॥ नौ वृ धान्ये ॥ ४८ ॥ उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः ॥ ४९ ॥ विभाषा ङ्किरुप्लवोः ॥ ५० ॥ अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्धे ॥ ५१ ॥ प्रे वणिजाम् ॥ ५२ ॥ रश्मौ च ॥ ५३ ॥ वृणोतेराच्छादने ॥ ५४ ॥ परौ भुवोवज्ञाने ॥ ५५ ॥ एरच् ॥ ५६ ॥ ऋदोरप् ॥ ५७ ॥ ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ॥ ५८ ॥ उपसर्गे दः ॥ ५९ ॥ नौ ण च ॥ ६० ॥ व्यधजपोरनुपसर्गे ॥ ६१ ॥ स्वनहसोर्वा ॥ ६२ ॥ यमः समुपनिविषु च ॥ ६३ ॥ नौ गदनदपठस्वनः ॥ ६४ ॥ क्वणो वीणायाञ्च ॥ ६५ ॥ नित्यं पणः परिमाणे ॥ ६६ ॥ मदोऽनुपसर्गे ॥ ६७ ॥ प्रमदसम्मदौ हर्षे ॥ ६८ ॥ समुदोरजः पशुषु ॥ ६९ ॥

अक्षेषु ग्लहः ॥ ७० ॥ प्रजने सर्तेः ॥ ७१ ॥ ह्वः सम्प्रसारणञ्च न्यभ्युपविषु
॥ ७२ ॥ आङि युद्धे ॥ ७३ ॥ निपानमाहावः ॥ ७४ ॥ भावेऽनुपसर्गस्य ॥ ७५ ॥
हनश्च वधः ॥ ७६ ॥ मूर्त्तौ घनः ॥ ७७ ॥ अन्तर्घनो देशे ॥ ७८ ॥ अगारैक-
देशे प्रघणः प्रघाणश्च ॥ ७९ ॥ उद्घनोऽत्याधानम् ॥ ८० ॥ अपघनोऽङ्गम्
॥ ८१ ॥ करणेऽयोविद्रुषु ॥ ८२ ॥ स्तम्बे क च ॥ ८३ ॥ परौ घः ॥ ८४ ॥
उपघ्न आश्रये ॥ ८५ ॥ सङ्घोद्घौ गणप्रशंसयोः ॥ ८६ ॥ निघो निमितम्
॥ ८७ ॥ ड्वितः क्त्रिः ॥ ८८ ॥ ट्वितोऽथुच् ॥ ८९ ॥ यजयाचयतविच्छप्रच्छ-
रक्षो नङ् ॥ ९० ॥ स्वपो नन् ॥ ९१ ॥ उपसर्गे घोः किः ॥ ९२ ॥ कर्मण्य-
धिकरणे च ॥ ९३ ॥ स्त्रियां क्तिन् ॥ ९४ ॥ स्थागापापचो भावे ॥ ९५ ॥
मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः ॥ ९६ ॥ ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्त्तयश्च
॥ ९७ ॥ व्रजयजोर्भावे क्यप् ॥ ९८ ॥ सञ्ज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषु-
ञ्शीङ्भृञिणः ॥ ९९ ॥ कृञः श च ॥ १०० ॥ इच्छा ॥ १०१ ॥ अ प्रत्य-
यात् ॥ १०२ ॥ गुरोश्च हलः ॥ १०३ ॥ षिद्भिदादिभ्योऽङ् ॥ १०४ ॥ चि-
न्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ॥ १०५ ॥ आतश्चोपसर्गे ॥ १०६ ॥ ण्यासश्रन्थो युच्
॥ १०७ ॥ रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् ॥ १०८ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ १०९ ॥ विभाषाख्या-
नपरिप्रश्नयोरिञ्च ॥ ११० ॥ पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच् ॥ १११ ॥ आक्रो-
शे नञ्यनिः ॥ ११२ ॥ कृत्यल्युटो बहुलम् ॥ ११३ ॥ नपुंसके भावे क्तः
॥ ११४ ॥ ल्युट् च ॥ ११५ ॥ कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्त्तुः शरीरसुखम्
॥ ११६ ॥ करणाधिकरणयोश्च ॥ ११७ ॥ पुंसि सञ्ज्ञायां घः प्रायेण
॥ ११८ ॥ गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च ॥ ११९ ॥ अवे तृस्त्रोर्घञ्
॥ १२० ॥ हलश्च ॥ १२१ ॥ अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधाराश्च ॥ १२२ ॥
उदङ्कोऽनुदके ॥ १२३ ॥ जालमानायः ॥ १२४ ॥ खनो घ च ॥ १२५ ॥ ईष-
द्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ॥ १२६ ॥ कर्तृकर्मणोश्च भूकृञोः ॥ १२७ ॥
आतो युच् ॥ १२८ ॥ छन्दसि गत्यर्थेभ्यः ॥ १२९ ॥ अन्येभ्योऽपि दृश्यते
॥ १३० ॥ वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा ॥ १३१ ॥ आशंसायां भूतवच्च

॥ १३२ ॥ क्षिप्रवचने लृट् ॥ १३३ ॥ आशंसावचने लिङ् ॥ १३४ ॥ नानद्यतनवत्क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ॥ १३५ ॥ भविष्यति मर्यादावचनेऽवरस्मिन् ॥ १३६ ॥ कालविभागेचानहोरात्राणाम् ॥ १३७ ॥ परस्मिन्विभाषा ॥ १३८ ॥ लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ॥ १३९ ॥ भूते च ॥ १४० ॥ वोताप्योः ॥ १४१ ॥ गर्हायां लडपिजात्वोः ॥ १४२ ॥ विभाषाकथमि लिङ् च ॥ १४३ ॥ किं वृत्ते लिङ्लृटौ ॥ १४४ ॥ अनवक्लृप्त्यमर्षयोरकिंवृत्तेपि ॥ १४५ ॥ किङ्किलास्त्यर्थेषु लृट् ॥ १४६ ॥ जातुयदोर्लिङ् ॥ १४७ ॥ यच्चयत्रयोः ॥ १४८ ॥ गर्हायाञ्च ॥ १४९ ॥ चित्रीकरणे च ॥ १५० ॥ शेषे लृडयदौ ॥ १५१ ॥ उताप्योः समर्थयोर्लिङ् ॥ १५२ ॥ कामप्रवेदनेऽकच्चिति ॥ १५३ ॥ सम्भावनेऽलमिति चेत्सिद्धाप्रयोगे ॥ १५४ ॥ विभाषा धातौ सम्भावनवचने यदि ॥ १५५ ॥ हेतुहेतुमतोर्लिङ् ॥ १५६ ॥ इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ॥ १५७ ॥ समानकर्तृकेषु तुमुन् ॥ १५८ ॥ लिङ् च ॥ १५९ ॥ इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्त्तमाने ॥ १६० ॥ विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ॥ १६१ ॥ लोट् च ॥ १६२ ॥ प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ॥ १६३ ॥ लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके ॥ १६४ ॥ स्मे लोट् ॥ १६५ ॥ अधीष्टे च ॥ १६६ ॥ कालसमयवेलासु तुमुन् ॥ १६७ ॥ लिङ्यदि ॥ १६८ ॥ अर्हे कृत्यतृचश्च ॥ १६९ ॥ आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ॥ १७० ॥ कृत्याश्च ॥ १७१ शकि लिङ् च ॥ १७२ ॥ आशिषि लिङ्लोटौ ॥ १७३ ॥ क्तिच्क्तौ च सञ्ज्ञायाम् ॥ १७४ ॥ माङि लुङ् ॥ १७५ ॥ स्मोत्तरे लङ् च ॥ १७६ ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः ॥ १ ॥ क्रियासमभिहारे लोट् लोटोहिस्वौ वा च तध्वमोः ॥ २ ॥ समुच्चयेऽन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ यथाविध्यनुप्रयोगः पूर्वस्मिन् ॥ ४ ॥ समुच्चये सामान्यवचनस्य ॥ ५ ॥ छन्दसि लुङ्लङ्लिटः ॥ ६ ॥ लिङर्थे

*उणादयइर्ङ्गनिवासव्यधजपोस्थघनइच्छाद्दलङ्चवोताप्योर्विधि पोडश ।

लेट् ॥ ७ ॥ उपसंवादाशङ्कयोश्च ॥ ८ ॥ तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्क्ध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ॥ ९ ॥ प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै ॥ १० ॥ दृशे विख्ये च ॥ ११ ॥ शकि णमुल्कमुलौ ॥ १२ ॥ ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ॥ १३ ॥ कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः ॥ १४ ॥ अवचक्षे च ॥ १५ ॥ भावलक्षणे स्थेण्कृञ्वदिचरिहुतमिजनिभ्यस्तोसुन् ॥ १६ ॥ सृपितृदोः कसुन् ॥ १७ ॥ अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ॥ १८ ॥ उदीचां माङो व्यतीहारे ॥ १९ ॥ परावरयोगे च ॥ २० ॥ समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ॥ २१ ॥ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च ॥ २२ ॥ न यद्यनाकाङ्क्षे ॥ २३ ॥ विभाषाग्रेप्रथमपूर्वेषु ॥ २४ ॥ कर्मण्याक्रोशे कृञः खमुञ् ॥ २५ ॥ स्वादुमि णमुल् ॥ २६ ॥ अन्यथैवङ्कथमित्थंसुसिद्धाप्रयोगश्चेत् ॥ २७ ॥ यथातथयोरसूयाप्रतिवचने ॥ २८ ॥ कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये ॥ २९ ॥ यावति विन्दजीवोः ॥ ३० ॥ चर्मोदरयोः पूरेः ॥ ३१ ॥ वर्षप्रमाण ऊलोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ३२ ॥ चेले क्नोपेः ॥ ३३ ॥ निमूलसमूलयोः कषः ॥ ३४ ॥ शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः ॥ ३५ ॥ समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः ॥ ३६ ॥ करणे हनः ॥ ३७ ॥ स्नेहने पिषः ॥ ३८ ॥ हस्ते वर्तिग्रहोः ॥ ३९ ॥ स्वे पुषः ॥ ४० ॥ अधिकरणे बन्धः ॥ ४१ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ ४२ ॥ कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहोः ॥ ४३ ॥ ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ॥ ४४ ॥ उपमाने कर्मणि च ॥ ४५ ॥ कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः ॥ ४६ ॥ उपदंशस्तृतीयायाम् ॥ ४७ ॥ हिंसार्थानाञ्च समानकर्मकाणाम् ॥ ४८ ॥ सप्तम्याञ्चोपपीडरुधकर्षः ॥ ४९ ॥ समासत्तौ ॥ ५० ॥ प्रमाणे च ॥ ५१ ॥ अपादाने परीप्सायाम् ॥ ५२ ॥ द्वितीयायाञ्च ॥ ५३ ॥ स्वाङ्गेऽध्रुवे ॥ ५४ ॥ परिक्लिश्यमाने च ॥ ५५ ॥ विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ॥ ५६ ॥ अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु ॥ ५७ ॥ नाम्न्यादिशिग्रहोः ॥ ५८ ॥ अव्यये यथाभिप्रेताख्याने कृञः क्त्वाणमुलौ ॥ ५९ ॥ तिर्यच्यपवर्गे ॥ ६० ॥ स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः ॥ ६१ ॥ नाधार्थप्रत्यये च्व्यर्थे ॥ ६२ ॥ तूष्णीमि भुवः ॥ ६३ ॥ अन्वच्यानुलोम्ये ॥ ६४ ॥ शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन् ॥ ६५ ॥ पर्याप्तिवचने

ध्यैष्वलमर्थेषु ॥ ६६ ॥ कर्त्तरि कृत् ॥ ६७ ॥ भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा ॥ ६८ ॥ लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ॥ ६९ ॥ तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः ॥ ७० ॥ आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ॥ ७१ ॥ गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्य्यतिभ्यश्च ॥ ७२ ॥ दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने ॥ ७३ ॥ भीमादयोऽपादाने ॥ ७४ ॥ ताभ्यामन्यत्रोणादयः ॥ ७५ ॥ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः ॥ ७६ ॥ लस्य ॥ ७७ ॥ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिप्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् ॥ ७८ ॥ टित आत्मनेपदानां टेरे ॥ ७९ ॥ थासस्से ॥ ८० ॥ लिटस्तझयोरेशिरेच् ॥ ८१ ॥ परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ॥ ८२ ॥ विदो लटो वा ॥ ८३ ॥ ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः ॥ ८४ ॥ लोटो लङ्वत् ॥ ८५ ॥ एरुः ॥ ८६ ॥ सेर्ह्यपिच्च ॥ ८७ ॥ वा छन्दसि ॥ ८८ ॥ मेर्निः ॥ ८९ ॥ आमेतः ॥ ९० ॥ सवाभ्यां वामौ ॥ ९१ ॥ आडुत्तमस्य पिच्च ॥ ९२ ॥ एत ऐ ॥ ९३ ॥ लेटोऽडाटौ ॥ ९४ ॥ आत ऐ ॥ ९५ ॥ वैतोऽन्यत्र ॥ ९६ ॥ इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ॥ ९७ ॥ स उत्तमस्य ॥ ९८ ॥ नित्यं ङितः ॥ ९९ ॥ इतश्च ॥ १०० ॥ तस्थस्थमिपान्तान्तन्तामः ॥ १०१ ॥ लिङः सीयुट् ॥ १०२ ॥ यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च ॥ १०३ ॥ किदाशिषि ॥ १०४ ॥ झस्य रन् ॥ १०५ ॥ इटोऽत् ॥ १०६ ॥ सुट् तिथोः ॥ १०७ ॥ झेर्जुस् ॥ १०८ ॥ सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च ॥ १०९ ॥ आतः ॥ ११० ॥ लङः शाकटायनस्यैव ॥ १११ ॥ द्विषश्च ॥ ११२ ॥ तिङ्शित्सार्वधातुकम् ॥ ११३ ॥ आर्द्धधातुकं शेषः ॥ ११४ ॥ लिट् च ॥ ११५ ॥ लिङाशिषि ॥ ११६ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ११७ ॥ *

इति तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

तृतीयाध्यायः समाप्तः ॥

---

* धातुसम्बन्धसमानाधिकरणं स्वाङ्गं लिटस्तस्थस्थमिपां सप्तदश ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

ङ्याप्प्रातिपदिकात् ॥ १ ॥ स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्यांभ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसाम्ङ्योः सुप् ॥ २ ॥ स्त्रियाम् ॥ ३ ॥ अजाद्यतष्टाप् ॥ ४ ॥ ऋन्नेभ्यो ङीप् ॥ ५ ॥ उगितश्च ॥ ६ ॥ वनो र च ॥ ७ ॥ पादोऽन्यतरस्याम् ॥ ८ ॥ टाबृचि ॥ ९ ॥ न षट्स्वस्रादिभ्यः ॥ १० ॥ मनः ॥ ११ ॥ अनो बहुव्रीहेः ॥ १२ ॥ डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् ॥ १३ ॥ अनुपसर्जनात् ॥ १४ ॥ टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः ॥ १५ ॥ यञश्च ॥ १६ ॥ प्राचां ष्फस्तद्धितः ॥ १७ ॥ सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ॥ १८ ॥ कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च ॥ १९ ॥ वयसि प्रथमे ॥ २० ॥ द्विगोः ॥ २१ ॥ अपरिमाणविस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि ॥ २२ ॥ काण्डान्तात्क्षेत्रे ॥ २३ ॥ पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ॥ २४ ॥ बहुव्रीहेरूधसो ङीष् ॥ २५ ॥ सङ्ख्याव्ययादेर्ङीप् ॥ २६ ॥ दामहायनान्ताच्च ॥ २७ ॥ अन उपधालोपिनोऽन्यतरस्याम् ॥ २८ ॥ नित्यं सञ्ज्ञाछन्दसोः ॥ २९ ॥ केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ॥ ३० ॥ रात्रेश्चाजसौ ॥ ३१ ॥ अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् ॥ ३२ ॥ पत्युर्नो यज्ञसंयोगे ॥ ३३ ॥ विभाषा सपूर्वस्य ॥ ३४ ॥ नित्यं सपत्न्यादिषु ॥ ३५ ॥ पूतक्रतोरै च ॥ ३६ ॥ वृषाकप्यग्निकुसितकुसीदानामुदात्तः ॥ ३७ ॥ मनोरौ वा ॥ ३८ ॥ वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः ॥ ३९ ॥ अन्यतो ङीष् ॥ ४० ॥ षिद्गौरादिभ्यश्च ॥ ४१ ॥ जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु ॥ ४२ ॥ शोणात्प्राचाम् ॥ ४३ ॥ वोतो गुणवचनात् ॥ ४४ ॥ बह्वादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ नित्यं छन्दसि ॥ ४६ ॥ भुवश्च ॥ ४७ ॥ पुंयोगादाख्यायाम् ॥ ४८ ॥ इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्य

वयवनमातुलाचार्य्याणामानुक् ॥ ४९ ॥ क्रीतात्करणपूर्वात् ॥ ५० ॥ क्तादल्पाख्यायाम् ॥ ५१ ॥ बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् ॥ ५२ ॥ अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ॥ ५३ ॥ स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात् ॥ ५४ ॥ नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च ॥ ५५ ॥ न क्रोडादिबह्वचः ॥ ५६ ॥ सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च ॥ ५७ ॥ नखमुखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ५८ ॥ दीर्घजिह्वी च छन्दसि ॥ ५९ ॥ दिक्पूर्वपदान्ङीप् ॥ ६० ॥ वाहः ॥ ६१ ॥ सख्यशिश्वीति भाषायाम् ॥ ६२ ॥ जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ॥ ६३ ॥ पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तरपदाच्च ॥ ६४ ॥ इतो मनुष्यजातेः ॥ ६५ ॥ ऊङुतः ॥ ६६ ॥ बाह्वन्तात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ६७ ॥ पङ्गोश्च ॥ ६८ ॥ ऊरूत्तरपदादौपम्ये ॥ ६९ ॥ संहितशफलक्षणवामादेश्च ॥ ७० ॥ कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि ॥ ७१ ॥ सञ्ज्ञायाम् ॥ ७२ ॥ शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् ॥ ७३ ॥ यङश्चाप् ॥ ७४ ॥ आवट्याच्च ॥ ७५ ॥ तद्धिताः ॥ ७६ ॥ यूनस्तिः ॥ ७७ ॥ अणिञोरनार्षयोर्गुरूपोत्तमयोः ष्यङ् गोत्रे ॥ ७८ ॥ गोत्रावयवात् ॥ ७९ ॥ क्रौड्यादिभ्यश्च ॥ ८० ॥ दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रिकाण्ठेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ८१ ॥ समर्थानाम्प्रथमाद्वा ॥ ८२ ॥ प्राग्दीव्यतोऽण् ॥ ८३ ॥ अश्वपत्यादिभ्यश्च ॥ ८४ ॥ दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः ॥ ८५ ॥ उत्सादिभ्योऽञ् ॥ ८६ ॥ स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात् ॥ ८७ ॥ द्विगोर्लुगनपत्ये ॥ ८८ ॥ गोत्रे लुगचि ॥ ८९ ॥ यूनि लुक् ॥ ९० ॥ फक्फिञोरन्यतरस्याम् ॥ ९१ ॥ तस्यापत्यम् ॥ ९२ ॥ एको गोत्रे ॥ ९३ ॥ गोत्राद्यून्यस्त्रियाम् ॥ ९४ ॥ अत इञ् ॥ ९५ ॥ बाह्वादिभ्यश्च ॥ ९६ ॥ सुधातुरकङ् च ॥ ९७ ॥ गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ् ॥ ९८ ॥ नडादिभ्यः फक् ॥ ९९ ॥ हरितादिभ्यो ञः ॥ १०० ॥ यञिञोश्च ॥ १०१ ॥ शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्साग्रायणेषु ॥ १०२ ॥ द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम् ॥ १०३ ॥ अनृष्यानन्तर्ये बिदादिभ्योऽञ् ॥ १०४ ॥ गर्गादिभ्यो यञ् ॥ १०५ ॥ मधुबभ्र्वोर्ब्राह्मणकौशिकयोः ॥ १०६ ॥ कपिबोधादाङ्गिरसे ॥ १०७ ॥ वतण्डाच्च ॥ १०८ ॥ लुक् स्त्रियाम् ॥ १०९ ॥ अश्वादिभ्यः फञ् ॥ ११० ॥ भर्गात् त्रैगर्ते ॥ १११ ॥

शिवादिभ्योऽण् ॥ ११२ ॥ ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च ॥ ११४ ॥ मातुरुत्सङ्ख्यासम्भद्रपूर्वायाः ॥ ११५ ॥ कन्यायाः कनीन च ॥ ११६ ॥ विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्सभरद्वाजात्रिषु ॥ ११७ ॥ पीलाया वा ॥ ११८ ॥ ढक् च मण्डूकात् ॥ ११९ ॥ स्त्रीभ्यो ढक् ॥ १२० ॥ द्व्यचः ॥ १२१ ॥ इतश्चानिञः ॥ १२२ ॥ शुभ्रादिभ्यश्च ॥ १२३ ॥ विकर्णकुषीतकात्काश्यपे ॥ १२४ ॥ भ्रुवो वुक् च ॥ १२५ ॥ कल्याण्यादीनामिनङ् च ॥ १२६ ॥ कुलटाया वा ॥ १२७ ॥ चटकाया ऐरक् ॥ १२८ ॥ गोधाया ढ्रक् ॥ १२९ ॥ आरगुदीचाम् ॥ १३० ॥ क्षुद्राभ्यो वा ॥ १३१ ॥ पितृष्वसुश्छण् ॥ १३२ ॥ ढकि लोपः ॥ १३३ ॥ मातृष्वसुश्च ॥ १३४ ॥ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् ॥ १३५ ॥ गृष्ट्यादिभ्यश्च ॥ १३६ ॥ राजश्वशुराद्यत् ॥ १३७ ॥ क्षत्राद् घः ॥ १३८ ॥ कुलात्खः ॥ १३९ ॥ अपूर्वपदादन्यतरस्यां यड्ढकञौ ॥ १४० ॥ महाकुलादञ्खञौ ॥ १४१ ॥ दुष्कुलाड्ढक् ॥ १४२ ॥ स्वसुश्छः ॥ १४३ ॥ भ्रातुर्व्यच्च ॥ १४४ ॥ व्यन्सपत्ने ॥ १४५ ॥ रेवत्यादिभ्यष्ठक् ॥ १४६ ॥ गोत्रस्त्रियाः कुत्सने ण च ॥ १४७ ॥ वृद्धाट्ठक् सौवीरेषु बहुलम् ॥ १४८ ॥ फेश्छ च ॥ १४९ ॥ फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ ॥ १५० ॥ कुर्वादिभ्यो ण्यः ॥ १५१ ॥ सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च ॥ १५२ ॥ उदीचामिञ् ॥ १५३ ॥ तिकादिभ्यः फिञ् ॥ १५४ ॥ कौशल्यकार्मार्याभ्याञ्च ॥ १५५ ॥ अणो द्व्यचः ॥ १५६ ॥ उदीचां वृद्धादगोत्रात् ॥ १५७ ॥ वाकिनादीनां कुक् च ॥ १५८ ॥ पुत्रान्तादन्यतरस्याम् ॥ १५९ ॥ प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम् ॥ १६० ॥ मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च ॥ १६१ ॥ अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम् ॥ १६२ ॥ जीवति तु वंश्ये युवा ॥ १६३ ॥ भ्रातरि च ज्यायसि ॥ १६४ ॥ वान्यस्मिन् सपिण्डे स्थविरतरे जीवति ॥ १६५ ॥ जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ् ॥ १६६ ॥ साल्वेयगान्धारिभ्यां च ॥ १६७ ॥ द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् ॥ १६८ ॥ वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ञ्यङ् ॥ १६९ ॥ कुरुनादिभ्यो ण्यः ॥ १७० ॥ साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादिञ् ॥ १७१ ॥

---

* अत्र वृद्धस्य च पूजायाम्, यूनश्च कुत्सायामिति द्वे वार्त्तिके सूत्रपाठे कैश्चित्प्रक्षिप्ते

तद्राजः ॥ १७२ ॥ कम्बोजाल्लुक् ॥ १७३ ॥ स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च ॥
॥ १७४ ॥ अतश्च ॥ १७५ ॥ न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः ॥ १७६ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

तेन रक्तं रागात् ॥ १ ॥ लाक्षारोचनाट्ठक् ॥ २ ॥ नक्षत्रेण युक्तः कालः ॥ ३ ॥ लुबविशेषे ॥ ४ ॥ सञ्ज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम् ॥ ५ ॥ द्वन्द्वाच्छः ॥ ॥ ६ ॥ दृष्टं साम ॥ ७ ॥ कलेर्ढक् ॥ ८ ॥ वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ॥ ९ ॥ परिवृतो रथः ॥ १० ॥ पाण्डुकम्बलादिनिः ॥ ११ ॥ द्वैपवैयाघ्रादञ् ॥ १२ ॥ कौमारापूर्ववचने ॥ १३ ॥ तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः ॥ १४ ॥ स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते ॥ १५ ॥ संस्कृतं भक्षाः ॥ १६ ॥ शूलोखाद्यत् ॥ १७ ॥ दध्नष्ठक् ॥ १८ ॥ उदश्वितोऽन्यतरस्याम् ॥ १९ ॥ क्षीराड्ढञ् ॥ २० ॥ सास्मिन्पौर्णमासीति सञ्ज्ञायाम् । २१ ॥ आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् ॥ २२ ॥ विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यः ॥ २३ ॥ सास्य देवता ॥ २४ ॥ कस्येत् ॥ २५ ॥ शुक्राद् घन् ॥ २६ ॥ अपोनप्त्रपां नप्तृभ्यां घः ॥ २७ ॥ छ च ॥ २८ ॥ महेन्द्राद् घाणौ च ॥ २९ ॥ सोमाट् ट्यण् ॥ ३० ॥ वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ॥ ३१ ॥ द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च ॥ ३२ ॥ अग्नेर्ढक् ॥ ३३ ॥ कालेभ्यो भववत् ॥ ३४ ॥ महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् ॥ ३५ ॥ पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ॥ ३६ ॥ तस्य समूहः ॥ ३७ ॥ भिक्षादिभ्योऽण् ॥ ३८ ॥ गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ् ॥ ३९ ॥ केदाराद्यञ्च ॥ ४० ॥ ठञ् कवचिनश्च ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत् ॥ ४२ ॥ ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् ॥ ४३ ॥ अनुदात्तादेरञ् ॥ ४४ ॥ खण्डिकादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ चरणेभ्यो धर्मवत् ॥ ४६ ॥ अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् ॥ ४७ ॥ केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् ॥ ४८ ॥

* ङ्याप्प्रादिगोः शिवगौरादिवाहो वैवयज्ञियमित्रोढर्भनो महाकुलान्मनो औ.नी षोडश ।

पाशादिभ्यो यः ॥ ४९ ॥ खलगोरथात् ॥ ५० ॥ इनित्रकठ्यचश्च ॥ ५१ ॥ विषयो देशे ॥ ५२ ॥ राजन्यादिभ्यो वुञ् ॥ ५३ ॥ भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ ॥ ५४ ॥ सोऽस्यादिरितिच्छन्दसः प्रगाथेषु ॥ ५५ ॥ सङ्ग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः ॥ ५६ ॥ तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः ॥ ५७ ॥ घञः सास्यां क्रियेति ञः ॥ ५८ ॥ तदधीते तद्वेद ॥ ५९ ॥ क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् ॥ ६० ॥ क्रमादिभ्यो वुन् ॥ ६१ ॥ अनुब्राह्मणादिनिः ॥ ६२ ॥ वसन्तादिभ्यष्ठक् ॥ ६३ ॥ प्रोक्ताल्लुक् ॥ ६४ ॥ सूत्राच्च कोपधात् ॥ ६५ ॥ छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि ॥ ६६ ॥ तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि ॥ ६७ ॥ तेन निर्वृत्तम् ॥ ६८ ॥ तस्य निवासः ॥ ६९ ॥ अदूरभवश्च ॥ ७० ॥ ओरञ् ॥ ७१ ॥ मतोश्च बह्वजङ्गात् ॥ ७२ ॥ बह्वचः कूपेषु ॥ ७३ ॥ उदक्च विपाशः ॥ ७४ ॥ सङ्कलादिभ्यश्च ॥ ७५ ॥ स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु ॥ ७६ ॥ सुवास्त्वादिभ्योऽण् ॥ ७७ ॥ रोणी ॥ ७८ ॥ कोपधाच्च ॥ ७९ ॥ वुञ्छण्कठजिलसेनिरढञ्ण्ययफक्फिञिञ्ञ्यकक्ठकोरीहणकृशाश्वर्श्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसङ्काशबलपक्षकर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः ॥ ८० ॥ जनपदे लुप् ॥ ८१ ॥ वरणादिभ्यश्च ॥ ८२ ॥ शर्कराया वा ॥ ८३ ॥ ठक्छौ च ॥ ८४ ॥ नद्यां मतुप् ॥ ८५ ॥ मध्वादिभ्यश्च ॥ ८६ ॥ कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् ॥ ८७ ॥ नडशादाड्ड्वलच् ॥ ८८ ॥ शिखाया वलच् ॥ ८९ ॥ उत्करादिभ्यश्छः ॥ ९० ॥ नडादीनां कुक् च ॥ ९१ ॥ शेषे ॥ ९२ ॥ राष्ट्रावारपाराद् घखौ ॥ ९३ ॥ ग्रामाद्यखञौ ॥ ९४ ॥ कत्र्यादिभ्यो ढकञ् ॥ ९५ ॥ कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु ॥ ९६ ॥ नद्यादिभ्यो ढक् ॥ ९७ ॥ दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् ॥ ९८ ॥ कापिश्याष्फक् ॥ ९९ ॥ रङ्कोरमनुष्येऽण् च ॥ १०० ॥ द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत् ॥ १०१ ॥ कन्थायाष्ठक् ॥ १०२ ॥ वर्णौ वुक् ॥ १०३ ॥ अव्ययात्त्यप् ॥ १०४ ॥ ऐषमोह्यःश्वसोऽन्यतरस्याम् ॥ १०५ ॥ तीररूप्योत्तरपदादञ्ञौ ॥ १०६ ॥ दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः ॥ १०७ ॥ मद्रेभ्योऽञ् ॥ १०८ ॥ उदीच्यग्रामाच्च बह्वचोऽन्तोदात्तात् ॥ १०९ ॥ प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् ॥ ११० ॥ कण्वादिभ्यो गोत्रे ॥ १११

इञश्च ॥ ११२ ॥ न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु ॥ ११३ ॥ वृद्धाच्छः ॥ ११४ ॥ भवतष्ठक्छसौ ॥ ११५ ॥ काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ ॥ ११६ ॥ वाहीकग्रामेभ्यश्च ॥ ११७ ॥ विभाषोशीनरेषु ॥ ११८ ॥ ओर्देशे ठञ् ॥ ११९ ॥ वृद्धात्प्राचाम् ॥ १२० ॥ धन्वयोपधाद्वुञ् ॥ १२१ ॥ प्रस्थपुरवहान्ताच्च ॥ १२२ ॥ रोपधेतोः प्राचाम् ॥ १२३ ॥ जनपदतदवध्योश्च ॥ १२४ ॥ अवृद्धादपि बहुवचनविषयात् ॥ १२५ ॥ कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् ॥ १२६ ॥ धूमादिभ्यश्च ॥ १२७ ॥ नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः ॥ १२८ ॥ अरण्यान्मनुष्ये ॥ १२९ ॥ विभाषा कुरुयुगन्धराभ्याम् ॥ १३० ॥ मद्रवृज्योः कन् ॥ १३१ ॥ कोपधादण् ॥ १३२ ॥ कच्छादिभ्यश्च ॥ १३३ ॥ मनुष्यतत्स्थयोर्वुञ् ॥ १३४ ॥ अपदातौ साल्वात् ॥ १३५ ॥ गोयवाग्वोश्च ॥ १३६ ॥ गर्तोत्तरपदाच्छः ॥ १३७ ॥ गहादिभ्यश्च ॥ १३८ ॥ प्राचां कटादेः ॥ १३९ ॥ राज्ञः क च ॥ १४० ॥ वृद्धादकेकान्तखोपधात् ॥ १४१ ॥ कन्थापलदनगरग्रामह्रदोत्तरपदात् ॥ १४२ ॥ पर्वताच्च ॥ १४३ ॥ विभाषाऽमनुष्ये ॥ १४४ ॥ कृकणपर्णाद् भारद्वाजे ॥ १४५ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च ॥ १ ॥ तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ ॥ २ ॥ तवकममकावेकवचने ॥ ३ ॥ अर्द्धाद्यत् ॥ ४ ॥ परावराधमोत्तमपूर्वाच्च ॥ ५ ॥ दिक्पूर्वपदाट्ठञ्च ॥ ६ ॥ ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ ॥ ७ ॥ मध्यान्मः ॥ ८ ॥ असाम्प्रतिके ॥ ९ ॥ द्वीपादनुसमुद्रं यञ् ॥ १० ॥ कालाट्ठञ् ॥ ११ ॥ श्राद्धे शरदः ॥ १२ ॥ विभाषा रोगातपयोः ॥ १३ ॥ निशाप्रदोषाभ्याञ्च ॥ १४ ॥ श्वसस्तुट् च ॥ १५ ॥ सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण् ॥ १६ ॥ प्रावृष एण्यः ॥ १७ ॥ वर्षाभ्यष्ठक् ॥ १८ ॥ छन्दसि ठञ् ॥ १९ ॥ वसन्ताच्च ॥ २० ॥

---

* तेन सार्द्धमनेनञ्कमादिभ्यो जनपदेषुप्रागपाग्धन्ववृद्धात्पथ्य ॥

हेमन्ताच्च ॥ २१ ॥ सर्वत्राणि च तलोपश्च ॥ २२ ॥ सायंचिरम्प्राह्णेप्रगे-
व्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च ॥ २३ ॥ विभाषा पूर्वाह्णापराह्णाभ्याम् ॥ २४ ॥ तत्र
जातः ॥ २५ ॥ प्रावृषष्ठप् ॥ २६ ॥ संज्ञायां शरदो वुञ् ॥ २७ ॥ पूर्वाह्णापराह्णा-
र्द्रामूलप्रदोषावस्कराद्वुन् ॥ २८ ॥ पथः पन्थ च ॥ २९ ॥ अमावास्याया वा
॥ ३० ॥ अ च ॥ ३१ ॥ सिन्ध्वपकराभ्यां कन् ॥ ३२ ॥ अणञौ च ॥ ३३ ॥
श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक् ॥ ३४ ॥
स्थानान्तगोशालखरशालाच्च ॥ ३५ ॥ वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो वा
॥ ३६ ॥ नक्षत्रेभ्यो बहुलम् ॥ ३७ ॥ कृतलब्धक्रीतकुशलाः ॥ ३८ ॥ प्रायभवः
॥ ३९ ॥ उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् ॥ ४० ॥ सम्भूते ॥ ४१ ॥ कोशाड्ढञ् ॥ ४२ ॥
कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु ॥ ४३ ॥ उप्ते च ॥ ४४ ॥ आश्वयुज्या वुञ् च ॥ ४५ ॥
ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम् ॥ ४६ ॥ देयमृणे ॥ ४७ ॥ कलाप्यश्वत्थयवबुसा-
द्वुन् ॥ ४८ ॥ ग्रीष्मावरसमाद्वुञ् ॥ ४९ ॥ संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ् च ॥ ५० ॥
व्याहरति मृगः ॥ ५१ ॥ तदस्य सोढम् ॥ ५२ ॥ तत्र भवः ॥ ५३ ॥ दिगादि-
भ्यो यत् ॥ ५४ ॥ शरीरावयवाच्च ॥ ५५ ॥ दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ्
॥ ५६ ॥ ग्रीवाभ्योऽण् च ॥ ५७ ॥ गम्भीराञ्ञ्यः ॥ ५८ ॥ अव्ययीभावाच्च
॥ ५९ ॥ अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् ॥ ६० ॥ ग्रामात् पर्यनुपूर्वात् ॥ ६१ ॥ जिह्वा-
मूलाङ्गुलेश्छः ॥ ६२ ॥ वर्गान्ताच्च ॥ ६३ ॥ अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम् ॥ ६४ ॥
कर्णललाटात् कनलङ्कारे ॥ ६५ ॥ तस्य व्याख्यान इति च व्याख्यातव्यनाम्नः
॥ ६६ ॥ बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ् ॥ ६७ ॥ क्रतुयज्ञेभ्यश्च ॥ ६८ ॥ अध्यायेष्वेवर्षेः ॥ ६९ ॥
पौरोडाशपुरोडाशात् ष्ठन् ॥ ७० ॥ छन्दसो यदणौ ॥ ७१ ॥ द्व्यजृद्ब्राह्मणर्क्प्रथमा-
ध्वरपुरश्चरणनामाख्याताट्ठक् ॥ ७२ ॥ अण् ऋगयनादिभ्यः ॥ ७३ ॥ तत
आगतः ॥ ७४ ॥ ठगायस्थानेभ्यः ॥ ७५ ॥ शुण्डिकादिभ्योऽण् ॥ ७६ ॥
विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ् ॥ ७७ ॥ ऋतष्ठञ् ॥ ७८ ॥ पितुर्यच्च ॥ ७९ ॥ गोत्रा-
दङ्कवत् ॥ ८० ॥ हेतुमनुष्येभ्योऽन्यतरस्यां रूप्यः ॥ ८१ ॥ मयट् च ॥ ८२ ॥
प्रभवति ॥ ८३ ॥ विदूराञ्ञ्यः ॥ ८४ ॥ तद्गच्छति पथिदूतयोः ॥ ८५ ॥ अभिनि-

क्रामति द्वारम् ॥ ८६ ॥ अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ॥ ८७ । शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः ॥ ८८ ॥ सोऽस्य निवासः ॥ ८९ ॥ अभिजनश्च ॥ ९० ॥ आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते ॥ ९१ ॥ शण्डिकादिभ्यो ञ्यः ॥ ९२ ॥ सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ ॥ ९३ ॥ तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यकः ॥ ९४ ॥ भक्तिः ॥ ९५ ॥ अचित्ताददेशकालाट्ठक् ॥ ९६ ॥ महाराजाट्ठञ् ॥ ९७ ॥ वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् ॥ ९८ ॥ गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ् ॥ ९९ ॥ जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जनपदेन समानशब्दानां बहुवचने ॥ १०० ॥ तेन प्रोक्तम् ॥ १०१ ॥ तित्तिरिवरतन्तुखण्डिकोखाच्छण् ॥ १०२ ॥ काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां णिनिः ॥ १०३ ॥ कलापिवैशंपायनान्तेवासिभ्यश्च ॥ १०४ ॥ पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु ॥ १०५ ॥ शौनकादिभ्यश्छन्दसि ॥ १०६ ॥ कठचरकाल्लुक् ॥ १०७ ॥ कलापिनोऽण् ॥ १०८ ॥ छगलिनो ढिनुक् ॥ १०९ ॥ पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः ॥ ११० ॥ कर्मन्दकृशाश्वादिनिः ॥ १११ ॥ तेनैकदिक् ॥ ११२ ॥ तसिश्च ॥ ११३ ॥ उरसो यच्च ॥ ११४ ॥ उपज्ञाते ॥ ११५ ॥ कृते ग्रंथे ॥ ११६ ॥ संज्ञायाम् ॥ ११७ ॥ कुलालादिभ्यो वुञ् ॥ ११८ ॥ क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ् ॥ ११९ ॥ तस्येदम् ॥ १२० ॥ रथाद्यत् ॥ १२१ ॥ पत्रपूर्वादञ् ॥ १२२ ॥ पत्राध्वर्युपरिषदश्च ॥ १२३ ॥ हलसीराट्ठक् ॥ १२४ ॥ द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः ॥ १२५ ॥ गोत्रचरणाद्वुञ् ॥ १२६ ॥ संघाङ्कलक्षणेष्वञ्यञिञामण् ॥ १२७ ॥ शाकलाद्वा ॥ १२८ ॥ छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबह्वृचनटाञ्ञ्यः ॥ १२९ ॥ न दण्डमाणवान्तेवासिषु ॥ १३० ॥ रैवतिकादिभ्यश्छः ॥ १३१ ॥ * तस्य विकारः ॥ १३२ ॥ अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः ॥ १३३ ॥ बिल्वादिभ्योऽण् ॥ १३४ कोपधाच्च ॥ १३५ ॥ त्रपुजतुनोः षुक् ॥ १३६ ॥ ओरञ् ॥ १३७ ॥ अनुदात्तादेश्च ॥ १३८ ॥ पलाशादिभ्यो वा ॥ १३९ ॥ शम्याष्ट्लञ् ॥ १४० ॥ मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः ॥ १४१ ॥ नित्यं वृद्धशरा-

---

* अत्रापि कौपिञ्जलहास्तिपदादण्, आथर्वणिकस्येकलोपश्चेति द्वे वार्त्तिके कैश्चित्सूत्रपाठे प्रक्षिप्ते ।

दिभ्यः ॥ १४२ ॥ गोश्च पुरीषे ॥ १४३ ॥ पिष्टाच्च ॥ १४४ ॥ संज्ञायां कन् ॥ १४५ ॥ व्रीहेः पुरोडाशे ॥ १४६ ॥ असंज्ञायां तिलयवाभ्याम् ॥ १४७ ॥ द्व्यचश्छन्दसि ॥ १४८ ॥ नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात् ॥ १४९ ॥ तालादिभ्योऽण् ॥ १५० ॥ जातरूपेभ्यः परिमाणे ॥ १५१ ॥ प्राणिरजतादिभ्योऽञ् ॥ १५२ ॥ ञितश्च तत्प्रत्ययात् ॥ १५३ ॥ क्रीतवत्परिमाणात् ॥ १५४ ॥ उष्ट्राद्वुञ् ॥ १५५ ॥ उमोर्णयोर्वा ॥ १५६ ॥ एण्या ढञ् ॥ १५७ ॥ गोपयसोर्यत् ॥ १५८ ॥ द्रोश्च ॥ १५९ ॥ माने वयः ॥ १६० ॥ फले लुक् ॥ १६१ ॥ प्लक्षादिभ्योऽण् ॥ १६२ ॥ जम्ब्वा वा ॥ १६३ ॥ लुप् च ॥ १६४ ॥ हरीतक्यादिभ्यश्च ॥ १६५ ॥ कंसीयपरशव्ययोर्यञञौ लुक् च ॥ १६६ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

प्राग्वहतेष्ठक् ॥ १ ॥ तेन दीव्यति खनति जयति जितम् ॥ २ ॥ संस्कृतम् ॥ ३ ॥ कुलत्थकोपधादण् ॥ ४ ॥ तरति ॥ ५ ॥ गोपुच्छाट्ठञ् ॥ ६ ॥ नौद्व्यचष्ठन् ॥ ७ चरति ॥ ८ ॥ आकर्षात् ष्ठल् ॥ ९ ॥ पर्पादिभ्यः ष्ठन् ॥ १० ॥ श्वगणाट्ठञ् च ॥ ११ ॥ वेतनादिभ्यो जीवति ॥ १२ ॥ वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् ॥ १३ ॥ आयुधाच्छ च ॥ १४ ॥ हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ॥ १५ ॥ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ॥ १६ ॥ विभाषा विवधात् ॥ १७ ॥ अण् कुटिलिकायाः ॥ १८ ॥ निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः ॥ १९ ॥ त्रेर्मम् नित्यम् ॥ २० ॥ अपमित्ययाचिताभ्यां कक्कनौ ॥ २१ ॥ संसृष्टे ॥ २२ ॥ चूर्णादिनिः ॥ २३ ॥ लवणाल्लुक् ॥ २४ ॥ मुद्गादण् ॥ २५ ॥ व्यञ्जनैरुपसिक्ते ॥ २६ ॥ ओजः सहोम्भसा वर्त्तते ॥ २७ ॥ तत्प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् ॥ २८ ॥ परिमुखञ्च ॥ २९ ॥ प्रयच्छति गर्ह्यम् ॥ ३० ॥ कुसीददशैकादशात् ष्ठन्ष्ठचौ ॥ ३१ ॥ उञ्छति ॥ ३२ ॥ रक्षति ॥ ३३ ॥ शब्ददर्दुरङ्करोति ॥ ३४ ॥ पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति ॥ ३५ ॥ परिपन्थञ्च तिष्ठति ॥ ३६ ॥ माथोत्तरपदपदव्यनुपदन्धावति ॥ ३७ ॥ आक्रन्दाट्ठञ्च ॥ ३८ ॥ पदोत्तरपदं

* युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च ... (footnote)

गृह्णाति ॥ ३९ ॥ प्रतिकण्ठार्थललामं च ॥ ४० ॥ धर्मञ्चरति ॥ ४१ ॥ प्रतिपथमेति ठंश्च ॥ ४२ ॥ समवायान्त्समवैति ॥ ४३ ॥ परिषदो ण्यः ॥ ४४ ॥ सेनाया वा ॥ ४५ ॥ संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति ॥ ४६ ॥ तस्य धर्म्यम् ॥ ४७ ॥ अण्महिष्यादिभ्यः ॥ ४८ ॥ ऋतोऽञ् ॥ ४९ ॥ अवक्रयः ॥ ५० ॥ तदस्य पण्यम् ॥ ५१ ॥ लवणाट्ठञ् ॥ ५२ ॥ किसरादिभ्यष्ठन् ॥ ५३ ॥ शलालुनोऽन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ शिल्पम् ॥ ५५ ॥ मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥ प्रहरणम् ॥ ५७ ॥ परश्वधाट्ठञ्च ॥ ५८ ॥ शक्तियष्ट्योरीकक् ॥ ५९ ॥ अस्तिनास्तिदिष्टं मतिः ॥ ६० ॥ शीलम् ॥ ६१ ॥ छत्रादिभ्यो णः ॥ ६२ ॥ कर्माध्ययने वृत्तम् ॥ ६३ ॥ बह्वच्पूर्वपदाट्ठच् ॥ ६४ ॥ हितं भक्षाः ॥ ६५ ॥ तदस्मै दीयते नियुक्तम् ॥ ६६ ॥ श्राणामांसौदनाट्टिठन् ॥ ६७ ॥ भक्तादणन्यतरस्याम् ॥ ६८ ॥ तत्र नियुक्तः ॥ ६९ ॥ अगारान्ताट्ठन् ॥ ७० ॥ अध्यायिन्यदेशकालात् ॥ ७१ ॥ कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु व्यवहरति ॥ ७२ ॥ निकटे वसति ॥ ७३ ॥ आवसथात् ष्ठल् ॥ ७४ ॥ प्राग्घिताद्यत् ॥ ७५ ॥ तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् ॥ ७६ ॥ धुरो यड्ढकौ ॥ ७७ ॥ खः सर्वधुरात् ॥ ७८ ॥ एकधुराल्लुक् च ॥ ७९ ॥ शकटादण् ॥ ८० ॥ हलसीराट्ठक् ॥ ८१ ॥ संज्ञायां जन्या ॥ ८२ ॥ विध्यत्यधनुषा ॥ ८३ ॥ धनगणं लब्धा ॥ ८४ ॥ अन्नाण् णः ॥ ८५ ॥ वशं गतः ॥ ८६ ॥ पदमस्मिन् दृश्यम् ॥ ८७ ॥ मूलमस्याबर्हि ॥ ८८ ॥ संज्ञायां धेनुष्या ॥ ८९ ॥ गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः ॥ ९० ॥ नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु ॥ ९१ ॥ धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते ॥ ९२ ॥ छन्दसो निर्मिते ॥ ९३ ॥ उरसोऽण् च ॥ ९४ ॥ हृदयस्य प्रियः ॥ ९५ ॥ बन्धने चर्षौ ॥ ९६ ॥ मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु ॥ ९७ ॥ तत्र साधुः ॥ ९८ ॥ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ॥ ९९ ॥ भक्ताण् णः ॥ १०० ॥ परिषदो ण्यः ॥ १०१ ॥ कथादिभ्यष्ठक् ॥ १०२ ॥ गुडादिभ्यष्ठञ् ॥ १०३ ॥ पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् ॥ १०४ ॥ सभाया यः ॥ १०५ ॥ ढश्छन्दसि ॥ १०६ ॥ समानतीर्थे वासी ॥ १०७ ॥ समानोदरे शयित ओ

चोदात्तः ॥ १०८ ॥ सोदराद्यः ॥ १०९ ॥ भवेश्छन्दसि ॥ ११० ॥ पाथोनदीभ्यां ड्यण् ॥ १११ ॥ वेशन्तहिमवद्भ्यामण् ॥ ११२ ॥ स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ ॥ ११३ ॥ सगर्भसयूथसनुताद्यन् ॥ ११४ ॥ तुग्राद् घन् ॥ ११५ ॥ अग्राद्यत् ॥ ११६ ॥ घच्छौ च ॥ ११७ ॥ समुद्राभ्राद् घः ॥ ११८ ॥ बर्हिषि दत्तम् ॥ ११९ ॥ दूतस्य भागकर्मणी ॥ १२० ॥ रक्षोयातूनां हननी ॥ १२१ ॥ रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये ॥ १२२ ॥ असुरस्य स्वम् ॥ १२३ ॥ मायायामण् ॥ १२४ ॥ तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः ॥ १२५ ॥ अश्विमानण् ॥ १२६ ॥ वयस्यासु मूर्ध्नो मतुप् ॥ १२७ ॥ मत्वर्थे मासतन्वोः ॥ १२८ ॥ मधोर्ञ च ॥ १२९ ॥ ओजसोऽहनि यत्खौ ॥ १३० ॥ वेशोयशआदेर्भगाद्यल् ॥ १३१ ॥ ख च ॥ १३२ ॥ पूर्वैः कृतमिनियौ च ॥ १३३ ॥ अद्भिः संस्कृतम् ॥ १३४ ॥ सहस्रेण सम्मितौ घः ॥ १३५ ॥ मतौ च ॥ १३६ ॥ सोममर्हति यः ॥ १३७ ॥ मये च ॥ १३८ ॥ मधोः ॥ १३९ ॥ वसोः समूहे च ॥ १४० ॥ नक्षत्राद् घः ॥ १४१ ॥ सर्वदेवात्तातिल् ॥ १४२ ॥ शिवशमरिष्टस्य करे ॥ १४३ ॥ भावे च ॥ १४४ ॥ *

इति चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

इति चतुर्थाध्यायः समाप्तः ॥

---

* प्राग्वहतेरपमित्य धर्म शीलं हलपरिषदो रक्षो नक्षत्राच्चत्वारि ।

अथ पञ्चमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

प्राक् क्रीताच्छः ॥ १ ॥ उगवादिभ्यो यत् ॥ २ ॥ कम्बलाच्च संज्ञायाम् ॥ ३ ॥ विभाषा हविरपूपादिभ्यः ॥ ४ ॥ तस्मै हितम् ॥ ५ ॥ शरीरावयवाद्यत् ॥ ६ ॥ खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च ॥ ७ ॥ अजाविभ्यां थ्यन् ॥ ८ ॥ आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् खः ॥ ९ ॥ सर्वपुरुषाभ्यां णढञौ ॥ १० ॥ माणवचरकाभ्यां खञ् ॥ ११ ॥ तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ ॥ १२ ॥ छदिरुपधिबलेर्ढञ् ॥ १३ ॥ ऋषभोपानहोर्ञ्यः ॥ १४ ॥ चर्मणोऽञ् ॥ १५ ॥ तदस्य तदस्मिन्स्यादिति ॥ १६ ॥ परिखाया ढञ् ॥ १७ ॥ प्राग्वतेष्ठञ् ॥ १८ ॥ आर्हादगोपुच्छसङ्ख्यापरिमाणाट्ठक् ॥ १९ ॥ असमासे निष्कादिभ्यः ॥ २० ॥ शताच्च ठन्यतावशते ॥ २१ ॥ संख्याया अतिशदन्तायाः कन् ॥ २२ ॥ वतोरिड् वा ॥ २३ ॥ विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुनसंज्ञायाम् ॥ २४ ॥ कंसाट्टिठन् ॥ २५ ॥ शूर्पादञन्यतरस्याम् ॥ २६ ॥ शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् ॥ २७ ॥ अध्यर्द्धपूर्वद्विगोर्लुगसंज्ञायाम् ॥ २८ ॥ विभाषा कार्षापणसहस्राभ्याम् ॥ २९ ॥ द्वित्रिपूर्वान्निष्कात् ॥ ३० ॥ बिस्ताच्च ॥ ३१ ॥ विंशतिकात् खः ॥ ३२ ॥ खार्या ईकन् ॥ ३३ ॥ पणपादमाषशताद्यत् ॥ ३४ ॥ शाणाद्वा ॥ ३५ ॥ द्वित्रिपूर्वादण् च ॥ ३६ ॥ तेन क्रीतम् ॥ ३७ ॥ तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ ॥ ३८ ॥ गोद्व्यचो संख्यापरिमाणाश्वादेर्यत् ॥ ३९ ॥ पुत्राच्छ च ॥ ४० ॥ सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ ॥ ४१ ॥ तस्येश्वरः ॥ ४२ ॥ तत्र विदित इति च ॥ ४३ ॥ लोकसर्वलोकात् ठञ् ॥ ४४ ॥ तस्य वापः ॥ ४५ ॥ पात्रात्ष्ठन् ॥ ४६ ॥ तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ॥ ४७ ॥ पूरणार्द्धाट्ठन् ॥ ४८ ॥ भागाद्यच ॥ ४९ ॥ तद्धरति वहत्यावहति भाराद्वंशादिभ्यः ॥ ५० ॥ वस्नद्रव्या-

भ्यां ठन्कनौ ॥ ५१ ॥ संभवत्यवहरति पचति ॥ ५२ ॥ आढकाचितपात्रात् खोऽन्यतरस्याम् ॥ ५३ ॥ द्विगोष्ठंश्च ॥ ५४ ॥ कुलिजाल्लुक्खौ च ॥ ५५ ॥ सोस्यांशवस्नभृतयः ॥ ५६ ॥ तदस्य परिमाणम् ॥ ५७ ॥ संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु ॥ ५८ ॥ पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् ॥ ५९ ॥ पञ्चद्दशतौ वर्गे वा ॥ ६० ॥ सप्तनोऽञ् छन्दसि ॥ ६१ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां डण् ॥ ६२ ॥ तदर्हति ॥ ६३ ॥ छेदादिभ्यो नित्यम् ॥ ६४ ॥ शीर्षच्छेदाद्यच्च ॥ ६५ ॥ दण्डादिभ्यो यः ॥ ६६ ॥ छन्दसि च ॥ ६७ ॥ पात्राद् घंश्च ॥ ६८ ॥ कडंकरदक्षिणाच्छ च ॥ ६९ ॥ स्थालीबिलात् ॥ ७० ॥ यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ ॥ ७१ ॥ पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति ॥ ७२ ॥ संशयमापन्नः ॥ ७३ ॥ योजनङ्गच्छति ॥ ७४ ॥ पथः ष्कन् ॥ ७५ ॥ पन्थो ण नित्यम् ॥ ७६ ॥ उत्तरपथेनाहृतञ्च ॥ ७७ ॥ कालात् ॥ ७८ ॥ तेन निर्वृत्तम् ॥ ७९ ॥ तमधीष्टो भृतो भूतो भावी ॥ ८० ॥ मासाद्वयसि यत्खञौ ॥ ८१ ॥ द्विगोर्यप् ॥ ८२ ॥ षण्मासाण्ण्यच्च ॥ ८३ ॥ अवयसि ठंश्च ॥ ८४ ॥ समायाः खः ॥ ८५ ॥ द्विगोर्वा ॥ ८६ ॥ रात्र्यहः संवत्सराच्च ॥ ८७ ॥ वर्षाल्लुक् च ॥ ८८ ॥ चित्तवति नित्यम् ॥ ८९ ॥ षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते ॥ ९० ॥ वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि ॥ ९१ ॥ संपरिपूर्वात् ख च ॥ ९२ ॥ तेन परिजय्यलभ्यकार्य्यसुकरम् ॥ ९३ ॥ तदस्य ब्रह्मचर्य्यम् ॥ ९४ ॥ तस्य च दक्षिणायज्ञाख्येभ्यः ॥ ९५ ॥ तत्र च दीयते कार्य्यं भववत् ॥ ९६ ॥ व्युष्टादिभ्योऽण् ॥ ९७ ॥ तेन यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ ॥ ९८ ॥ संपादिनि ॥ ९९ ॥ कर्मवेषाद्यत् ॥ १०० ॥ तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः ॥ १०१ ॥ योगाद्यच्च ॥ १०२ ॥ कर्मण उकञ् ॥ १०३ ॥ समयस्तदस्य प्राप्तम् ॥ १०४ ॥ ऋतोरण् ॥ १०५ ॥ छन्दसि घस् ॥ १०६ ॥ कालाद्यत् ॥ १०७ ॥ प्रकृष्टे ठञ् ॥ १०८ ॥ प्रयोजनम् ॥ १०९ ॥ विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः ॥ ११० ॥ अनुप्रवचनादिभ्यश्छः ॥ १११ ॥ समापनात्सपूर्वपदात् ॥ ११२ ॥ ऐकागारिकट् चौरे ॥ ११३ ॥ आकालिकडाद्यन्तवचने ॥ ११४ ॥ तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः ॥ ११५ ॥

तत्र तस्येव ॥ ११६ ॥ तदर्हम् ॥ ११७ ॥ उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे ॥ ११८ ॥ तस्य भावस्त्वतलौ ॥ ११९ ॥ आ च त्वात् ॥ १२० ॥ न नञ्पूर्वात् तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटयुधकतरसलसेभ्यः ॥ १२१ ॥ पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा ॥ १२२ ॥ वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च ॥ १२३ ॥ गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ॥ १२४ ॥ स्तेनाद्यन्नलोपश्च ॥ १२५ ॥ सख्युर्यः ॥ १२६ ॥ कपिज्ञात्योर्ढक् ॥ १२७ ॥ पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक् ॥ १२८ ॥ प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ् ॥ १२९ ॥ हायनान्तयुवादिभ्योऽण् ॥ १३० ॥ इगन्ताच्च लघुपूर्वात् ॥ १३१ ॥ योपधाद् गुरूपोत्तमाद्वुञ् ॥ १३२ ॥ द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च ॥ १३३ ॥ गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु ॥ १३४ ॥ होत्राभ्यश्छः ॥ १३५ ॥ ब्रह्मणस्त्वः ॥ १३६ ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ् ॥ १ ॥ व्रीहिशाल्योर्ढक् ॥ २ ॥ यवयवकषष्टिकाद्यत् ॥ ३ ॥ विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः ॥ ४ ॥ सर्वचर्मणः कृतः खखञौ ॥ ५ ॥ यथामुखसंमुखस्य दर्शन खः ॥ ६ ॥ तत्सर्वादेः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति ॥ ७ ॥ आप्रपदम्प्राप्नोति ॥ ८ ॥ अनुपदसर्वान्नायानयं बद्धाभक्षयतिनेयेषु ॥ ९ ॥ परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति ॥ १० ॥ अवारपारात्यन्तानुकामङ्गामी ॥ ११ ॥ समांसमां विजायते ॥ १२ ॥ अद्यश्वीनावष्टब्धे ॥ १३ ॥ आगवीनः ॥ १४ ॥ अनुग्वलंगामी ॥ १५ ॥ अध्वनो यत्खौ ॥ १६ ॥ अभ्यमित्राच्छ च ॥ १७ ॥ गोष्ठात्खञ् भूतपूर्वे ॥ १८ ॥ अश्वस्यैकाहगमः ॥ १९ ॥ शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः ॥ २० ॥ व्रातेन जीवति ॥ २१ ॥ साप्तपदीनं सख्यम् ॥ २२ ॥ हैयङ्गवीनं संज्ञायाम् ॥ २३ ॥ तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः

* प्राक्क्रीताच्छ इति सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ इति चात्र असमासान्तरं न नञ्पूर्वात् पठेत् ॥

कुणब्जाहचौ ॥ २४ ॥ पक्षात्तिः ॥ २५ ॥ तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ ॥ २६ ॥
विनञ्भ्यां नानाञौ न सह ॥ २७ ॥ वेः शालच्छङ्कटचौ ॥ २८ ॥ सं
प्रोदश्च कटच् ॥ २९ ॥ अवात्कुटारच्च ॥ ३० ॥ नते नासिकायाः सञ्ज्ञाय
टीटञ्नाटज्भ्रटचः ॥ ३१ ॥ नेर्बिडज्बिरीसचौ ॥ ३२ ॥ इनच्पिटच्चिक चि
॥ ३३ ॥ उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः ॥ ३४ ॥ कर्मणि घटो ठच् ॥ ३५ ॥
तदस्य सञ्जातन्तारकादिभ्य इतच् ॥ ३६ ॥ प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच
॥ ३७ ॥ पुरुषहस्तिभ्यामण् च ॥ ३८ ॥ यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् ॥ ३९ ॥
किमिदंभ्यां वो घः ॥ ४० ॥ किमः सङ्ख्यापरिमाणे डति च ॥ ४१ ॥ संख्या
या अवयवे तयप् ॥ ४२ ॥ द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा ॥ ४३ ॥ उभादुदात्तो
नित्यम् ॥ ४४ ॥ तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः ॥ ४५ ॥ शदन्तविंशतेश्च
॥ ४६ ॥ संख्याया गुणस्य निमाने मयट् ॥ ४७ ॥ तस्य पूरणे डट् ॥ ४८ ॥
नान्तादसंख्यादेर्मट् ॥ ४९ ॥ थट् च छन्दसि ॥ ५० ॥ षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्
॥ ५१ ॥ बहुपूगगणसंघस्य तिथुक् ॥ ५२ ॥ वतोरिथुक् ॥ ५३ ॥ द्वेस्तीयः
॥ ५४ ॥ त्रेः सम्प्रसारणञ्च ॥ ५५ ॥ विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥
नित्यं शतादिमासार्द्धमाससंवत्सराच्च ॥ ५७ ॥ षष्ठ्यादेश्चासंख्यादेः ॥ ५८ ॥
मतौ छः सूक्तसाम्नोः ॥ ५९ ॥ अध्यायानुवाकयोर्लुक् ॥ ६० ॥ विमुक्तादि
भ्योऽण् ॥ ६१ ॥ गोपदादिभ्यो वुन् ॥ ६२ ॥ तत्र कुशलः पथः ॥ ६३ ॥
आकर्षादिभ्यः कन् ॥ ६४ ॥ धनहिरण्यात्कामे ॥ ६५ ॥ स्वाङ्गेभ्यः प्रसि
॥ ६६ ॥ उदराट्ठगाद्यूने ॥ ६७ ॥ सस्येन परिजातः ॥ ६८ ॥ अंशं हारी ॥ ६९ ॥
तन्त्रादचिरापहृते ॥ ७० ॥ ब्राह्मणकोष्णिके सञ्ज्ञायाम् ॥ ७१ ॥ शीतोष्ण
भ्यां कारिणि ॥ ७२ ॥ अधिकम् ॥ ७३ ॥ अनुकाभिकाभीकः कमिता ॥ ७४ ॥
पार्श्वेनान्विच्छति ॥ ७५ ॥ अयः शूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ ॥ ७६ ॥ ता
विधं ग्रहणमिति लुग्वा ॥ ७७ ॥ स एषां ग्रामणीः ॥ ७८ ॥ शृङ्खलम
बन्धनं करभे ॥ ७९ ॥ उत्क उन्मनाः ॥ ८० ॥ कालप्रयोजनाद्रोगे ॥ ८१ ॥
तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञायाम् ॥ ८२ ॥ कुल्माषादञ् ॥ ८३ ॥ श्रोत्रि
यश्छन्दोऽधीते ॥ ८४ ॥ श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ ॥ ८५ ॥ पूर्वा

निः ॥ ८६ ॥ सपूर्वाच्च ॥ ८७ ॥ इष्टादिभ्यश्च ॥ ८८ ॥ छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्य्यवस्थातरि ॥ ८९ ॥ अनुपद्यन्वेष्टा ॥ ९० ॥ साक्षाद् द्रष्टरि संज्ञायाम् ॥ ९१ ॥ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ॥ ९२ ॥ इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा ॥ ९३ ॥ तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ॥ ९४ ॥ रसादिभ्यश्च ॥ ९५ ॥ प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् ॥ ९६ ॥ सिध्मादिभ्यश्च ॥ ९७ ॥ वत्सांसाभ्यां कामबले ॥ ९८ ॥ फेनादिलच ॥ ९९ ॥ लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः ॥ १०० ॥ प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः ॥ १०१ ॥ तपःसहस्राभ्यां विनीनी ॥ १०२ ॥ अण् च ॥ १०३ ॥ सिकताशर्कराभ्याञ्च ॥ १०४ ॥ देशे लुबिलचौ च ॥ १०५ ॥ दन्त उन्नत उरच् ॥ १०६ ॥ ऊषशुषिमुष्कमधो रः ॥ १०७ ॥ द्युद्रुभ्यां मः ॥ १०८ ॥ केशाद्वोऽन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ गाण्ड्यजगात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ११० ॥ काण्डाण्डादीरन्नीरचौ ॥ १११ ॥ रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् ॥ ११२ ॥ दन्तशिखात्सञ्ज्ञायाम् ॥ ११३ ॥ ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः ॥ ११४ ॥ अत इनिठनौ ॥ ११५ ॥ व्रीह्यादिभ्यश्च ॥ ११६ ॥ तुन्दादिभ्य इलच्च ॥ ११७ ॥ एकगोपूर्वाट्ठञ् नित्यम् ॥ ११८ ॥ शतसहस्रान्ताच्च निष्कात् ॥ ११९ ॥ रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् ॥ १२० ॥ अस्मायामेधास्रजो विनिः ॥ १२१ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १२२ ॥ ऊर्णाया युस् ॥ १२३ ॥ वाचो ग्मिनिः ॥ १२४ ॥ आलजाटचौ बहुभाषिणि ॥ १२५ ॥ स्वामिन्नैश्वर्ये ॥ १२६ ॥ अर्श आदिभ्योऽच् ॥ १२७ ॥ द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणिस्थादिनिः ॥ १२८ ॥ वातातीसाराभ्यां कुक् च ॥ १२९ ॥ वयसि पूरणात् ॥ १३० ॥ सुखादिभ्यश्च ॥ १३१ ॥ धर्म्मशीलवर्णान्ताच्च ॥ १३२ ॥ हस्ताज्जातौ ॥ १३३ ॥ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि ॥ १३४ ॥ पुष्करादिभ्यो देशे ॥ १३५ ॥ बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् ॥ १३६ ॥ संज्ञायां मन्माभ्याम् ॥ १३७ ॥ कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ॥ १३८ ॥ तुन्दिबलिवटेर्भः ॥ १३९ ॥ अहंशुभमोर्युस् ॥ १४० ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

* धान्यानां प्रसंनकिमोचिलुकाकालप्रज्ञा अस्मायामेधात्रिंशतिः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

प्राग्दिशो विभक्तिः ॥ १ ॥ किं सर्व्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः ॥२॥ इद इश् ॥ ३ ॥ एतेतौ रथोः ॥ ४ ॥ एतदोऽश् ॥ ५ ॥ सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां ॥ ६ ॥ पञ्चम्यास्तसिल् ॥ ७ ॥ तसेश्च ॥ ८ ॥ पर्य्यभिभ्याञ्च ॥ ९ ॥ सप्तम्यास्त्रल् ॥ १० ॥ इदमो हः ॥ ११ ॥ किमोऽत् ॥ १२ ॥ वा ह च छन्दसि ॥ १३ ॥ इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते ॥ १४ ॥ सर्वैकान्यकियत्तदः काले दा ॥ १५ ॥ इदमोर्हिल् ॥ १६ ॥ अधुना ॥ १७ ॥ दानीं च ॥ १८ ॥ तदो दा च ॥ १९ ॥ तयोर्दार्हिलौ च छन्दसि ॥ २० ॥ अनद्यतनेर्हिलन्यतरस्याम् ॥ २१ ॥ सद्यः परुत्परार्य्यैषमःपरेद्यव्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरे ॥ २२ ॥ प्रकारवचने थाल् ॥ २३ ॥ इदमस्थमुः ॥ २४ ॥ किमश्च ॥ २५ ॥ था हेतौ च छन्दसि ॥ २६ ॥ दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः ॥ २७ ॥ दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच् ॥ २८ ॥ विभाषा परावराभ्याम् ॥ २९ ॥ अञ्चेर्लुक् ॥ ३० ॥ उपर्य्युपरिष्टात् ॥ ३१ ॥ पश्चात् ॥ ३२ ॥ पश्च पश्चा च छन्दसि ॥ ३३ ॥ उत्तराधरदक्षिणादातिः ॥ ३४ ॥ एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः ॥ ३५ ॥ दक्षिणादाच् ॥ ३६ ॥ आहि च दूरे ॥ ३७ ॥ उत्तराच्च ॥ ३८ ॥ पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम् ॥ ३९ ॥ अस्ताति च ॥ ४० ॥ विभाषाऽवरस्य ॥ ४१ ॥ संख्याया विधार्थे धा ॥ ४२ ॥ अधिकरणविचाले च ॥ ४३ ॥ एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ द्वित्र्योश्च धमुञ् ॥ ४५ ॥ एधाच्च ॥ ४६ ॥ याप्ये पाशप् ॥ ४७ ॥ पूरणाद्भागे तीयादन् ॥ ४८ ॥ प्रागेकादशभ्योऽच्छन्दसि ॥ ४९ ॥ षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च ॥ ५० ॥ मानपश्वङ्गयोः कन्लुकौ च ॥ ५१ ॥ एकादाकिनिच्चासहाये ॥ ५२ ॥ भूत पूर्वे चरट् ॥ ५३ ॥ षष्ठ्या रूप्य च ॥ ५४ ॥ अतिशायने तमबिष्ठनौ ॥ ५५ ॥ तिङश्च ॥ ५६ ॥ द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ ॥ ५७ ॥ अजादी गुणवचनादेव ॥ ५८ ॥ तुश्छन्दसि ॥ ५९ ॥ प्रशस्यस्य श्रः ॥ ६० ॥ ज्य च ॥ ६१ ॥ वृद्धस्य च ॥ ६२ ॥ अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ ॥ ६३ ॥ युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् ॥ ६४ ॥ विन्मतोर्लुक् ॥ ६५

प्रशंसायां रूपप् ॥ ६६ ॥ ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः ॥ ६७ ॥ विभाषा सुपो बहुच्पुरस्तात्तु ॥ ६८ ॥ प्रकारवचने जातीयर् ॥ ६९ ॥ प्रागिवात्कः ॥ ७० ॥ अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः ॥ ७१ ॥ कस्य च दः ॥ ७२ ॥ अज्ञाते ॥ ७३ ॥ कुत्सिते ॥ ७४ ॥ सञ्ज्ञायाङ्कन् ॥ ७५ ॥ अनुकम्पायाम् ॥ ७६ ॥ नीतौ च तद्युक्तात् ॥ ७७ ॥ बह्वचो मनुष्यनाम्नष्ठज्वा ॥ ७८ ॥ घनिलचौ च ॥ ७९ ॥ प्राचामुपादेरडज्वुचौ च ॥ ८० ॥ जातिनाम्नः कन् ॥ ८१ ॥ अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च ॥ ८२ ॥ ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः ॥ ८३ ॥ शेवलसुपरिविशालवरुणार्य्यमादीनां तृतीयात् ॥ ८४ ॥ अल्पे ॥ ८५ ॥ ह्रस्वे ॥ ८६ ॥ सञ्ज्ञायां कन् ॥ ८७ ॥ कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ॥ ८८ ॥ कुत्वा डुपच् ॥ ८९ ॥ कासूगोणीभ्यां ष्टरच् ॥ ९० ॥ वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे ॥ ९१ ॥ किं यत्तदोर्निर्द्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् ॥ ९२ ॥ वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् ॥ ९३ ॥ एकाच्च प्राचाम् ॥ ९४ ॥ अवक्षेपणे कन् ॥ ९५ ॥ इवे प्रतिकृतौ ॥ ९६ ॥ सञ्ज्ञायाञ्च ॥ ९७ ॥ लुम्मनुष्ये ॥ ९८ ॥ जीविकार्थे चापण्ये ॥ ९९ ॥ देवपथादिभ्यश्च ॥ १०० ॥ वस्तेर्ढञ् ॥ १०१ ॥ शिलाया ढः ॥ १०२ ॥ शाखादिभ्यो यः ॥ १०३ ॥ द्रव्यञ्च भव्ये ॥ १०४ ॥ कुशाग्राच्छः ॥ १०५ ॥ समासाच्च तद्विषयात् ॥ १०६ ॥ शर्करादिभ्योऽण् ॥ १०७ ॥ अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक् ॥ १०८ ॥ एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ कर्कलोहितादीकक् ॥ ११० ॥ प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि ॥ १११ ॥ पूगाञ्ञ्योऽग्रामणीपूर्वात् ॥ ११२ ॥ व्रातच्फञोरस्त्रियाम् ॥ ११४ ॥ आयुधजीविसङ्घाञ्ञ्यड्वाहीकेष्वब्राह्मणराजन्यात् ॥ ११४ ॥ वृकाट्टेण्यण् ॥ ११५ ॥ दामन्यादित्रिगर्त्तषष्ठाच्छः ॥ ११६ ॥ पर्श्वादियौधेयादिभ्योऽणञौ ॥ ११७ ॥ अभिजिद्विदभृच्छालावच्छिखावच्छमीवदूर्णावच्छ्रुमदणो यञ् ॥ ११८ ॥ ञ्यादयस्तद्राजाः ॥ ११९ ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

पादशतस्य सङ्ख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च ॥ १ ॥ दण्डव्यवसर्गयोश्च

* प्रागिदशोऽनवर्त्तनीयविभाषा ञ्यश्च जातिनाम्नोऽयमेरेकोनत्रिंशतिः ॥

६

॥ २ ॥ स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन् ॥ ३ ॥ अनत्यन्तगतौ क्तात् ॥ ४ ॥
सामिवचने ॥ ५ ॥ बृहत्या आच्छादने ॥ ६ ॥ अषडक्षाशितङ्ग्वलङ्कर्मालम्
रूपाद्युत्तरपदात्खः ॥ ७ ॥ विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम् ॥ ८ ॥ जात्यन्ताच्छ बन्
नि ॥ ९ ॥ स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत् ॥ १० ॥ किमेत्तिङव्ययघाद्
म्वद्रव्यप्रकर्षे ॥ ११ ॥ अमु च छन्दसि ॥ १२ ॥ अनुगादिनष्ठक् ॥ १३
णचः स्त्रियामञ् ॥ १४ ॥ अणिनुणः ॥ १५ ॥ विसारिणो मत्स्ये ॥ १६
सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच् ॥ १७ ॥ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ॥ १८
एकस्य सकृच्च ॥ १९ ॥ विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले ॥ २० ॥ तत्प्रकृतवच
मयट् ॥ २१ ॥ समूहवच्च बहुषु ॥ २२ ॥ अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः ॥ २३
देवतान्तात्तादर्थ्ये यत् ॥ २४ ॥ पादार्घाभ्यां च ॥ २५ ॥ अतिथेर्ञ्यः ॥ २६
देवात्तल् ॥ २७ ॥ अवेः कः ॥ २८ ॥ यावादिभ्यः कन् ॥ २९ ॥ लोहिता
णौ ॥ ३० ॥ वर्णे चानित्ये ॥ ३१ ॥ रक्ते ॥ ३२ ॥ कालाच्च ॥ ३३ ॥ वि
यादिभ्यष्ठक् ॥ ३४ ॥ वाचो व्याहृतार्थायाम् ॥ ३५ ॥ तद्युक्तात्कर्मणोऽ
॥ ३६ ॥ ओषधेरजातौ ॥ ३७ ॥ प्रज्ञादिभ्यश्च ॥ ३८ ॥ मृदस्तिकन् ॥ ३९
सस्नौ प्रशंसायाम् ॥ ४० ॥ वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्तातिलौ च छन्दसि ॥ ४१
बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम् ॥ ४२ ॥ सङ्ख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ॥ ४३
प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः ॥ ४४ ॥ अपादाने चाहीयरुहोः ॥ ४५ ॥ अतिग्रहाव्यथ
क्षेपेष्वकर्तरि तृतीयायाः ॥ ४६ ॥ हीयमानपापयोगाच्च ॥ ४७ ॥ षष्ठ्या व्याश्रये ॥ ४८
रोगाच्चापनयने ॥ ४९ ॥ अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः ॥ ५०
अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ॥ ५१ ॥ विभाषा साति कार्त्स्न्ये ॥ ५२
अभिविधौ संपदा च ॥ ५३ ॥ तदधीनवचने ॥ ५४ ॥ देये त्रा च ॥ ५५ ॥ दे
मनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम् ॥ ५६ ॥ अव्यक्तानुकरणाद्
जवराद्धोदनितौ डाच् ॥ ५७ ॥ कृञो द्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ ॥ ५८ ॥ स
ङ्ख्यायाश्च गुणान्तायाः ॥ ५९ ॥ समयाच्च यापनायाम् ॥ ६० ॥ सपत्र निष्पत्रा
दतिव्यथने ॥ ६१ ॥ निष्कुलान्निष्कोषणे ॥ ६२ ॥ सुखप्रियादानुलोम्ये ॥ ६३

दुःखात्प्रातिलोम्ये ॥ ६४ ॥ शूलात्पाके ॥ ६५ ॥ सत्यादशपथे ॥ ६६ ॥ मद्रात्परिवापणे ॥ ६७ ॥ समासान्ताः ॥ ६८ ॥ न पूजनात् ॥ ६९ ॥ किमः क्षेपे ॥ ७० ॥ नञस्तत्पुरुषात् ॥ ७१ ॥ पथो विभाषा ॥ ७२ ॥ बहुव्रीहौ सङ्ख्येये डजबहुगणात् ॥ ७३ ॥ ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे ॥ ७४ ॥ अच् प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोम्नः ॥ ७५ ॥ अक्ष्णोऽदर्शनात् ॥ ७६ ॥ अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तंदिवरात्रिंदिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः ॥ ७७ ॥ ब्रह्महस्तिभ्यां वर्च्चसः ॥ ७८ ॥ अवसमन्धेभ्यस्तमसः ॥ ७९ ॥ श्वसोऽवसीयः श्रेयसः ॥ ८० ॥ अन्ववतप्ताद्रहसः ॥ ८१ ॥ प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ॥ ८२ ॥ अनुगवमायामे ॥ ८३ ॥ द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ॥ ८४ ॥ उपसर्गादध्वनः ॥ ८५ ॥ तत्पुरुषस्याङ्गुलेः सङ्ख्याव्ययादेः ॥ ८६ ॥ अहः सर्वैकदेशसङ्ख्यातपुण्याच्च रात्रेः ॥ ८७ ॥ अह्नोऽह्न एतेभ्यः ॥ ८८ ॥ न सङ्ख्यादेः समाहारे ॥ ८९ ॥ उत्तमैकाभ्यां च ॥ ९० ॥ राजाहःसखिभ्यष्टच् ॥ ९१ ॥ गोरतद्धितलुकि ॥ ९२ ॥ अग्राख्यायामुरसः ॥ ९३ ॥ अनोऽश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः ॥ ९४ ॥ ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः ॥ ९५ ॥ अतेः शुनः ॥ ९६ ॥ उपमानादप्राणिषु ॥ ९७ ॥ उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः ॥ ९८ ॥ नावो द्विगोः ॥ ९९ ॥ अर्द्धाच्च ॥ १०० ॥ खार्याः प्राचाम् ॥ १०१ ॥ द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ॥ १०२ ॥ अनसन्तान्नपुंसकाच्छन्दसि ॥ १०३ ॥ ब्रह्मणो जानपदाख्यायाम् ॥ १०४ ॥ कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ १०५ ॥ द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे ॥ १०६ ॥ अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः ॥ १०७ ॥ अनश्च ॥ १०८ ॥ नपुंसकादन्यतरस्याम् ॥ १०९ ॥ नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ॥ ११० ॥ झयः ॥ १११ ॥ गिरेश्च सेनकस्य ॥ ११२ ॥ बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् ॥ ११३ ॥ अङ्गुलेर्दारुणि ॥ ११४ ॥ द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः ॥ ११५ ॥ अप्पूरणीप्रमाण्योः ॥ ११६ ॥ अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः ॥ ११७ ॥ अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् ॥ ११८ ॥ उपसर्गाच्च ॥ ११९ ॥ सुप्रातसुश्वसुदिव-

शारिकुत्तचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः ॥ १२० ॥ नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् ॥ १२१ ॥ नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ॥ १२२ ॥ बहुप्रजाश्छन्दसि ॥ १२३ ॥ धर्म्मादनिच् केवलात् ॥ १२४ ॥ जम्भासुहरिततृणसोमेभ्यः ॥ १२५ ॥ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ॥ १२६ ॥ इच् कर्म्मव्यतिहारे ॥ १२७ ॥ द्विदण्ड्यादिभ्यश्च ॥ १२८ ॥ प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः ॥ १२९ ॥ ऊर्ध्वाद् विभाषा ॥ १३० ॥ ऊधसोऽनङ् ॥ १३१ ॥ धनुषश्च ॥ १३२ ॥ वा सञ्ज्ञायाम् ॥ १३३ ॥ जायाया निङ् ॥ १३४ ॥ गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः ॥ १३५ ॥ अल्पाख्यायाम् ॥ १३६ ॥ उपमानाच्च ॥ १३७ ॥ पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः ॥ १३८ ॥ कुम्भपदीषु च ॥ १३९ ॥ सङ्ख्यासुपूर्वस्य ॥ १४० ॥ वयसि दन्तस्य दतृ ॥ १४१ ॥ छन्दसि च ॥ १४२ ॥ स्त्रियां संज्ञायाम् ॥ १४३ ॥ विभाषा श्यावारोकाभ्याम् ॥ १४४ ॥ अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च ॥ १४५ ॥ ककुदस्यावस्थायां लोपः ॥ १४६ ॥ त्रिककुत्पर्वते ॥ १४७ ॥ उद्विभ्यां काकुदस्य ॥ १४८ ॥ पूर्णाद्विभाषा ॥ १४९ ॥ सुहृद्दुर्हृदौ मित्राऽमित्रयोः ॥ १५० ॥ उरः प्रभृतिभ्यः कप् ॥ १५१ ॥ इनः स्त्रियाम् ॥ १५२ ॥ नद्यृतश्च ॥ १५३ ॥ शेषाद्विभाषा ॥ १५४ ॥ न संज्ञायाम् ॥ १५५ ॥ ईयसश्च ॥ १५६ ॥ वन्दिते भ्रातुः ॥ १५७ ॥ ऋतश्छन्दसि ॥ १५८ ॥ नाडीतन्त्र्योः स्वाङ्गे ॥ १५९ ॥ निष्प्रवाणिश्च ॥ १६० ॥ *

इति पञ्चमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

* पादशतस्य नञ्कृत्सवृक्ज्येष्ठाभ्यःसपत्रान्वतमास्यायांनञ्दुःसुभ्यो वयसि विंशतिः

अथ षष्ठाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

एकाचो द्वे प्रथमस्य ॥ १ ॥ अजादेर्द्वितीयस्य ॥ २ ॥ नन्द्राः संयोगादयः ॥ ३ ॥ पूर्वोऽभ्यासः ॥ ४ ॥ उभे अभ्यस्तम् ॥ ५ ॥ जक्षित्यादयः षट् ॥ ६ ॥ तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य ॥ ७ ॥ लिटि धातोरनभ्यासस्य ॥ ८ ॥ सन्यङोः ॥ ९ ॥ श्लौ ॥ १० ॥ चङि ॥ ११ ॥ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च ॥ १२ ॥ ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे ॥ १३ ॥ बन्धुनि बहुव्रीहौ ॥ १४ ॥ वचिस्वपियजादीनां किति ॥ १५ ॥ ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च ॥ १६ ॥ लिट्यभ्यासस्योभयेषाम् ॥ १७ ॥ स्वापेश्चङि ॥ १८ ॥ स्वपिस्यमिव्येञां यङि ॥ १९ ॥ न वशः ॥ २० ॥ चायः की ॥ २१ ॥ स्फायः स्फी निष्ठायाम् ॥ २२ ॥ स्त्यः प्रपूर्वस्य ॥ २३ ॥ द्रवमूर्त्तिस्पर्शयोः श्यः ॥ २४ ॥ प्रतेश्च ॥ २५ ॥ विभाषाऽभ्यवपूर्वस्य ॥ २६ ॥ शृतं पाके ॥ २७ ॥ प्यायः पी ॥ २८ ॥ लिड्यङोश्च ॥ २९ ॥ विभाषा श्वेः ॥ ३० ॥ णौ च संश्चङोः ॥ ३१ ॥ ह्वः संप्रसारणम् ॥ ३२ ॥ अभ्यस्तस्य च ॥ ३३ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ३४ ॥ चायः की ॥ ३५ ॥ अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्युषेतित्याजश्राताश्रितमाशीराशीर्त्ताः ॥ ३६ ॥ न संप्रसारणे संप्रसारणम् ॥ ३७ ॥ लिटि वयो यः ॥ ३८ ॥ वश्चास्यान्यतरस्यां किति ॥ ३९ ॥ वेञः ॥ ४० ॥ ल्यपि च ॥ ४१ ॥ ज्यश्च ॥ ४२ ॥ व्यश्च ॥ ४३ ॥ विभाषापरेः ॥ ४४ ॥ आदेच उपदेशेऽशिति ॥ ४५ ॥ न व्यो लिटि ॥ ४६ ॥ स्फुरतिस्फुलत्योर्घञि ॥ ४७ ॥ क्रीङ्जीनां णौ ॥ ४८ ॥ सिध्यतेरपारलौकिके ॥ ४९ ॥ मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च ॥ ५० ॥ विभाषा लीयतेः ॥ ५१ ॥ खिदेश्छन्दसि ॥ ५२ ॥ अपगुरो णमुलि ॥ ५३ ॥ चिस्फुरोर्णौ ॥ ५४ ॥ प्रजने

र्वीयतेः ॥ ५५ ॥ बिभेतेर्हेतुभये ॥ ५६ ॥ नित्यं स्मयतेः ॥ ५७ ॥ सृजिदृशो-र्झल्यमकिति ॥ ५८ ॥ अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् ॥ ५९ ॥ शीर्ष-श्छन्दसि ॥ ६० ॥ ये च तद्धिते ॥ ६१ ॥ अचि शीर्षः ॥ ६२ ॥ पद्न्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु ॥ ६३ ॥ धात्वादेः षः सः ॥ ६४ ॥ णो नः ॥ ६५ ॥ लोपो व्योर्वलि ॥ ६६ ॥ वेरपृक्तस्य ॥ ६७ ॥ हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् ॥ ६८ ॥ एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः ॥ ६९ ॥ शेश्छन्दसि बहुलम् ॥ ७० ॥ ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् ॥ ७१ ॥ संहितायाम् ॥ ७२ ॥ छे च ॥ ७३ ॥ आङ्माङोश्च ॥ ७४ ॥ दीर्घात् ॥ ७५ ॥ पदान्ताद्वा ॥ ७६ ॥ इको यणचि ॥ ७७ ॥ एचोऽयवायावः ॥ ७८ ॥ वान्तो यि प्रत्यये ॥ ७९ ॥ धातोस्तन्निमित्तस्यैव ॥ ८० ॥ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे ॥ ८१ ॥ क्रय्य-स्तदर्थे ॥ ८२ ॥ भय्यप्रवय्ये च छन्दसि ॥ ८३ ॥ एकः पूर्वपरयोः ॥ ८४ ॥ अन्तादिवच्च ॥ ८५ ॥ षत्वतुकोरसिद्धः ॥ ८६ ॥ आद्गुणः ॥ ८७ ॥ वृद्धिरेचि ॥ ८८ ॥ एत्येधत्यूठ्सु ॥ ८९ ॥ आटश्च ॥ ९० ॥ उपसर्गादृति धातौ ॥ ९१ ॥ वा सुप्यापिशलेः ॥ ९२ ॥ ओतोऽम्शसोः ॥ ९३ ॥ एङि पररूपम् ॥ ९४ ॥ ओमाङोश्च ॥ ९५ ॥ उस्यपदान्तात् ॥ ९६ ॥ अतो गुणे ॥ ९७ ॥ अव्य-क्तानुकरणस्यात इतौ ॥ ९८ ॥ नाम्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा ॥ ९९ ॥ अकः स-वर्णे दीर्घः ॥ १०० ॥ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः ॥ १०१ ॥ तस्माच्छसो नः पुंसि ॥१०२॥ नादिचि ॥ १०३ ॥ दीर्घाज्जसि च ॥ १०४ ॥ वा च्छन्दसि ॥ १०५ ॥ अमि पूर्वः ॥ १०६ ॥ सम्प्रसारणाच्च ॥ १०७ ॥ एङः पदान्तादति ॥ १०८ ॥ ङसिङसोश्च ॥ १०९ ॥ ऋत उत् ॥ ११० ॥ ख्यत्यात्परस्य ॥ १११ ॥ अतो रोरप्लुतादप्लुते ॥ ११२ ॥ हशि च ॥११३॥ प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे ॥११४॥ अव्यादवद्यादवक्रमुरव्रतायमवन्त्ववस्युषु च ॥ ११५ ॥ यजुष्युरः ॥ ११६ ॥ आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठेऽम्बेऽम्बालेऽम्बिके पूर्वे ॥ ११७ ॥ अङ्ग इत्यादौ च ॥ ११८ ॥ अनुदात्ते च कुधपरे ॥ ११९ ॥ अवपथासि च ॥ १२० ॥ सर्वत्र विभाषा गोः ॥ १२१ ॥ अवङ् स्फोटायनस्य ॥ १२२ ॥ इन्द्रे च

॥ १२३ ॥ प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ॥ १२४ ॥ आङोऽनुनासिकश्छन्दसि ॥ १२५ ॥ इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ॥ १२६ ॥ ऋत्यकः ॥ १२७ ॥ अप्लुतवदुपस्थिते ॥ १२८ ॥ ई३चाक्रवर्म्मणस्य ॥ १२९ ॥ दिव उत् ॥१३०॥ एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि ॥ १३१ ॥ स्यश्छन्दसि बहुलम् ॥ १३२ ॥ सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम् ॥ १३३ ॥ सुट् कात्पूर्वः ॥ १३४ ॥ संपर्य्युपेभ्यः करोतौ भूषणे ॥ १३५ ॥ समवाये च ॥ १३६ ॥ उपात्प्रतियत्न-वैकृतवाक्याध्याहारेषु ॥ १३७ ॥ किरतौ लवने ॥ १३८ ॥ हिंसायां प्रतेश्च ॥ १३९ ॥ अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ॥ १४० ॥ कुस्तुम्बुरूणि जातिः ॥ १४१ ॥ अपरस्पराः क्रियासातत्ये ॥१४२॥ गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु ॥ १४३ ॥ आस्पदं प्रतिष्ठायाम् ॥ १४४ ॥ आश्चर्य्यमनित्ये ॥ १४५ ॥ वर्च-स्केऽवस्करः ॥ १४६ ॥ अपस्करो रथाङ्गम् ॥ १४७ ॥ विष्किरः शकुनिर्वि-किरो वा ॥ १४८ ॥ ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ॥ १४९ ॥ प्रतिष्कशश्च कशेः ॥१५०॥ प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी ॥ १५१ ॥ मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राज-कयोः ॥ १५२ ॥ कास्तीराजस्तुन्दे नगरे ॥ १५३ ॥ पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् ॥ १५४ ॥ अनुदात्तं पदमेकवर्ज्जम् ॥ १५५ ॥ कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः ॥ १५६ ॥ उञ्छादीनाञ्च ॥ १५७ ॥ अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ॥ १५८ ॥ धातोः ॥ १५९ ॥ चितः ॥ १६० ॥ तद्धितस्य ॥ १६१ ॥ कितः ॥ १६२ ॥ तिसृभ्यो जसः ॥ १६३ ॥ चतुरः शसि ॥ १६४ ॥ सावेका-चस्तृतीयादिर्विभक्तिः ॥१६५॥ अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतरस्यामनित्यसमासे ॥ १६६ ॥ अञ्चेश्छन्दस्य सर्वनामस्थानम् ॥ १६७ ॥ ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः ॥ १६८ ॥ अष्टनो दीर्घात् ॥ १६९ ॥शतुरनुमो नद्यजादी ॥ १७० ॥ उदात्त-यणो हल्पूर्वात् ॥१७१॥ नोङ्धात्वोः ॥ १७२ ॥ ह्रस्वनुड्भ्यां मतुप् ॥१७३॥ नामन्यतरस्याम् ॥ १७४ ॥ ङ्याश्छन्दसि बहुलम् ॥ १७५ ॥ षट्त्रिचतुर्भ्यो हलादिः ॥ १७६ ॥ झल्युपोत्तमम् ॥ १७७ ॥ विभाषा भाषायाम् ॥ १७८ ॥ न गोश्वन्साववर्णराडङ्क्रुङ्कृद्भ्यः ॥ १७९ ॥ दिवो झल् ॥१८०॥ नृ चान्य-तरस्याम् ॥ १८१ ॥ तित्स्वरितम् ॥ १८२ ॥ तास्यनुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसा-

र्धधातुकमनुदात्तमह्न्विङो ॥ १८३ ॥ आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् ॥ १८४ ॥ स्वपादिहिंसामच्यनिटि ॥ १८५ ॥ अभ्यस्तानामादिः ॥ १८६ ॥ अनुदात्ते च ॥ १८७ ॥ सर्वस्य सुपि ॥ १८८ ॥ भीह्रीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां प्रत्ययात्पूर्वं पिति ॥ १८९ ॥ लिति ॥ १९० ॥ आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम् ॥ १९१ ॥ अचः कर्तृयकि ॥ १९२ ॥ थलि च सेटीडन्तो वा ॥१९३॥ ञ्नित्यादिर्नित्यम् ॥ १९४ ॥ आमन्त्रितस्य च ॥ १९५ ॥ पथिमथोः सर्वनामस्थाने ॥ १९६ ॥ अन्तश्चतवै युगपत् ॥ १९७ ॥ क्षयो निवासे ॥ १९८ ॥ जयः करणम् ॥ १९९ ॥ वृपादीनां च ॥ २०० ॥ संज्ञायामुपमानम् ॥ २०१ ॥ निष्ठा च द्व्यजनात् ॥ २०२ ॥ शुष्कधृष्टौ ॥ २०३ ॥ आशितः कर्त्ता ॥ २०४ ॥ रिक्ते विभाषा ॥ २०५ ॥ जुष्टार्पिते च छन्दसि ॥ २०६ ॥ नित्यं मन्त्रे ॥ २०७ ॥ युष्मदस्मदोर्ङसि च ॥ २०८ ॥ ङयि च ॥ २०९ ॥ यतो नावः ॥ २१० ॥ ईडवन्दवृशंसदुहां ण्यतः ॥ २११ ॥ विभाषा वेण्विन्धानयोः ॥ २१२ ॥ त्यागरागहासकुहश्वठक्रथानाम् ॥ २१३ ॥ उपोत्तमं रिति ॥ २१४ ॥ चङ्यन्यतरस्याम् ॥ २१५ ॥ मतोः पूर्वमात्सञ्ज्ञायां स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥ अन्तोऽवत्याः ॥ २१७ ॥ ईवत्याः ॥ २१८ ॥ चौ ॥ २१९ ॥ समासस्य ॥ २२० ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् ॥ १ ॥ तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः ॥ २ ॥ वर्णो वर्णेष्वनेते ॥ ३ ॥ गाधलवणयोः प्रमाणे ॥ ४ ॥ दायाद्यं दायादे ॥ ५ ॥ प्रतिबन्धिचिरकृच्छ्रयोः ॥ ६ ॥ पदेऽपदेशे ॥ ७ ॥ निवाते वातत्राणे ॥ ८ ॥ शारदेऽनार्त्तवे ॥ ९ ॥ अध्वर्युकषाययोर्जातौ ॥१०॥ सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये ॥ ११ ॥ द्विगौ प्रमाणे ॥ १२ ॥ गन्तव्यपण्यं वाणिजे ॥ १३ ॥ मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके ॥१४॥ सुखप्रिययोर्हिते ॥ १५ ॥

* एकाचश्चाद्यो ल्यपिच ये च क्ष्यय्जय्यौ प्रथमयोः सर्वत्र कुत्तुम्बुरूणि तद्धितस्य नृ चान्य संज्ञायां विंशतिः ॥

शीतौ च ॥ १६ ॥ स्वं स्वामिनि ॥ १७ ॥ पत्यावैश्वर्य्ये ॥ १८ ॥ न भूवाक्चिद्दिधिषु ॥ १९ ॥ वा भुवनम् ॥ २० ॥ आशङ्काबाधनेदीयस्सु सम्भावने ॥ २१ ॥ पूर्वे भूतपूर्वे ॥ २२ ॥ सविधसनीडसमर्य्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये ॥ २३ ॥ विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु ॥ २४ ॥ श्रज्याऽवमकन्पापवत्सु भावे कर्म्मधारये ॥ २५ ॥ कुमारश्च ॥ २६ ॥ आदिः प्रत्येनसि ॥ २७ ॥ पूगेष्वन्यतरस्याम् ॥ २८ ॥ इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ ॥ २९ ॥ बह्वन्यतरस्याम् ॥ ३० ॥ दिष्टिवितस्त्योश्च ॥ ३१ ॥ सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्वकालात् ॥ ३२ ॥ परिप्रत्युपापा वर्ज्यमानाऽहोरात्रावयवेषु ॥ ३३ ॥ राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु ॥ ३४ ॥ सङ्ख्या ॥ ३५ ॥ आचार्य्योपसर्ज्जनश्चाऽन्तेवासी ॥ ३६ ॥ कार्त्तकौजपादयश्च ॥ ३७ ॥ महान् व्रीह्यपराह्णगृष्टीष्वासजाबालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु ॥ ३८ ॥ क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे ॥ ३९ ॥ उष्ट्रः सादिवाम्योः ॥ ४० ॥ गौः सादसादिसारथिषु ॥ ४१ ॥ कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्यश्लीलदृढरूपापारेवडवा तैतिलकद्रूः पण्यकम्बलोदासीभाराणाञ्च ॥ ४२ ॥ चतुर्थी तदर्थे ॥ ४३ ॥ अर्थे ॥ ४४ ॥ क्ते च ॥ ४५ ॥ कर्म्मधारयेऽनिष्ठा ॥ ४६ ॥ अहीने द्वितीया ॥ ४७ ॥ तृतीया कर्मणि ॥ ४८ ॥ गतिरनन्तरः ॥ ४९ ॥ तादौ च निति कृत्यतौ ॥ ५० ॥ तवै चान्तश्च युगपत् ॥ ५१ ॥ अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये ॥ ५२ ॥ न्यधी च ॥ ५३ ॥ ईषदन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ हिरण्यपरिमाणं धने ॥ ५५ ॥ प्रथमोऽचिरोपसम्पत्तौ ॥ ५६ ॥ कतरकतमौ कर्म्मधारये ॥ ५७ ॥ आर्य्यो ब्राह्मणकुमारयोः ॥ ५८ ॥ राजा च ॥ ५९ ॥ षष्ठी प्रत्येनसि ॥ ६० ॥ क्ते नित्यार्थे ॥ ६१ ॥ ग्रामः शिल्पिनि ॥ ६२ ॥ राजा च प्रशंसायाम् ॥ ६३ ॥ आदिरुदात्तः ॥ ६४ ॥ सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे ॥ ६५ ॥ युक्ते च ॥ ६६ ॥ विभाषाध्यक्षे ॥ ६७ ॥ पापञ्च शिल्पिनि ॥ ६८ ॥ गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे ॥ ६९ ॥ अङ्गानि मैरेये ॥ ७० ॥ भक्ताख्यास्तदर्थेषु ॥ ७१ ॥ गोबिडालसिंहसैन्धवेषूपमाने ॥ ७२ ॥ अके जीविकार्थे ॥ ७३ ॥ प्राचां क्रीडायाम् ॥ ७४ ॥ अणि नियुक्ते ॥ ७५ ॥ शिल्पिनि चाऽकृञः ॥ ७६ ॥ सञ्ज्ञायाञ्च ॥ ७७ ॥ गोतन्तियवम्पाले ॥ ७८ ॥ णिनि ॥ ७९ ॥ उपमानं शब्दा-

र्थमकृतावेव ॥ ८० ॥ युक्तारोह्यादयश्च ॥ ८१ ॥ दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटञ्जे ॥ ८२ ॥ अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ॥ ८३ ॥ ग्रामेऽनिवसन्तः ॥ ८४ ॥ घोषादिषु च ॥ ८५ ॥ छात्र्यादयः शालायाम् ॥ ८६ ॥ प्रस्थेऽवृद्धमकर्क्यादीनाम् ॥ ८७ ॥ मालादीनां च ॥ ८८ ॥ अमहन्नवन्नगरेऽनुदीचाम् ॥ ८९ ॥ अर्मे चावर्णं द्व्यच्त्र्यच् ॥ ९० ॥ न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् ॥ ९१ ॥ अन्तः ॥ ९२ ॥ सर्वं गुणकार्त्स्न्ये ॥ ९३ ॥ संज्ञायां गिरिनिकाययोः ॥ ९४ ॥ कुमार्यां वयसि ॥ ९५ ॥ उदकेऽकेवले ॥ ९६ ॥ द्विगौ क्रतौ ॥ ९७ ॥ सभायां नपुंसके ॥ ९८ ॥ पुरे प्राचाम् ॥ ९९ ॥ अरिष्टगौडपूर्वे च ॥ १०० ॥ न हास्तिनफलकमार्देयाः ॥ १०१ ॥ कुसूलकूपकुम्भशालं बिले ॥ १०२ ॥ दिक्शब्दा ग्रामजनपदाख्यानचानराटेषु ॥ १०३ ॥ आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि ॥ १०४ ॥ उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च ॥ १०५ ॥ बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् ॥ १०६ ॥ उदराश्वेषुषु ॥ १०७ ॥ क्षेपे ॥ १०८ ॥ नदी बन्धुनि ॥ १०९ ॥ निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम् ॥ ११० ॥ उत्तरपदादिः ॥ १११ ॥ कर्णो वर्णलक्षणात् ॥ ११२ ॥ संज्ञौपम्ययोश्च ॥ ११३ ॥ कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घञ्च ॥ ११४ ॥ शृङ्गमवस्थायाञ्च ॥ ११५ ॥ नञो जरमरमित्रमृताः ॥ ११६ ॥ सोर्मनसी अलोमोषसी ॥ ११७ ॥ क्रत्वादयश्च ॥ ११८ ॥ आद्युदात्तं द्व्यच् छन्दसि ॥ ११९ ॥ वीरवीर्यौ च ॥ १२० ॥ कूलतीरतूलमूलशालाऽक्षसममव्ययीभावे ॥ १२१ ॥ कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ ॥ १२२ ॥ तत्पुरुषे शालायान्नपुंसके ॥ १२३ ॥ कन्था च ॥ १२४ ॥ आदिश्चिहणादीनाम् ॥ १२५ ॥ चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम् ॥ १२६ ॥ चीरमुपमानम् ॥ १२७ ॥ पललसूपशाकम्मिश्रे ॥ १२८ ॥ कूलसूदस्थलकर्षाः सञ्ज्ञायाम् ॥ १२९ ॥ अकर्मधारये राज्यम् ॥ १३० ॥ वर्ग्यादयश्च ॥ १३१ ॥ पुत्रः पुंभ्यः ॥ १३२ ॥ नाचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्याख्येभ्यः ॥ १३३ ॥ चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः ॥ १३४ ॥ षट् काण्डादीनि ॥ १३५ ॥ कुण्डं वनम् ॥ १३६ ॥ प्रकृत्या भगालम् ॥ १३७ ॥ शितेर्नित्याबह्वज् बहुव्रीहावभसत् ॥ १३८ ॥ गतिकारकोपपदात् कृत् ॥ १३९ ॥ उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् ॥ १४० ॥ देवता द्वन्द्वे च ॥ १४१ ॥ नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवी

वीरुद्रपूपमन्थिषु ॥ १४२ ॥ अन्तः ॥ १४३ ॥ थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम् ॥ १४४ ॥ सूपमानात् क्तः ॥ १४५ ॥ सञ्ज्ञायामनाचितादीनाम् ॥ १४६ ॥ प्रवृद्धादीनाञ्च ॥ १४७ ॥ कारकाद्दत्तश्रुतयोरेवाशिषि ॥ १४८ ॥ इत्थंभूतेन कृतमिति च ॥ १४९ ॥ अनो भावकर्मवचनः ॥ १५० ॥ मन्क्तिन्व्याख्यानशयनासनस्थानयाजकादिक्रीताः ॥ १५१ ॥ सप्तम्याः पुण्यम् ॥ १५२ ॥ ऊनार्थकलहं तृतीयायाः ॥ १५३ ॥ मिश्रञ्चानुपसर्गमसन्धौ ॥ १५४ ॥ नञो गुणप्रतिषेधे संपाद्यर्हहितालमर्थास्तद्धिताः ॥ १५५ ॥ ययतोश्चातदर्थे ॥ १५६ ॥ अच्कावशक्तौ ॥ १५७ ॥ आक्रोशे च ॥ १५८ ॥ संज्ञायाम् ॥ १५९ ॥ कृत्योकेष्णुचार्वादयश्च ॥ १६० ॥ विभाषा तृन्नन्नतीक्ष्णशुचिषु ॥ १६१ ॥ बहुव्रीहाविदमेतत्तद्भ्यः प्रथमपूरणयोः क्रियागणने ॥ १६२ ॥ सङ्ख्यायाः स्तनः ॥ १६३ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ १६४ ॥ संज्ञायां मित्राजिनयोः ॥ १६५ ॥ व्यवायिनोऽन्तरम् ॥ १६६ ॥ मुखं स्वाङ्गम् ॥ १६७ ॥ नाव्ययदिक्छब्दगोमहत्स्थूलमुष्टिपृथुवत्सेभ्यः ॥ १६८ ॥ निष्ठोपमानादन्यतरस्याम् ॥ १६९ ॥ जातिकालसुखादिभ्योऽनाच्छादनात् क्तो कृतमितप्रतिपन्नाः ॥ १७० ॥ वा जाते ॥ १७१ ॥ नञ्सुभ्याम् ॥ १७२ ॥ कपि पूर्वम् ॥ १७३ ॥ ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम् ॥ १७४ ॥ बहोर्नञ्वदुत्तरपदभूम्नि ॥ १७५ ॥ न गुणादयोऽवयवाः ॥ १७६ ॥ उपसर्गात्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु ॥ १७७ ॥ वनं समासे ॥ १७८ ॥ अन्तः ॥ १७९ ॥ अन्तश्च ॥ १८० ॥ न निविभ्याम् ॥ १८१ ॥ परेरभितोभावि मण्डलम् ॥ १८२ ॥ प्रादस्वाङ्गं सञ्ज्ञायाम् ॥ १८३ ॥ निरुदकादीनि च ॥ १८४ ॥ अभेर्मुखम् ॥ १८५ ॥ अपाच्च ॥ १८६ ॥ स्फिगपूतवीणाञ्जोध्वकुक्षिसीरनाम नाम च ॥ १८७ ॥ अधेरुपरिस्थम् ॥ १८८ ॥ अनोरप्रधानकनीयसी ॥ १८९ ॥ पुरुषश्चान्वादिष्टः ॥ १९० ॥ अतेरकृत्पदे ॥ १९१ ॥ नेरनिधाने ॥ १९२ ॥ प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे ॥ १९३ ॥ उपाद्द्व्यजजिनमगौरादयः ॥ १९४ ॥ सोरवक्षेपणे ॥ १९५ ॥ विभाषोत्पुच्छे ॥ १९६ ॥ द्वित्रिभ्यां पाद्दन्मूर्द्धसु बहुव्रीहौ ॥ १९७ ॥ सक्थं चाक्रान्तात् ॥ १९८ ॥ परादिश्छन्दसि बहुलम् ॥ १९९ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

---

*बहुव्रीहावाशङ्कागौः साद्रेकानिस्यार्थ युक्ता न हास्तिनकुलतीरदेवताविभाषानिष्व्येकोनविंशतिः।

तृतीयपादारम्भः ॥

अलुगुत्तरपदे ॥ १ ॥ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ॥ २ ॥ ओजस्सहोम्भस्तमसस्तृतीयायाः ॥ ३ ॥ मनसः सञ्ज्ञायाम् ॥ ४ ॥ आज्ञायिनि च ॥ ५ ॥ आत्मनश्च पूरणे ॥ ६ ॥ वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः ॥ ७ ॥ परस्य च ॥ ८ ॥ हलदन्तात्सप्तम्याः सञ्ज्ञायाम् ॥ ९ ॥ कारनाम्नि च प्राचां हलादौ ॥ १० ॥ मध्याद्गुरौ ॥ ११ ॥ अमूर्द्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ॥ १२ ॥ बन्धे च विभाषा ॥ १३ ॥ तत्पुरुषे कृति बहुलम् ॥ १४ ॥ प्रावृट्शरत्कालदिवाञ्जे ॥ १५ ॥ विभाषा वर्षक्षरशरवरात् ॥ १६ ॥ घकालतनेषु कालनाम्नः ॥ १७ ॥ शयवासवासिष्वकालात् ॥ १८ ॥ नेन्सिद्धबध्नातिषु च ॥ १९ ॥ स्थे च भाषायाम् ॥ २० ॥ षष्ठ्या आक्रोशे ॥ २१ ॥ पुत्रेऽन्यतरस्याम् ॥ २२ ॥ ऋतो विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यः ॥ २३ ॥ विभाषा स्वसृपत्योः ॥ २४ ॥ आनङ् ऋतो द्वन्द्वे ॥ २५ ॥ देवता द्वन्द्वे च ॥ २६ ॥ ईदग्नेः सोमवरुणयोः ॥ २७ ॥ इद्वृद्धौ ॥ २८ ॥ दिवो द्यावा ॥ २९ ॥ दिवसश्च पृथिव्याम् ॥ ३० ॥ उषासोषसः ॥ ३१ ॥ मातरपितरावुदीचाम् ॥ ३२ ॥ पितरामातरा च छन्दसि ॥ ३३ ॥ स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु ॥ ३४ ॥ तसिलादिष्वाकृत्वसुचः ॥ ३५ ॥ क्यङ्मानिनोश्च ॥ ३६ ॥ न कोपधायाः ॥ ३७ ॥ सञ्ज्ञापूरण्योश्च ॥ ३८ ॥ वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धितस्यारक्तविकारे ॥ ३९ ॥ स्वाङ्गाच्चेतो मानिनि ॥ ४० ॥ जातेश्च ॥ ४१ ॥ पुंवत्कर्म्मधारयजातीयदेशीयेषु ॥ ४२ ॥ घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः ॥ ४३ ॥ नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम् ॥ ४४ ॥ उगितश्च ॥ ४५ ॥ आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः ॥ ४६ ॥ द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः ॥ ४७ ॥ त्रेस्त्रयः ॥ ४८ ॥ विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् ॥ ४९ ॥ हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु ॥ ५० ॥ वा शोकष्यञ्रोगेषु ॥ ५१ ॥ पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु ॥ ५२ ॥ पद्यत्यतदर्थे ॥ ५३ ॥ हिमकाषिहतिषु च ॥ ५४ ॥ ऋचः शे ॥ ५५ ॥ वा घोषमिश्रशब्देषु ॥ ५६ ॥ उदकस्योदः सञ्ज्ञायाम् ॥ ५७ ॥ पेषंवासवाहनधिषु च ॥ ५८ ॥

एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम् ॥ ५९ ॥ मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवीवधगाहेषु च ॥ ६० ॥ इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य ॥ ६१ ॥ एकतद्धिते च ॥ ६२ ॥ ङ्यापोः सञ्ज्ञाछन्दसोर्बहुलम् ॥ ६३ ॥ त्वे च ॥ ६४ ॥ इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु ॥ ६५ ॥ खित्यनव्ययस्य ॥ ६६ ॥ अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ॥ ६७ ॥ इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च ॥ ६८ ॥ वाचंयमपुरन्दरौ च ॥ ६९ ॥ कारे सत्यागदस्य ॥ ७० ॥ श्येनतिलस्य पाते ञे ॥ ७१ ॥ रात्रेः कृति विभाषा ॥ ७२ ॥ नलोपो नञः ॥ ७३ ॥ तस्मान्नुडचि ॥ ७४ ॥ नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या ॥ ७५ ॥ एकादिश्चैकस्य चादुक् ॥ ७६ ॥ न गोश्वाण्यिष्वन्यतरस्याम् ॥ ७७ ॥ सहस्य सः सञ्ज्ञायाम् ॥ ७८ ॥ ग्रन्थान्ताधिके च ॥ ७९ ॥ द्वितीये चानुपाख्ये ॥ ८० ॥ अव्ययीभावे चाकाले ॥ ८१ ॥ वोपसर्जनस्य ॥ ८२ ॥ प्रकृत्याऽऽशिष्यगोवत्सहलेषु ॥ ८३ ॥ समानस्य छन्दस्यमूर्द्धप्रभृत्युदर्केषु ॥ ८४ ॥ ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्ररूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु ॥ ८५ ॥ चरणे ब्रह्मचारिणि ॥ ८६ ॥ तीर्थे ये ॥ ८७ ॥ विभाषोदरे ॥ ८८ ॥ दृग्दृशवतुषु ॥ ८९ ॥ इदंकिमोरीश्की ॥ ९० ॥ आ सर्वनाम्नः ॥ ९१ ॥ विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतावप्रत्यये ॥ ९२ ॥ समः समि ॥ ९३ ॥ तिरसस्तिर्य्यलोपे ॥ ९४ ॥ सहस्य सध्रिः ॥ ९५ ॥ सधमादस्थयोश्छन्दसि ॥ ९६ ॥ द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत् ॥ ९७ ॥ ऊदनोर्देशे ॥ ९८ ॥ अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगाशीराशास्थास्थितोत्सुकोतिकारकरागच्छेषु ॥ ९९ ॥ अर्थे विभाषा ॥ १०० ॥ कोः कत्तत्पुरुषेऽचि ॥ १०१ ॥ रथवदयोश्च ॥ १०२ ॥ तृणे च जातौ ॥ १०३ ॥ का पथ्यक्षयोः ॥ १०४ ॥ ईषदर्थे ॥ १०५ ॥ विभाषा पुरुषे ॥ १०६ ॥ कवं चोष्णे ॥ १०७ ॥ पथि च छन्दसि ॥ १०८ ॥ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् ॥ १०९ ॥ सङ्ख्याविसायपूर्वस्याह्नस्याहन्नन्यतरस्यां ङौ ॥ ११० ॥ ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥ १११ ॥ सहिवहोरोदवर्णस्य ॥ ११२ ॥ साढ्यैसाढ्वासाढेति निगमे ॥ ११३ ॥ संहितायाम् ॥ ११४ ॥ कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणिभिन्नच्छिन्नच्छिद्रस्रुवस्वस्तिकस्य ॥ ११५ ॥ नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ ॥ ११६ ॥ वनगिर्योः

सञ्ज्ञायां कोटरकिंशुलकादीनाम् ॥ ११७ ॥ वले ॥ ११८ ॥ मतौ बह्वचोऽनजिरादीनाम् ॥ ११९ ॥ शरादीनाञ्च ॥ १२० ॥ इको वहेऽपीलोः ॥ १२१ ॥ उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् ॥ १२२ ॥ इकः काशे ॥ १२३ ॥ दस्ति ॥ १२४ ॥ अष्टनः सञ्ज्ञायाम् ॥ १२५ ॥ छन्दसि च ॥ १२६ ॥ चितेः कपि ॥ १२७ ॥ विश्वस्य वसुराटोः ॥ १२८ ॥ नरे सञ्ज्ञायाम् ॥ १२९ ॥ मित्रे चर्षौ ॥ १३० ॥ मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ ॥ १३१ ॥ ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् ॥ १३२ ॥ ऋचि तुनुघमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम् ॥ १३३ ॥ इकः सुञि ॥ १३४ ॥ द्व्यचोतस्तिङः ॥ १३५ ॥ निपातस्य च ॥ १३६ ॥ अन्येषामपि दृश्यते ॥ १३७ ॥ चौ ॥ १३८ ॥ संप्रसारणस्य ॥ १३९ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य तृतीय पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

अङ्गस्य ॥ १ ॥ हलः ॥ २ ॥ नामि ॥ ३ ॥ न तिसृचतसृ ॥ ४ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ५ ॥ नृ च ॥ ६ ॥ नोपधायाः ॥ ७ ॥ सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ ॥ ८ ॥ वा षपूर्वस्य निगमे ॥ ९ ॥ सान्तमहतः संयोगस्य ॥ १० ॥ अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम् ॥ ११ ॥ इन्हन्पूषार्य्यम्णां शौ ॥ १२ ॥ सौ च ॥ १३ ॥ अत्वसन्तस्य चाऽधातोः ॥ १४ ॥ अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति ॥ १५ ॥ अज्झनगमां सनि ॥ १६ ॥ तनोतेर्विभाषा ॥ १७ ॥ क्रमश्च क्त्वि ॥ १८ ॥ च्छ्वोः शूडनुनासिके च ॥ १९ ॥ ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च ॥ २० ॥ राल्लोपः ॥ २१ ॥ असिद्धवदत्राभात् ॥ २२ ॥ श्नान्नलोपः ॥ २३ ॥ अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति ॥ २४ ॥ दंशसञ्जस्वञ्जां शपि ॥ २५ ॥ रञ्जेश्च ॥ २६ ॥ घञि च भावकरणयोः ॥ २७ ॥

---

* अलुगुत्तरपदे पञ्चयाजातेरिकोऽव्ययीभावे कोः कदिको बहु एकोनविंशतिः ॥

॥ २७ ॥ स्यदो जवे ॥ २८ ॥ अवोदैधौद्मप्रश्रथहिमश्रथाः ॥ २९ ॥ नाञ्चेः पूजायाम् ॥ ३० ॥ क्त्वि स्कन्दस्यन्दोः ॥ ३१ ॥ जान्तनशां विभाषा ॥ ३२ ॥ भञ्जेश्च चिणि ॥ ३३ ॥ शास इदङ्हलोः ॥ ३४ ॥ शा हौ ॥ ३५ ॥ हन्तेर्जः ॥ ३६ ॥ अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति ॥ ३७ ॥ वाल्यपि ॥ ३८ ॥ न क्तिचि दीर्घश्च ॥ ३९ ॥ गमः क्वौ ॥ ४० ॥ विड्वनोरनुनासिकस्याऽऽत् ॥ ४१ ॥ जनसनखनां सञ्झलोः ॥ ४२ ॥ ये विभाषा ॥ ४३ ॥ तनोतेर्यकि ॥ ४४ ॥ सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्यतरस्याम् ॥ ४५ ॥ आर्द्धधातुके ॥ ४६ ॥ भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम् ॥ ४७ ॥ अतो लोपः ॥ ४८ ॥ यस्य हलः ॥ ४९ ॥ क्यस्य विभाषा ॥ ५० ॥ णेरनिटि ॥ ५१ ॥ निष्ठायां सेटि ॥ ५२ ॥ जनिता मन्त्रे ॥ ५३ ॥ शमिता यज्ञे ॥ ५४ ॥ अयामन्ताल्वाय्येत्न्विष्णुषु ॥ ५५ ॥ ल्यपि लघुपूर्वात् ॥ ५६ ॥ विभाषापः ॥ ५७ ॥ युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि ॥ ५८ ॥ क्षियः ॥ ५९ ॥ निष्ठायामण्यदर्थे ॥ ६० ॥ वा क्रोशदैन्ययोः ॥ ६१ ॥ स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च ॥ ६२ ॥ दीङो युडचि क्ङिति ॥ ६३ ॥ आतो लोप इटि च ॥ ६४ ॥ ईद्यति ॥ ६५ ॥ घुमास्थागापाजहातिसां हलि ॥ ६६ ॥ एर्लिङि ॥ ६७ ॥ वान्यस्य संयोगादेः ॥ ६८ ॥ न ल्यपि ॥ ६९ ॥ मयतेरिदन्यतरस्याम् ॥ ७० ॥ लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः ॥ ७१ ॥ आडजादीनाम् ॥ ७२ ॥ छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ७३ ॥ न माङ्योगे ॥ ७४ ॥ बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेपि ॥ ७५ ॥ इरयो रे ॥ ७६ ॥ अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ ॥ ७७ ॥ अभ्यासस्यासवर्णे ॥ ७८ ॥ स्त्रियाः ॥ ७९ ॥ वाम्शसोः ॥ ८० ॥ इणो यण् ॥ ८१ ॥ एरनेकाचोसंयोगपूर्वस्य ॥ ८२ ॥ ओः सुपि ॥ ८३ ॥ वर्षाभ्वश्च ॥ ८४ ॥ न भूसुधियोः ॥ ५ ॥ छन्दस्युभयथा ॥ ८६ ॥ हुश्नुवोः सार्वधातुके ॥ ८७ ॥ भुवो वुग् लुङ्लिटोः ॥ ८८ ॥ ऊदुपधाया गोहः ॥ ८९ ॥ दोषो णौ ॥ ९० ॥ वा चित्तविरागे ॥ ९१ ॥ मितां ह्रस्वः ॥ ९२ ॥ चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम् ॥ ९३ ॥ खचि ह्रस्वः ॥ ९४ ॥ ह्लादो निष्ठायाम् ॥ ९५ ॥ छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य ॥ ९६ ॥ इस्मन्त्रन्क्विषु च ॥ ९७ ॥ गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि ॥ ९८ ॥ तनिपत्योश्छन्दसि ॥ ९९ ॥ घसिभसोर्हलि च ॥ १०० ॥ हुझल्भ्यो

हेर्द्धिः ॥ १०१ ॥ श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि ॥ १०२ ॥ अङितश्च ॥ १०३ ॥ चिणो लुक् ॥ १०४ ॥ अतो हेः ॥ १०५ ॥ उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ॥ १०६ ॥ लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः ॥ १०७ ॥ नित्यं करोतेः ॥ १०८ ॥ ये च ॥ १०९ ॥ अत उत्सार्वधातुके ॥ ११० ॥ श्नसोरल्लोपः ॥ १११ ॥ श्नाभ्यस्तयोरातः ॥ ११२ ॥ ईहल्यघोः ॥ ११३ ॥ इद्दरिद्रस्य ॥ ११४ ॥ भियोऽन्यतरस्याम् ॥ ११५ ॥ जहातेश्च ॥ ११६ ॥ आ च हौ ॥ ११७ ॥ लोपो यि ॥ ११८ ॥ घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च ॥ ११९ ॥ अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि ॥ १२० ॥ थलि च सेटि ॥ १२१ ॥ तॄफलभजत्रपश्च ॥ १२२ ॥ राधो हिंसायाम् ॥ १२३ ॥ वा जॄभ्रमुत्रसाम् ॥ १२४ ॥ फणां च सप्तानाम् ॥ १२५ ॥ न शसददवादिगुणानाम् ॥ १२६ ॥ अर्वणस्त्रसावनञः ॥ १२७ ॥ मघवा बहुलम् ॥ १२८ ॥ भस्य ॥ १२९ ॥ पादः पत् ॥ १३० ॥ वसोः संप्रसारणम् ॥ १३१ ॥ वाह ऊठ् ॥ १३२ ॥ श्वयुवमघोनामतद्धिते ॥ १३३ ॥ अल्लोपोनः ॥ १३४ ॥ षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि ॥ १३५ ॥ विभाषा ङिश्योः ॥ १३६ ॥ न संयोगाद्वमन्तात् ॥ १३७ ॥ अचः ॥ १३८ ॥ उद ईत् ॥ १३९ ॥ आतो धातोः ॥ १४० ॥ मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः ॥ १४१ ॥ तिविंशतेर्डिति ॥ १४२ ॥ टेः ॥ १४३ ॥ नस्तद्धिते ॥ १४४ ॥ अह्नष्टखोरेव ॥ १४५ ॥ ओर्गुणः ॥ १४६ ॥ ढे लोपोऽकद्र्वाः ॥ १४७ ॥ यस्येति च ॥ १४८ ॥ सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः ॥ १४९ ॥ हलस्तद्धितस्य ॥ १५० ॥ आपत्यस्य च तद्धितेनाति ॥ १५१ ॥ क्यच्व्योश्च ॥ १५२ ॥ बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक् ॥ १५३ ॥ तुरिष्ठेमेयस्सु ॥ १५४ ॥ टेः ॥ १५५ ॥ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः ॥ १५६ ॥ प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः ॥ १५७ ॥ बहोर्लोपो भू च बहोः ॥ १५८ ॥ इष्ठस्य यिट् च ॥ १५९ ॥ ज्यादादीयसः ॥ १६० ॥ र ऋतो हलादेर्लघोः ॥ १६१ ॥ विभाषर्जोश्छन्दसि ॥ १६२ ॥ प्रकृत्यैकाच् ॥ १६३ ॥ इनण्यनपत्ये ॥ १६४ ॥ गाथिविदथिकेशिगणिपणिनश्च ॥ १६५ ॥ संयोगादिश्च ॥ १६६ ॥

अन् ॥ १६७ ॥ ये चाभावकर्म्मणोः ॥ १६८ ॥ आत्माध्वानौ खे ॥ १६९ ॥ नम पूर्व्वोऽपत्ये वर्म्मणः ॥ १७० ॥ ब्राह्मोऽजातौ ॥ १७१ ॥ कार्म्मस्ताच्छील्ये ॥ १७२ ॥ औक्षमनपत्ये ॥ १७३ ॥ दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिकजैह्माशिनेयवासिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेयहिरण्मयानि ॥ १७४ ॥ ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वीहिरण्ययानि छन्दसि ॥ १७५ ॥ *

इति षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

षष्ठाध्यायस्समाप्तः ॥

---
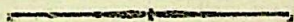
* यञ्जस्य राल्लोपो विड्वनोर्वाकोशेगोयण् दुमत्रूव्यस्थालिचसंधेषु रञ्जः पञ्चदश ॥

अथ सप्तमाध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

युवोरनाकौ ॥ १ ॥ आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् ॥ २ ॥ झोऽन्तः ॥ ३ ॥ अदभ्यस्तात् ॥ ४ ॥ आत्मनेपदेष्वनतः ॥ ५ ॥ शीङो रुट् ॥ ६ ॥ वेत्तेर्विभाषा ॥ ७ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ८ ॥ अतो भिस ऐस् ॥ ९ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १० ॥ नेदमदसोरकोः ॥ ११ ॥ टाङसिङसामिनात्स्याः ॥ १२ ॥ ङेर्यः ॥ १३ ॥ सर्वनाम्नः स्मै ॥ १४ ॥ ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ ॥ १५ ॥ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा ॥ १६ ॥ जसः शी ॥ १७ ॥ औङ आपः ॥ १८ ॥ नपुंसकाच्च ॥ १९ ॥ जश्शसोः शिः ॥ २० ॥ अष्टाभ्य औश् ॥ २१ ॥ षड्भ्यो लुक् ॥ २२ ॥ स्वमोर्नपुंसकात् ॥ २३ ॥ अतोऽम् ॥ २४ ॥ अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः ॥ २५ ॥ नेतराच्छन्दसि ॥ २६ ॥ युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् ॥ २७ ॥ ङे प्रथमयोरम् ॥ २८ ॥ शसो न ॥ २९ ॥ भ्यसोऽभ्यम् ॥ ३० ॥ पञ्चम्या अत् ॥ ३१ ॥ एकवचनस्य च ॥ ३२ ॥ साम आकम् ॥ ३३ ॥ आत औ णलः ॥ ३४ ॥ तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम् ॥ ३५ ॥ विदेः शतुर्वसुः ॥ ३६ ॥ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् ॥ ३७ ॥ क्त्वापि छन्दसि ॥ ३८ ॥ सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ॥ ३९ ॥ अमो मश् ॥ ४० ॥ लोपस्त आत्मनेपदेषु ॥ ४१ ॥ ध्वमो ध्वात् ॥ ४२ ॥ यजध्वैनमिति च ॥ ४३ ॥ तस्य तात् ॥ ४४ ॥ तप्तनप्तनथनाश्च ॥ ४५ ॥ इदन्तो मसि ॥ ४६ ॥ क्त्वो यक् ॥ ४७ ॥ इष्ट्वीनमिति च ॥ ४८ ॥ स्नात्व्यादयश्च ॥ ४९ ॥ आज्जसेरसुक् ॥ ५० ॥ अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि ॥ ५१ ॥ आमि सर्वनाम्नः सुट् ॥ ५२ ॥ त्रेस्त्रयः ॥ ५३ ॥ ह्रस्वनद्यापो नुट् ॥ ५४ ॥ षट्चतुर्भ्यश्च ॥ ५५ ॥ श्रीग्रामण्योश्छन्दसि ॥ ५६ ॥

गोः पादान्ते ॥ ५७ ॥ इदितो नुम् धातोः ॥ ५८ ॥ शे मुचादीनाम् ॥ ५९ ॥ मस्जिनशोर्झलि ॥ ६० ॥ रधिजभोरचि ॥ ६१ ॥ नेट्यलिटि रधेः ॥ ६२ ॥ रभेरशब्लिटोः ॥ ६३ ॥ लभेश्च ॥ ६४ ॥ आङो यि ॥ ६५ ॥ उपात्प्रशंसायाम् ॥ ६६ ॥ उपसर्गात्खल्घञोः ॥ ६७ ॥ न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् ॥ ६८ ॥ विभाषा चिण्णमुलोः ॥ ६९ ॥ उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः ॥ ७० ॥ युजेरसमासे ॥ ७१ ॥ नपुंसकस्य झलचः ॥ ७२ ॥ इकोऽचि विभक्तौ ॥ ७३ ॥ तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य ॥ ७४ ॥ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ ७५ ॥ छन्दस्यपि दृश्यते ॥ ७६ ॥ ई च द्विवचने ॥ ७७ ॥ नाभ्यस्ताच्छतुः ॥ ७८ ॥ वा नपुंसकस्य ॥ ७९ ॥ आच्छीनद्योर्नुम् ॥ ८० ॥ शप्श्यनोर्नित्यम् ॥ ८१ ॥ सावनडुहः ॥ ८२ ॥ दृक्स्ववःस्वतवसां छन्दसि ॥ ८३ ॥ दिव औत् ॥ ८४ ॥ पथिमथ्यृभुक्षामात् ॥ ८५ ॥ इतोऽत्सर्वनामस्थाने ॥ ८६ ॥ थो न्थः ॥ ८७ ॥ भस्य टेर्लोपः ॥ ८८ ॥ पुंसोऽसुङ् ॥ ८९ ॥ गोतो णित् ॥ ९० ॥ णलुत्तमो वा ॥ ९१ ॥ सख्युरसम्बुद्धौ ॥ ९२ ॥ अनङ् सौ ॥ ९३ ॥ ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च ॥ ९४ ॥ तृज्वत्क्रोष्टुः ॥ ९५ ॥ स्त्रियां च ॥ ९६ ॥ विभाषा तृतीयादिष्वचि ॥ ९७ ॥ चतुरनडुहोरामुदात्तः ॥ ९८ ॥ अम् सम्बुद्धौ ॥ ९९ ॥ ऋत इद्धातोः ॥ १०० ॥ उपधायाश्च ॥ १०१ ॥ उदोष्ठ्यपूर्वस्य ॥ १०२ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ १०३ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु ॥ १ ॥ अतो ल्रान्तस्य ॥ २ ॥ वदव्रजहलन्तस्याचः ॥ ३ ॥ नेटि ॥ ४ ॥ ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् ॥ ५ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ६ ॥ अतो हलादेर्लघोः ॥ ७ ॥ नेड्वशि कृति ॥ ८ ॥ तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च ॥ ९ ॥ एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ॥ १० ॥ श्र्युकः किति

* पुवोरष्टाभ्यो लोपश्च रधिजभो शप्श्यनोरुपधायाश्चीणि ॥

॥ ११ ॥ सनि ग्रहगुहोश्च ॥ १२ ॥ कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि ॥ १३ ॥ श्वीदितो निष्ठायाम् ॥ १४ ॥ यस्य विभाषा ॥ १५ ॥ आदितश्च ॥ १६ ॥ विभाषा भावादिकर्म्मणोः ॥ १७ ॥ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमः सक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु ॥ १८ ॥ धृषिशसी वैयात्ये ॥ १९ ॥ दृढः स्थूलबलयोः ॥ २० ॥ प्रभौ परिवृढः ॥ २१ ॥ कृच्छ्रगहनयोः कषः ॥ २२ ॥ घुषिरविशब्दने ॥ २३ ॥ अर्देः संनिविभ्यः ॥ २४ ॥ अभेश्चाविदूर्य्ये ॥ २५ ॥ णेरध्ययने वृत्तम् ॥ २६ ॥ वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः ॥ २७ ॥ रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम् ॥ २८ ॥ हृषेर्लोमसु ॥ २९ ॥ अपचितश्च ॥ ३० ॥ ह्रु ह्वरेश्छन्दसि ॥ ३१ ॥ अपरिह्वृताश्च ॥ ३२ ॥ सोमे ह्वरितः॥३३॥ प्रसितस्कभितस्तभितोत्तभितचत्तविकस्ताविशस्तृशंस्तृशास्तृतरुतृतरूतृवरुतृवरूतृवरुत्रीरुज्ज्वलितिक्षरितिक्षमितिवमित्यमितीति च ॥ ३४ ॥ आर्द्धधातुकस्येड्वलादेः ॥ ३५ ॥ स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते ॥ ३६ ॥ ग्रहोऽलिटि दीर्घः ॥ ३७ ॥ वृतो वा ॥ ३८ ॥ न लिङि ॥ ३९ ॥ सिचि च परस्मैपदेषु ॥ ४० ॥ इट् सनि वा ॥ ४१ ॥ लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु ॥ ४२ ॥ ऋतश्च संयोगादेः ॥ ४३ ॥ स्वरतिसूतिसूयति धूञूदितो वा ॥ ४४ ॥ रधादिभ्यश्च ॥ ४५ ॥ निरः कुषः ॥ ४६ ॥ इण् निष्ठायाम् ॥ ४७ ॥ तीषसहलुभरुषरिषः ॥ ४८ ॥ सनीवन्तर्द्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम् ॥ ४९ ॥ क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः ॥ ५० ॥ पूङश्च ॥ ५१ ॥ वसतिक्षुधोरिट् ॥ ५२ ॥ अञ्चेः पूजायाम् ॥ ५३ ॥ लुभो विमोहने ॥ ५४ ॥ जॄव्रश्च्योः क्त्वि ॥ ५५ ॥ उदितो वा ॥ ५६ ॥ सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः ॥ ५७ ॥ गमेरिट् परस्मैपदेषु ॥ ५८ ॥ न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ॥ ५९ ॥ तासि च क्लृपः ॥ ६० ॥ अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम् ॥ ६१ ॥ उपदेशेऽत्वतः ॥ ६२ ॥ ऋतो भारद्वाजस्य ॥ ६३ ॥ बभूथाततन्थजगृम्भववर्थेति निगमे ॥ ६४ ॥ विभाषा सृजिदृशोः ॥ ६५ ॥ इडत्यर्तिव्ययतीनाम् ॥ ६६ ॥ वस्वेकाजाद्घसाम् ॥ ६७ ॥ विभाषा गमहनविदविशाम् ॥ ६८ ॥ सनिंससनिवांसम् ॥ ६९ ॥ ऋद्धनोः स्ये ॥ ७० ॥ अञ्जेः सिचि ॥ ७१ ॥ स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु

॥ ७२ ॥ यमरमनमातां सक्च ॥ ७३ ॥ स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि ॥ ७४ ॥ किरश्च पञ्चभ्यः ॥ ७५ ॥ रुदादिभ्यः सार्वधातुके ॥ ७६ ॥ ईशः से ॥ ७७ ॥ ईडजनोर्ध्वे च ॥ ७८ ॥ लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य ॥ ७९ ॥ अतो येयः ॥ ८० ॥ आतो ङितः ॥ ८१ ॥ आने मुक् ॥ ८२ ॥ ईदासः ॥ ८३ ॥ अष्टन आ विभक्तौ ॥ ८४ ॥ रायो हलि ॥ ८५ ॥ युष्मदस्मदोरनादेशे ॥ ८६ ॥ द्वितीयायाञ्च ॥ ८७ ॥ प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् ॥ ८८ ॥ योऽचि ॥ ८९ ॥ शेषे लोपः ॥ ९० ॥ मपर्य्यन्तस्य ॥ ९१ ॥ युवावौ द्विवचने ॥ ९२ ॥ यूयवयौ जसि ॥ ९३ ॥ त्वाहौ सौ ॥ ९४ ॥ तुभ्यमह्यौ ङयि ॥ ९५ ॥ तवममौ ङसि ॥ ९६ ॥ त्वमावेकवचने ॥ ९७ ॥ प्रत्ययोत्तरपदयोश्च ॥ ९८ ॥ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ ॥ ९९ ॥ अचि र ऋतः ॥ १०० ॥ जराया जरसन्यतरस्याम् ॥ १०१ ॥ त्यदादीनामः ॥ १०२ ॥ किमः कः ॥ १०३ ॥ कु तिहोः ॥ १०४ ॥ क्वाति ॥ १०५ ॥ तदोः सः सावनन्त्ययोः ॥ १०६ ॥ अदस औ सुलोपश्च ॥ १०७ ॥ इदमो मः ॥ १०८ ॥ दश्च ॥ १०९ ॥ यः सौ ॥ ११० ॥ इदोय् पुंसि ॥ १११ ॥ अनाप्यकः ॥ ११२ ॥ हलि लोपः ॥ ११३ ॥ मृजेर्वृद्धिः ॥ ११४ ॥ अचो ञ्णिति ॥ ११५ ॥ अत उपधायाः ॥ ११६ ॥ तद्धितेष्वचामादेः ॥ ११७ ॥ किति च ॥ ११८ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

देविकाशिंशपादित्यवाड्दीर्घसत्रश्रेयसामात् ॥ १ ॥ केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः ॥ २ ॥ न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् ॥ ३ ॥ द्वारादीनाञ्च ॥ ४ ॥ न्यग्रोधस्य च केवलस्य ॥ ५ ॥ न कर्मव्यतिहारे ॥ ६ ॥ स्वागतादीनाञ्च ॥ ७ ॥ श्वादेरिञि ॥ ८ ॥ पदान्तस्यान्यतरस्याम् ॥ ९ ॥ उत्तरपदस्य ॥ १० ॥ अवयवादृतोः ॥ ११ ॥ सुसर्वार्द्धाज्जनपदस्य ॥ १२ ॥ दिशोऽमद्राणाम् ॥ १३ ॥ प्राचां ग्रामनगराणाम् ॥ १४ ॥ संख्यायाः संवत्सरसङ्ख्यस्य च ॥ १५ ॥ वर्षस्याभविष्यति ॥ १६ ॥ परिमाणान्तस्यासञ्ज्ञाशा-

---

* क्विचित् प्रमादिदमन्यन्नस्त्रास्वदातो जराया अष्टादश ।

ण्योः ॥ १७ ॥ जे प्रोष्ठपदानाम् ॥१८॥ हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च ॥ १९॥ अनुशतिकादीनाञ्च ॥ २० ॥ देवताद्वन्द्वे च ॥ २१ ॥ नेन्द्रस्य परस्य ॥ २२ ॥ दीर्घाच्च वरुणस्य ॥ २३ ॥ प्राचां नगरान्ते ॥ २४ ॥ जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषितमुत्तरम् ॥ २५ ॥ अर्द्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ॥ २६ ॥ नातः परस्य ॥ २७ ॥ प्रवाहणस्य ढे ॥ २८ ॥ तत्प्रत्ययस्य च ॥ २९ ॥ नञः शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशलनिपुणानाम् ॥ ३० ॥ यथातथयथापुरयोः पर्य्यायेण ॥ ३१ ॥ हनस्तोचिण्णलोः ॥ ३२ ॥ आतो युक् चिण् कृतोः ॥ ३३ ॥ नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः ॥ ३४ ॥ जनिवध्योश्च ॥ ३५ ॥ अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुग् णौ ॥ ३६ ॥ शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् ॥ ३७ ॥ वो विधूनने जुक् ॥ ३८ ॥ लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहनिपातने ॥ ३९ ॥ भियो हेतुभये षुक् ॥ ४० ॥ स्फायो वः ॥ ४१ ॥ शदेरगतौ तः ॥ ४२ ॥ रुहः पोन्यतरस्याम् ॥ ४३ ॥ प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः ॥ ४४ ॥ न यासयोः ॥ ४५ ॥ उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः ॥ ४६ ॥ भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वानञ्पूर्वाणामपि ॥४७॥ अभाषितपुंस्काच्च ॥ ४८ ॥ आदाचार्य्याणाम् ॥ ४९ ॥ ठस्येकः ॥ ५० ॥ इसुसुक्तान्तात्कः ॥ ५१ ॥ चजोः कुघिण्ण्यतोः ॥ ५२ ॥ न्यङ्क्वादीनाञ्च ॥ ५३ ॥ हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु ॥ ५४ ॥ अभ्यासाच्च ॥ ५५ ॥ हेरचङि ॥ ५६ ॥ सन्लिटोर्जेः ॥ ५७ ॥ विभाषा चेः ॥ ५८ ॥ न क्वादेः ॥ ५९ ॥ अजिव्रज्योश्च ॥ ६० ॥ भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः ॥ ६१ ॥ प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे ॥ ६२ ॥ वञ्चेर्गतौ ॥ ६३ ॥ ओक उचः के ॥ ६४ ॥ ण्य आवश्यके ॥ ६५ ॥ यजयाचरुचप्रवचर्चश्च ॥ ६६ ॥ वचोऽशब्दसञ्ज्ञायाम् ॥ ६७ ॥ प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे ॥ ६८ ॥ भोज्यं भक्ष्ये ॥ ६९ ॥ घोर्लोपो लेटि वा ॥ ७० ॥ ओतः श्यनि ॥ ७१ ॥ क्सस्याचि ॥ ७२ ॥ लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये ॥ ७३ ॥ शमामष्टानां दीर्घः श्यनि ॥ ७४ ॥ ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ॥ ७५ ॥ क्रमः परस्मैपदेषु ॥ ७६ ॥ इषुगमियमां छः ॥ ७७ ॥ पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ॥ ७८ ॥ ज्ञाजनोर्जा

॥ ७९ ॥ प्वादीनां ह्रस्वः ॥ ८० ॥ मीनातेर्निगमे ॥ ८१ ॥ मिदेर्गुणः ॥ ८२ ॥ जुसि च ॥ ८३ ॥ सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः ॥ ८४ ॥ जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु ॥ ८५ ॥ पुगन्तलघूपधस्य च ॥ ८६ ॥ नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके ॥ ८७ ॥ भूसुवोस्तिङि ॥ ८८ ॥ उतो वृद्धिर्लुकि हलि ॥ ८९ ॥ ऊर्णोतेर्विभाषा ॥ ९० ॥ गुणोऽपृक्ते ॥ ९१ ॥ तृणह इम् ॥ ९२ ॥ ब्रुव ईट् ॥ ९३ ॥ यङो वा ॥ ९४ ॥ तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके ॥ ९५ ॥ अस्तिसिचोऽपृक्ते ॥ ९६ ॥ बहुलञ्छन्दसि ॥ ९७ ॥ रुदश्च पञ्चभ्यः ॥ ९८ ॥ अड् गार्ग्यगालवयोः ॥ ९९ ॥ अदः सर्वेषाम् ॥ १०० ॥ अतो दीर्घो यञि ॥ १०१ ॥ सुपि च ॥ १०२ ॥ बहुवचने झल्येत् ॥ १०३ ॥ ओसि च ॥ १०४ ॥ आङि चापः ॥ १०५ ॥ सम्बुद्धौ च ॥ १०६ ॥ अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥ १०७ ॥ ह्रस्वस्य गुणः ॥ १०८ ॥ जसि च ॥ १०९ ॥ ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः ॥ ११० ॥ घेर्ङिति ॥ १११ ॥ आण् नद्याः ॥ ११२ ॥ याडापः ॥ ११३ ॥ सर्वनाम्नस्याड्ढ्रस्वश्च ॥ ११४ ॥ विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम् ॥ ११५ ॥ ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ॥ ११६ ॥ इदुद्भ्याम् ॥ ११७ ॥ औत् ॥ ११८ ॥ अच्च घेः ॥ ११९ ॥ आङो नास्त्रियाम् ॥ १२० ॥*

इति सप्तमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः ॥ १ ॥ नाग्लोपिशास्वृदिताम् ॥ २ ॥ भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् ॥ ३ ॥ लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य ॥ ४ ॥ तिष्ठतेरित् ॥ ५ ॥ जिघ्रतेर्वा ॥ ६ ॥ उर्ऋत् ॥ ७ ॥ नित्यं छन्दसि ॥ ८ ॥ दयतेर्दिगि लिटि ॥ ९ ॥ ऋतश्च संयोगादेर्गुणः ॥ १० ॥ ऋच्छत्यॄताम् ॥ ११ ॥ शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ॥ १२ ॥ केऽणः ॥ १३ ॥ न कपि ॥ १४ ॥ आपोऽन्यतरस्याम् ॥ १५ ॥ ऋदृशोऽङि गुणः ॥ १६ ॥ अस्यतेस्थुक् ॥ १७ ॥ श्वयतेरः ॥ १८ ॥ पतः पुम्

* दैविका देवसा स्फायो भुजन्युब्जौ मीनातेरंशोर्दीर्घो विंशतिः ॥

॥ १९ ॥ वच उम् ॥ २० ॥ शीङः सार्वधातुके गुणः ॥ २१ ॥ अयङ्यि क्ङिति ॥ २२ ॥ उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः ॥ २३ ॥ एतेर्लिङि ॥ २४ ॥ अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः ॥ २५ ॥ च्वौ च ॥ २६ ॥ रीङृतः ॥ २७ ॥ रिङ् शयग्लिङ्क्षु ॥ २८ ॥ गुणोर्त्तिसंयोगाद्योः ॥ २९ ॥ यङि च ॥ ३० ॥ ई घ्राध्मोः ॥ ३१ ॥ अस्य च्वौ ॥ ३२ ॥ क्यचि च ॥ ३३ ॥ अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्द्धेषु ॥ ३४ ॥ न छन्दस्यपुत्रस्य ॥ ३५ ॥ दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति ॥ ३६ ॥ अश्वाघस्यात् ॥ ३७ ॥ देवसुम्नयोर्यजुषि काठके ॥ ३८ ॥ कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः ॥ ३९ ॥ द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति ॥ ४० ॥ शाछोरन्यतरस्याम् ॥ ४१ ॥ दधातेर्हिः ॥ ४२ ॥ जहातेश्च क्त्वि ॥ ४३ ॥ विभाषा छन्दसि ॥ ४४ ॥ सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय च ॥ ४५ ॥ दो दद् घोः ॥ ४६ ॥ अच उपसर्गात्तः ॥ ४७ ॥ अपो भि ॥ ४८ ॥ सः स्यार्द्धधातुके ॥ ४९ ॥ तासस्त्योर्लोपः ॥ ५० ॥ रि च ॥ ५१ ॥ ह एति ॥ ५२ ॥ यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः ॥ ५३ ॥ सनिमीमाघुरभलभशकपतपदामच इस् ॥ ५४ ॥ आप्ज्ञप्यृधामीत् ॥ ५५ ॥ दम्भ इच्च ॥ ५६ ॥ मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा ॥ ५७ ॥ अत्र लोपोऽभ्यासस्य ॥ ५८ ॥ ह्रस्वः ॥ ५९ ॥ हलादिः शेषः ॥ ६० ॥ शर्पूर्वाः खयः ॥ ६१ ॥ कुहोश्चुः ॥ ६२ ॥ न कवतेर्यङि ॥ ६३ ॥ कृपेश्छन्दसि ॥ ६४ ॥ दाधर्तिदर्द्धर्तिदर्द्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संसनिष्यदत्करिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्रद्दविध्वतो दविद्युतत्तरित्रतः सरीसृपतं वरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च ॥ ६५ ॥ उरत् ॥ ६६ ॥ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् ॥ ६७ ॥ व्यथो लिटि ॥ ६८ ॥ दीर्घ इणः किति ॥ ६९ ॥ अत आदेः ॥ ७० ॥ तस्मान्नुड् द्विहलः ॥ ७१ ॥ अश्नोतेश्च ॥ ७२ ॥ भवतेरः ॥ ७३ ॥ ससूवेति निगमे ॥ ७४ ॥ निजान्त्रयाणां गुणः श्लौ ॥ ७५ ॥ भृञामित् ॥ ७६ ॥ अर्तिपिपर्त्योश्च ॥ ७७ ॥ बहुलं छन्दसि ॥ ७८ ॥ सन्यतः ॥ ७९ ॥ ओः पुयण्ज्यपरे ॥ ८० ॥ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनां वा ॥ ८१ ॥ गुणो यङ्लुकोः ॥ ८२ ॥ दीर्घोऽकितः ॥ ८३ ॥ नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम् ॥ ८४ ॥ नुगतोऽनुनासिकान्तस्य ॥ ८५ ॥ जपजभदहदशभञ्जपशां च ॥ ८६ ॥

चरफलोश्च ॥ ८७ ॥ उत्परस्याऽतः ॥ ८८ ॥ ति च ॥ ८९ ॥ रीगृदुपधस्य च ॥ ९० ॥ रुग्रि कौ च लुकि ॥ ९१ ॥ ऋतश्च ॥ ९२ ॥ सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे ॥ ९३ ॥ दीर्घो लघोः ॥ ९४ ॥ अत्स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तॄस्पशाम् ॥ ९५ ॥ विभाषा वेष्टिचेष्टयोः ॥ ९६ ॥ ई च गणः ॥ ९७ ॥ *

इति सप्तमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

सप्तमाध्यायश्च समाप्तः ॥ ७ ॥

---

* णौच श्रीकः शाच्छोरशपूर्वाः स्रवति समवदा ॥

अथाष्टमाऽध्यायारम्भः ॥

तत्र प्रथमपादारम्भः ॥

सर्वस्य द्वे ॥ १ ॥ तस्य परमाम्रेडितम् ॥ २ ॥ अनुदात्तञ्च ॥ ३ ॥ नित्यवीप्सयोः ॥ ४ ॥ परेर्वर्ज्जने ॥ ५ ॥ प्रसमुपोदः पादपूरणे ॥ ६ ॥ उपर्य्यध्यधसः सामीप्ये ॥ ७ ॥ वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयासम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु ॥ ८ ॥ एकं बहुव्रीहिवत् ॥ ९ ॥ आबाधे च ॥ १० ॥ कर्मधारयवदुत्तरेषु ॥ ११ ॥ प्रकारे गुणवचनस्य ॥ १२ ॥ अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम् ॥ १३ ॥ यथास्वे यथायथम् ॥ १४ ॥ द्वन्द्वं रहस्यमर्य्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाऽभिव्यक्तिषु ॥ १५ ॥ पदस्य ॥ १६ ॥ पदात् ॥ १७ ॥ अनुदात्तंसर्वमपादादौ ॥ १८ ॥ आमन्त्रितस्य च ॥ १९ ॥ युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ ॥ २० ॥ बहुवचनस्य वस्नसौ ॥ २१ ॥ तेमयावेकवचनस्य ॥ २२ ॥ त्वामौ द्वितीयायाः ॥ २३ ॥ न च वाहाहैवयुक्ते ॥ २४ ॥ पश्यार्थैश्चानालोचने ॥ २५ ॥ सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा ॥ २६ ॥ तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्णयोः ॥ २७ ॥ तिङ्ङतिङः ॥ २८ ॥ न लुट् ॥ २९ ॥ निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम् ॥ ३० ॥ नह प्रत्यारम्भे ॥ ३१ ॥ सत्यम्प्रश्ने ॥ ३२ ॥ अङ्गाप्रातिलोम्ये ॥ ३३ ॥ हि च ॥ ३४ ॥ छन्दस्यऽनेकमपि साकाङ्क्षम् ॥ ३५ ॥ यावद्यथाभ्याम् ॥ ३६ ॥ पूजायां नानन्तरम् ॥ ३७ ॥ उपसर्गव्यपेतञ्च ॥ ३८ ॥ तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम् ॥ ३९ ॥ अहो च ॥ ४० ॥ शेषे विभाषा ॥ ४१ ॥ पुरा चपरीप्सायाम् ॥ ४२ ॥ नन्वित्यनुज्ञैषणायाम् ॥ ४३ ॥ किं क्रिया प्रश्नेनुपसर्गमप्रतिषिद्धम् ॥ ४४ ॥ लोपे विभाषा ॥ ४५ ॥ एहि

अन्ये प्रहासे लृट् ॥ ४६ ॥ जात्वपूर्वम् ॥ ४७ ॥ किंवृत्तञ्च चिदुत्तरम् ॥ ४८ ॥ आहो उताहो चाऽनन्तरम् ॥ ४९ ॥ शेषे विभाषा ॥ ५० ॥ गत्यर्थलोटा लृण् न चेत्कारकं सर्वान्यत् ॥ ५१ ॥ लोट् च ॥ ५२ ॥ विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम् ॥ ५३ ॥ हन्त च ॥ ५४ ॥ आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके ॥ ५५ ॥ यद्धि-तु परं छन्दसि ॥ ५६ ॥ चनचिदिवगोत्रादितद्धिताऽम्रेडितेष्वगतेः ॥ ५७ ॥ चा-दिषु च ॥ ५८ ॥ चवायोगे प्रथमा ॥ ५९ ॥ हेति क्षियायाम् ॥ ६० ॥ अहेति विनियोगे च ॥ ६१ ॥ चाहलोप एवेत्यवधारणम् ॥ ६२ ॥ चादिलोपे विभाषा ॥ ६३ ॥ वैवावेति च च्छन्दसि ॥ ६४ ॥ एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम् ॥ ६५ ॥ यद्वृत्तान्नित्यम् ॥ ६६ ॥ पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठादिभ्यः ॥ ६७ ॥ सगति-रपि तिङ् ॥ ६८ ॥ कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ ॥ ६९ ॥ गतिर्गतौ ॥ ७० ॥ तिङि चोदात्तवति ॥ ७१ ॥ आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् ॥ ७२ ॥ नामन्त्रिते समाना-धिकरणे सामान्यवचनम् ॥ ७३ ॥ विभाषितं विशेषवचने ॥ ७४ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः ॥

द्वितीयपादारम्भः ॥

पूर्वत्रासिद्धम् ॥ १ ॥ नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ॥ २ ॥ नमुने ॥ ३ ॥ उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य ॥ ४ ॥ एकादेश उदात्तेनोदात्तः ॥ ५ ॥ स्वरितो वानुदात्ते पदादौ ॥ ६ ॥ न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य ॥ ७ ॥ नङि सम्बुद्ध्योः ॥ ८ ॥ मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः ॥ ९ ॥ झयः ॥ १० ॥ संज्ञायाम् ॥ ११ ॥ आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती ॥ १२ ॥ उदन्वानुदधौ च ॥ १३ ॥ राजन्वान् सौराज्ये ॥ १४ ॥ छन्दसीरः ॥ १५ ॥ अनो नुट् ॥ १६ ॥ नाद् घस्य ॥ १७ ॥ कृपो रो लः ॥ १८ ॥ उपसर्गस्यायतौ

* सर्वस्य बहुवचनलोपे अहेति चतुर्दश ॥

॥ १९ ॥ ग्रो यङि ॥ २० ॥ अचि विभाषा ॥ २१ ॥ परेश्च घाङ्कयोः ॥ २२ ॥ संयोगान्तस्य लोपः ॥ २३ ॥ रात्सस्य ॥ २४ ॥ धि च ॥ २५ ॥ झलो झलि ॥ २६ ॥ ह्रस्वादङ्गात् ॥ २७ ॥ इट ईटि ॥ २८ ॥ स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ॥ २९ ॥ चोः कुः ॥ ३० ॥ हो ढः ॥ ३१ ॥ दादेर्धातोर्घः ॥ ३२ ॥ वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम् ॥ ३३ ॥ नहो धः ॥ ३४ ॥ आहस्थः ॥ ३५ ॥ व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः ॥ ३६ ॥ एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ॥ ३७ ॥ दधस्तथोश्च ॥ ३८ ॥ झलां जशोन्ते ॥ ३९ ॥ झषस्तथोर्धोऽधः ॥ ४० ॥ षढोः कः सि ॥ ४१ ॥ रदाभ्यान्निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः ॥ ४२ ॥ संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः ॥ ४३ ॥ ल्वादिभ्यः ॥ ४४ ॥ ओदितश्च ॥ ४५ ॥ क्षियो दीर्घात् ॥ ४६ ॥ श्योऽस्पर्शे ॥ ४७ ॥ अञ्चोऽनपादाने ॥ ४८ ॥ दिवो विजिगीषायाम् ॥ ४९ ॥ निर्वाणोऽवाते ॥ ५० ॥ शुषः कः ॥ ५१ ॥ पचो वः ॥ ५२ ॥ क्षायो मः ॥ ५३ ॥ प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् ॥ ५४ ॥ अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः ॥ ५५ ॥ नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् ॥ ५६ ॥ न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदाम् ॥ ५७ ॥ वित्तोभोगप्रत्यययोः ॥ ५८ ॥ भित्तं शकलम् ॥ ५९ ॥ ऋणमाधमर्ण्ये ॥ ६० ॥ नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि ॥ ६१ ॥ क्विन्प्रत्ययस्य कुः ॥ ६२ ॥ नशेर्वा ॥ ६३ ॥ मो नो धातोः ॥ ६४ ॥ म्वोश्च ॥ ६५ ॥ ससजुषो रुः ॥ ६६ ॥ अवयाः श्वेतवा पुरोडाश्च ॥ ६७ ॥ अहन् ॥ ६८ ॥ रोऽसुपि ॥ ६९ ॥ अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि ॥ ७० ॥ भुवश्च महाव्याहृतेः ॥ ७१ ॥ वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहान्दः ॥ ७२ ॥ तिप्यनस्तेः ॥ ७३ ॥ सिपि धातोरुर्वा ॥ ७४ ॥ दश्च ॥ ७५ ॥ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ॥ ७६ ॥ हलि च ॥ ७७ ॥ उपधायाञ्च ॥ ७८ ॥ न भकुर्छुराम् ॥ ७९ ॥ अदसोऽसेर्दादु दो मः ॥ ८० ॥ एत ईद्बहुवचने ॥ ८१ ॥ वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः ॥ ८२ ॥ प्रत्यभिवादेऽशूद्रे ॥ ८३ ॥ दूराद्धूते च ॥ ८४ ॥ हैहेप्रयोगे हैहयोः ॥ ८५ ॥ गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् ॥ ८६ ॥ ओमभ्यादाने ॥ ८७ ॥ ये यज्ञकर्मणि ॥ ८८ ॥ प्रणवष्टेः ॥ ८९ ॥ याज्यान्तः ॥ ९० ॥ ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौष-

डाबहानामादेः ॥ ९१ ॥ अग्नीत्प्रेषणे परस्य च ॥ ९२ ॥ विभाषा पृष्टप्रति-वचने हेः ॥ ९३ ॥ निगृह्यानुयोगे च ॥ ९४ ॥ आम्रेडितम्भर्त्सने ॥ ९५ ॥ अङ्गयुक्तन्तिङाकाङ्क्षम् ॥ ९६ ॥ विचार्यमाणानाम् ॥ ९७ ॥ पूर्वन्तु भाषायाम् ॥ ९८ ॥ प्रतिश्रवणे च ॥ ९९ ॥ अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः ॥ १०० ॥ चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने ॥ १०१ ॥ उपरिस्विदासीदिति च ॥ १०२ ॥ स्वरितमाम्रेडितेऽसूयासम्मतिकोपकुत्सनेषु ॥ १०३ ॥ क्षियाशीः प्रैषेषु तिङाका-ङ्क्षम् ॥ १०४ ॥ अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः ॥ १०५ ॥ प्लुतावैच इदुतौ ॥ १०६ ॥ एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्द्धस्याऽदुत्तरस्येदुतौ ॥ १०७ ॥ तयो-र्य्वावचि संहितायाम् ॥ १०८ ॥ *

इति अष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः ॥

तृतीयपादारम्भः ॥

मतुवसो रु सम्बुद्धौ ॥ १ ॥ अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा ॥ २ ॥ आतोऽटि नित्यम् ॥ ३ ॥ अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः ॥ ४ ॥ समः सुटि ॥ ५ ॥ पुमः खय्यम्परे ॥ ६ ॥ नश्छव्यप्रशान् ॥ ७ ॥ उभयथर्क्षु ॥ ८ ॥ दीर्घादटि समान-पादे ॥ ९ ॥ नॄन्पे ॥ १० ॥ स्वतवान् पायौ ॥ ११ ॥ कानाम्रेडिते ॥ १२ ॥ ढो ढे लोपः ॥ १३ ॥ रो रि ॥ १४ ॥ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ १५ ॥ रोः सुपि ॥ १६ ॥ भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि ॥ १७ ॥ व्योर्लघुप्रयत्नतरः शाक-टायनस्य ॥ १८ ॥ लोपः शाकल्यस्य ॥ १९ ॥ ओतो गार्ग्यस्य ॥ २० ॥ उञि च पदे ॥ २१ ॥ हलि सर्वेषाम् ॥ २२ ॥ मोनुस्वारः ॥ २३ ॥ नश्चाऽपदा-न्तस्य झलि ॥ २४ ॥ मो राजि समः क्वौ ॥ २५ ॥ हे मपरे वा ॥ २६ ॥ नपरे नः ॥ २७ ॥ ङ्णोः कुक्टुक् शरि ॥ २८ ॥ डः सि धुट् ॥ २९ ॥ नश्च

* पूर्वत्राभि पद्धोर्नसवैतर्द्वयिचिदित्यष्टौ ॥

॥ ३० ॥ शि तुक् ॥ ३१ ॥ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् ॥ ३२ ॥ मय उञो वो वा ॥ ३३ ॥ विसर्जनीयस्य सः ॥ ३४ ॥ शर्परे विसर्जनीयः ॥ ३५ ॥ वा शरि ॥ ३६ ॥ कुप्वोः ≍ क ≍ पौ च ॥ ३७ ॥ सोऽपदादौ ॥ ३८ ॥ इणः षः ॥ ३९ ॥ नमस्पुरसोर्गत्योः ॥ ४० ॥ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य ॥ ४१ ॥ तिरसोऽन्यतरस्याम् ॥ ४२ ॥ द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोर्थे ॥ ४३ ॥ इसुसोः सामर्थ्ये ॥ ४४ ॥ नित्यं समासेनुत्तरपदस्थस्य ॥ ४५ ॥ अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य ॥ ४६ ॥ अधः शिरसी पदे ॥ ४७ ॥ कस्कादिषु च ॥ ४८ ॥ छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः ॥ ४९ ॥ कः करत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः ॥ ५० ॥ पञ्चम्याः परावध्यर्थे ॥ ५१ ॥ पातौ च बहुलम् ॥ ५२ ॥ षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु ॥ ५३ ॥ इडाया वा ॥ ५४ ॥ अपदान्तस्य मूर्द्धन्यः ॥ ५५ ॥ सहेः साडः सः ॥ ५६ ॥ इण्कोः ॥ ५७ ॥ नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेपि ॥ ५८ ॥ आदेशप्रत्यययोः ॥ ५९ ॥ शासिवसिघसीनाञ्च ॥ ६० ॥ स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् ॥ ६१ ॥ सः स्विदिस्वदिसहीनाञ्च ॥ ६२ ॥ प्राक्सितादड्व्यवायेपि ॥ ६३ ॥ स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य ॥ ६४ ॥ उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम् ॥ ६५ ॥ सदिरप्रतेः ॥ ६६ ॥ स्तम्भेः ॥ ६७ ॥ अवाच्चाऽलम्बनाऽविदूर्ययोः ॥ ६८ ॥ वेश्च स्वनो भोजने ॥ ६९ ॥ परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् ॥ ७० ॥ सिवादीनां वाड्व्यवायेपि ॥ ७१ ॥ अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु ॥ ७२ ॥ वेः स्कन्देरनिष्ठायाम् ॥ ७३ ॥ परेश्च ॥ ७४ ॥ परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु ॥ ७५ ॥ स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः ॥ ७६ ॥ वेः स्कभ्नातेर्नित्यम् ॥ ७७ ॥ इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोङ्गात् ॥ ७८ ॥ विभाषेटः ॥ ७९ ॥ समासेङ्गुलेः सः ॥ ८० ॥ भीरोः स्थानम् ॥ ८१ ॥ अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः ॥ ८२ ॥ ज्योतिरायुषः स्तोमः ॥ ८३ ॥ मातृपितृभ्यां स्वसा ॥ ८४ ॥ मातुपितुर्भ्यामन्यतरस्याम् ॥ ८५ ॥ अभिनिसः स्तनः शब्दसञ्ज्ञायाम् ॥ ८६ ॥ उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः ॥ ८७ ॥ सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः ॥ ८८ ॥ निनदीभ्यां स्नातेः कौशले ॥ ८९ ॥

सूत्रं प्रतिष्णातम् ॥ ९० ॥ कपिष्ठलो गोत्रे ॥ ९१ ॥ प्रष्ठोऽग्रगामिनि ॥ ९२ ॥ वृक्षासनयोर्विष्टरः ॥ ९३ ॥ छान्दोनाम्नि च ॥ ९४ ॥ गवियुधिभ्यां स्थिरः ॥ ९५ ॥ विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् ॥ ९६ ॥ अम्बाऽम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रिकुशेकुशंकङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः ॥ ९७ ॥ सुषामादिषु च ॥ ९८ ॥ एति सञ्ज्ञायामगात् ॥ ९९ ॥ नक्षत्राद्वा ॥ १०० ॥ ह्रस्वात्तादौ तद्धिते ॥ १०१ ॥ निसस्तपतावनासेवने ॥ १०२ ॥ युष्मत्तत्ततक्षुःष्वन्तः पादम् ॥ १०३ ॥ यजुष्येकेषाम् ॥ १०४ ॥ स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि ॥ १०५ ॥ पूर्वपदात् ॥ १०६ ॥ सुञः ॥ १०७ ॥ सनोतेरनः ॥ १०८ ॥ सहेः पृतनर्त्ताभ्याञ्च ॥ १०९ ॥ नरपरसृपिसृजिस्पृशिस्पृहिसवनादीनाम् ॥ ११० ॥ सात्पदाद्योः ॥ १११ ॥ सिचो यङि ॥ ११२ ॥ सेधतेर्गतौ ॥ ११३ ॥ प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च ॥ ११४ ॥ सोढः ॥ ११५ ॥ स्तम्भुसिवुसहां चङि ॥ ११६ ॥ सुनोतेः स्यसनोः ॥ ११७ ॥ सदेः परस्य लिटि ॥ ११८ ॥ निव्यभिभ्योऽड्व्यवाये वा छन्दसि ॥ ११९ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य तृतीयः पादः ॥

चतुर्थपादारम्भः ॥

रषाभ्यां नो णः समानपदे ॥ १ ॥ अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥ २ ॥ पूर्वपदात् सञ्ज्ञायामगः ॥ ३ ॥ वनं पुरगामिश्रकासिध्रकासारिकाकोटराग्रेभ्यः ॥ ४ ॥ प्रनिरन्तः शरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्यो सञ्ज्ञायामपि ॥ ५ ॥ विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः ॥ ६ ॥ अह्नोऽदन्तात् ॥ ७ ॥ वाहनमाहितात् ॥ ८ ॥ पानं देशे ॥ ९ ॥ वा भावकरणयोः ॥ १० ॥ प्रातिपदिकान्तनुंविभक्तिषु च ॥ ११ ॥ एकाजुत्तरपदे णः ॥ १२ ॥ कुमति च ॥ १३ ॥ उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य ॥ १४ ॥ हिनुमीना ॥ १५ ॥ आनि लोट् ॥ १६ ॥ नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिह-

* मतुवसोरुर्न्विचेदुदुपधस्य सौतिण्योर्भीरोहूस्वापादावेकोनविंशतिः ।

न्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च ॥ १७ ॥ शेषे विभाषाकखादावषान्त उपदेशे ॥ १८ ॥ अनितेरन्तः ॥ १९ ॥ उभौ साभ्यासस्य ॥ २० ॥ हन्तेरत्पूर्वस्य ॥ २१ ॥ वमोर्वा ॥ २२ ॥ अन्तरदेशे ॥ २३ ॥ अयनञ्च ॥ २४ ॥ छन्दस्यृदवग्रहात् ॥ २५ ॥ नश्च धातुस्थोरुषुभ्यः ॥ २६ ॥ उपसर्गाद्बहुलम् ॥ २७ ॥ कृत्यचः ॥ २८ ॥ णेर्विभाषा ॥ २९ ॥ हलश्चेजुपधात् ॥ ३० ॥ इजादेः सनुमः ॥ ३१ ॥ वा निंसनिक्षनिन्दाम् ॥ ३२ ॥ न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम् ॥ ३३ ॥ षात्पदान्तात् ॥ ३४ ॥ नशेः षान्तस्य ॥ ३५ ॥ पदान्तस्य ॥ ३६ ॥ पदव्यवायेपि ॥ ३७ ॥ क्षुभ्नादिषु च ॥ ३८ ॥ स्तोः श्चुनाश्चुः ॥ ३९ ॥ ष्टुना ष्टुः ॥ ४० ॥ न पदान्ताट्टोरनाम् ॥ ४१ ॥ तोः षि ॥ ४२ ॥ शात् ॥ ४३ ॥ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ ४४ ॥ अचोरहाभ्यां द्वे ॥ ४५ ॥ अनचि च ॥ ४६ ॥ नादिन्याक्रोशेपुत्रस्य ॥ ४७ ॥ शरोचि ॥ ४८ ॥ त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य ॥ ४९ ॥ सर्वत्र शाकल्यस्य ॥ ५० ॥ दीर्घादाचार्याणाम् ॥ ५१ ॥ झलां जश् झशि ॥ ५२ ॥ अभ्यासे चर्च ॥ ५३ ॥ खरि च ॥ ५४ ॥ वावसाने ॥ ५५ ॥ अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः ॥ ५६ ॥ अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥ ५७ ॥ वा पदान्तस्य ॥ ५८ ॥ तोर्लि ॥ ५९ ॥ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ॥ ६० ॥ झयो होन्यतरस्याम् ॥ ६१ ॥ शश्छोटि ॥ ६२ ॥ हलो यमां यमि लोपः ॥ ६३ ॥ झरो झरि सवर्णे ॥ ६४ ॥ उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः ॥ ६५ ॥ नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यपगालवानाम् ॥ ६६ ॥ अ अ ॥ ६७ ॥ *

इत्यष्टमाध्यायस्य चतुर्थः पादः ॥

अष्टमाध्यायश्च समाप्तः ॥

समाप्तमिदं पाणिनीयाष्टकम् ॥

---

* रषाभ्यां त्वन्नेन पदान्तात्क्षयः सप्त ॥

न्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धि च ॥ १७ विभाषाकखादावपान्ते उपदेशे ॥ १८ ॥ अनितेरन्तः ... सस्य ॥ २० ... २१ ॥ वमे ... ॥

अयनार्थ पुस्तकें	मूल्य
...दभाष्य (९ भाग)	२०)
...दभाष्य सम्पूर्ण	१०)
...दादिभाष्यभूमिका	१)
,, केवल संस्कृत	॥।)
पदप्रकाश १४ भाग	४।≈)॥।
...नाध्यायी मूल	≈)॥
...यज्ञविधि	-)॥
॥ ४५ बढ़िया	=)
	॥=)
त्रिपदी (१ काण्ड)	।)
...संस्कृतवाक्यप्रबोध	≤)
व्यवहारभानु	≤)
भ्रमोच्छेदन	)॥।
अनुभ्रमोच्छेदन	)॥।
सत्यधर्मविचार (मेलाचांदापुर) नागरी	-)
,, ,, (उर्दू)	-)
आर्य्योद्देश्यरत्नमाला (नागरी)	)।
,, (मरहठी)	-)
,, (अंग्रेज़ी)	)॥।
गोकरुणानिधि	-)
स्वामीनारायणमतखण्डन	-)॥
हवनमंत्र	)॥
आर्याभिविनय बड़े अक्षरों का	।=)
आर्याभिविनय गुटका	≈)

विक्रयार्थ पुस्तकें	मूल्य
सत्यार्थप्रकाश नागरी	१)
सत्यार्थप्रकाश (बंगला)	१)
संस्कारविधि	॥)
विवाहपद्धति	।)
शास्त्रार्थ फ़ीरोज़ाबाद	-)॥।
आ० स० के नियमोपनियम	)॥
वेदविरुद्धमतखण्डन	=)
वेदान्तिध्वान्तनिवारण (नागरी)	)॥।
,, (अंग्रेज़ी)	-)
भ्रान्तिनिवारण	-)
शास्त्रार्थकाशी	)॥।
स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश (नागरी)	)॥
तथा (अंग्रेज़ी)	)॥
मूलवेद साधारण	५)
,, सुनहरी	८)
अनुक्रमणिका	१॥)
शतपथब्राह्मण पूरा	४)
ईशादिदशोपनिषद मूल	॥=)
छान्दोग्योपनिषद् संस्कृत तथा हिन्दी भाष्य	३)
यजुर्वेदभाषाभाष्य	२)
बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य	३)
नित्यकर्मविधि)।, एक रु० सैकड़ा	

पुस्तक मिलने का पता—
प्रबन्धकर्त्ता, वैदिक पुस्तकालय—अजमेर.